

श्रीमद् राजचद्र प्रणीत तत्त्वज्ञान मार्थः

```
मना शक
मनुभाई म सोबी, शब्यक्ष
थीमद राजवाद आधम,
स्टेशन बगास, वाया बाणव
पोस्ट बोरिया-३८८१३ (गुजरात)
वीपी आवृत्ति
त्रत ३२००
विक्रम संबन् २०४२
र्वस्वी सन् १९८६
```

मुल्क

वर्दमान मुद्रणालय वाराणसी-२२१००१ बहो सत्पुरुपना वचनामृत मुद्रा अने सत्समापम ! मुपुष्त चेतनने नागृत करनार पडती वृतिन स्थिर राखनार, दर्शनमात्रची पण निर्नोप, अपूर्व स्वभावने प्रेरक, स्वरूप प्रतीति अप्रमत्त सगम अने पण थीतराम निविक्त्य स्वमावना नारणमूत,-छेन्ले अयोगी स्वमाव प्रगट करी वनत बब्याबाय स्वरूपमा स्यिति करावनार । तिकाळ जयवत वर्ती ! as शांति शांति शांति

## गद्य विभाग विवय मवर

१ पुणमाळा २ महानीति

9	बदीस योग	41
Y	स्मृतिमा राजवा गोग्य गहावावयी	4.5
4	वयनामृत	46
ę	भोडा नान्यो	4.0

वृष्ठ

63

प्रमादने साथ आत्मा॰ अननानवधी क्षीध॰ नीचना दोप न जावना जीरीए 30

कमें ए वह बस्तु छे॰

शमगति विविश्व छै निरतर मैत्री प्रमोतः 98

12 बीज बाई शोध मा० 64

निराबाधाणे जनी मनीवृत्ति बह्या दर छे० \$3 60

माई बाटल तार अवस्य करवा जेन छे। 62

धमजीने अल्पभाषी बनारन॰

	4	
? 5	सहज	83
20	नीचना नियमो पर बहु ल र आपवु	64
36	महावीरना थोधने पात्र कोण ?	6
28	हे जीव ! तु भ्रमा मा॰	60
₹•	विस्वासची वर्ती अन्ययाण	48
38	'अणुष्ठत्' वाचा वगरत् ॰	< 1
77	सहज प्रकृति	44
33	वसनावली	53
38	पुराणपुरुपने नमोनम	44
24	जीव स्वभावे दोपित छै॰	99
२६	ने ने प्रकारे जात्मान चितन क्यों होय॰	33
30	हे परमकृपालुदेव !	200
२८	मुमुनु जीवने आ काळते विघेठ	800
38	नित्यनियम	202
30	सव विभावमी उदासीन॰	१०४
3 8	जे क्याय परिणामधी अनतः	904
37	अनतानुबधीनो बीजो प्रकार सहयो छे॰	808
₹\$	प्रयम प्रमा एव कहा है के	\$ \$0
\$x	एवमूस दुष्टिपी०	११२

समस्त विषय मण वरीने • 211 3 \$ करवा बोग्य कई बह्य होयन 222 ' ज्ञानन पळ विरति छे ' 30 11Y सब जीव समने इच्छे छे॰ 16 233 28 सन्पृद्योगा अगाय गम्भीर सयमने । 224 आत्मद्रगाने पायी। ٧o 116 88 बपार महा मोहबळने • 233 ¥3 हे बाम ! हे मान ! हे संगडन्य ! 225 है सर्वोत्हब्ट मुसना॰ Υŝ 111 जैम भगवान जिले निकाय क्य छ० \*\* 130 \*4 सर्वजीपिट बात्या • 171 Y\$ प्राणीमात्रनी रहाकः 171 \*3 वीतरागनी बहुडी॰ १२२ बन य धरणना आपनार॰ (छ पद) 46 **£**28 88 बारममिदि अप २०१ 40 मनने छईने वा वर्ष छे॰ 215 48 विसमां सम परमार्थनी • 240 47 एकतिमा अवगाहवाने अर्थे आत्मसिद्धिः 388 41 दामापना 388

	•	
पद्य	विभाग —	
1	प्र यारम्भ	175
7	नाभिनन्दन नाय०	\$ 28
3	प्रमु प्रापना-जडहळ ज्योति स्वरूप०	120
Y	ससारमा मन वरे	7 7 7
4	मुनिने प्रणाम	132
*	काळ कोईने नहि मुके	111
•	धम विष	234
6	सर्वमा य धम	270
- 5	भक्तिनी चपदेश	288
80	बहाचर्यं विषे सुभाषित	5.8.5
3.5	सामान्य मनोरम	128
<b>१</b> २	मुष्णानी विचित्रता	\$×\$
12	अमुन्य तत्त्व विचार	144
14	जिनेस्वरनी वाणी	14£
84	पूणमालिका मगल	180
\$6	वनियादि मावना	140
\$12	सुखरी सहेली हैं०	198
16	भिन्न भिन्न मत देखीए॰	848

	ć			
25	क्षोक पुरुषमध्याने कड़ी •	141		
₹•	बाज मने उछरत•	246		
78	होत बागवा परिगवा=	244		
२२	मारम माचा मित्र गंगा०	140		
23	बीजा मायन बहु चयाँ =	146		
24	बिना नयन वार्वे नहीं ॰	245		
24	हे प्रमु हे अभू•	84.		
28	यम नियम स्वमः	888		
20	जह भावे अड परिणय०	128		
26	जिनवर वहे छे जान सम •	775		
35	अपूर्व अवसर एवी।	296		
80	मुळ भारत मामळो०	808		
3.5	पम परमपद बीच्यो॰	7445		
32	थन्य रे दिवस०	200		
44	बह ने चैतु य स ने ॰	105		
48	सद्गुदना उप <sup>3</sup> नाची ॰	160		
34	<b>१</b> ण्छे जे जोगी धन•	121		
34	<b>बा</b> त्मसि <sup>©</sup> द	\$25		

## श्रीमद् राजचद्र प्रणीत

## तत्त्वज्ञान

माथी (1)

पुष्पमाळा

१ रात्र व्यतिक्रमी गई, प्रमात थ्यु, निद्रापी मुक्त थया भावितद्वा टळवानो प्रयत्न करजो

व्यतीत रात्रि अने गई जिंदगी पर दिष्ट भेरवी जाओ सफळ पपेरा वखतने माटे आनद मानो, अने आजनो दिवस पण सफळ करी निष्यळ थयेला दिवसदे मादे

पश्चात्ताप करी निष्यळता विस्मृत करो

दाण शण जना जनतमाळ व्यतीत वयी स्टता विद्वि घर्ड नहीं ५ सरदभव एका बनाव साराची जो न बन्यो होय

लो परी वरीने दारवा वपरित हायी थया होय तो धरमाईने मन वचा

श्रायामा योगची ते व करवानी चतिता 🗎 भी त स्वनव होय ही गरारचमागम हारा बाबना दिवसना भीश प्रमाणे माग पाच --

(१) १ वहर---भितासम्य (२) १ प्रहर-धर्मकतस्य

(३) १ प्रहर-आहारप्रयोजन

(४) १ प्रहर-विद्याप्रयोजन

(५) २ प्रहर-निन (६) २ प्रहर--गवारप्रयोजन

Z SIET

जी सु स्वामा होय हो त्वचा बगरनी बनितानु स्वरूप विषारीन संसार भनी देव्ट करने

९ जो सन धर्मेनु अस्तित्य अनुबूळ न आबत्त होय हो।

शीचे बहु ह ते विचारी करें ---

(२) आवती कारनी बात या मारे जाणी शकती नधीः ?

(३) तुजे इच्छे छेत द्यामाटे मळत् नथी? (४) चित्रविचित्रतानु प्रयोजन गु छे ? जो तने अस्तित्व प्रमाणमत लागतः होय अने तेना

मूळतस्वनी आगवा होय ता नीचे वह छ --११ सब प्राणीमा समदद्य ---

१२ किया मोई प्राणीने जीवितव्यग्हित करवा नही. गजा उपरात वेनाथी काम लेव नही

**१३** दिवा सत्पृष्यो जे रस्ते चाल्या ते

१४ मुळतस्वमा नयाय भेद नथी, मात्र दिन्टमा भेद छै एम गणी आगय समजी पवित्र घममा प्रवसन करजे

१५ तु गमें से धम मानती होय सेनो मने परपात नयी, मात्र वहेवान तात्पय वे जे राहची ससारमळ नादा

थाय ते भिन्त, त घम अने त सदाचारने त सेवजे १६ गमे तटली परतत्र हो तोपण मनयी पवित्रताने विस्मरण नयां बगर बाजनो दिवस रमणीय नरजे

१८ तारा दुम्पंपुलना बनाबोनी नाघ आजे माईने दुख आरवा तेन्यर बाग था समारी जा १९ राजा हो के रक हा—मधे ते हा परम्तु आ विचार विजारी सराचार भणी आवजो के आ कामाना पदनक थोडा बचवने माटे माज साहाजक हाए अपि

मागनार छ

२० शुराजा हो तो पिक्रर गहा पण प्रमाद म कर
वारण मीचमा नीच अधनमा अपम व्यक्तिचारमी
गमधानते निवानो चण्डाकरो क्याईनो अन

गमधानकः निवानका चण्डालना वसाहना अत सामाने एवी वण तुलाय छेती पछी ? २१ प्रजाना दुल, जायाय वर एन तथाती जई आज श्रीष्ठां कर तु पण हेरागाः वाळने येर आवली

आहा कर तु वण ह राजा। बाळन घर आवका पर्ना छे २२ बनील हो तो एकी अर्थी विचारने मनन करो जज २३ श्रीमत हो तो पैयाना उपयोगने विचारन राज्यात

२३ श्रीमत हो तो पैसाना जपयोगने विचारज रळवानु भारण आजे साधीने वहेंचे

२४ धा यादिरमा व्यापारची वती असस्य हिमा समारी यायसपन्त व्यापारमा बाजे साथ वित्त संजे

२५ जो तू कसाई होय तो तारा जीवना सुसनी विचार धरी बाजना दिवसमा प्रवश कर

भणी देख्ट कर

दिवसमा प्रवेश कर

मणी दृष्टि कर

बाजना दिवसमा प्रवश कर रे जो त कपण होय ता .--

स्थितिथी स्मरण कर.

दब्टि वर

२६ जो सुसमजजो बाउक होय तो विद्या भणी अने आज्ञा

२७ जी तुयुवान होय वो उद्यम अने ब्रह्मचय भणी

२८ जो त वह होय तो मोत भणी दर्दि करी आजना

२९ जो त स्त्री होय तो तारा पति प्रत्यना घमवरणीने समार - दोप थया होय तनी क्षमा याच अमे दूर्व

३० जो सु कवि होय ता असभवित प्रशसान समारा जई

३२ जो ह्र अमलमस्त होय तो नपोलियन बानापाटने बन्ने

३३ गई कारे कोई कृत्य अपूज रहा हाय तो पूर्ण करवानी सुविचार करी जाजना दिवसमा प्रवश कर

३४ आजे की करवा भारत करवा भारती हो तो विवक्षी समय, धानि अने परिणामने विचारी बाजना दिवसमा प्रवेश कर ३५ पग सकता पाप छ, जोता क्षर छ अने माथ मरण रहा 🖪 ए विचारी बाजना दिवसमा प्रवा गर ३६ झपोर शम करवामां आज सार पढ्यु हाय सी राज पुत्र हो को पण जिलाचरी मान्य करी आजना दिवसमा प्रवेश करजे ३७ भाग्यहास्त्र हो तो तना आनदमा बीजाने भाग्यणाली करते, परत दर्भाग्याली हा को अयन बुर करता रोकाई आजना नियसमा प्रवेश करण ३८ धर्माचाय हो तो तारा अनाचार भणी बटामन्ष्टि मरी आजना दिवसमां प्रवश करने ३९ अनुवर हो ता त्रियमा त्रिय एवा दारीरना निभाव नार तारा अधिराजनी निमक्हलाली इ. छी आजना दिवसमा प्रवत करते

¥० दूराचारी हो ता सारी आरोग्यता, भव परतत्रता स्यिति या मुख एन विचारी आजना निवसमा प्रवन कर-

४१ दुखी हो तो ( बाजनी ) बाजीविना चेटली बाघा राखी बाजना दिवसमा प्रवेश करने ४२ घमकरणीनो बवस्य बखत मेळवी बाजनी व्यवहार

3

विदिया सु प्रवेश करने

४३ क्वापि प्रयम प्रवेश अधुकूळवा न होच तो पण रीज
जता दिवसनु स्वरूप विवाश आग्रे समे त्यारे पण ते
पित्रम सत्तु अनन करने
४४ आहार, विहार निहार ए सबसीनी वारी प्रक्रिया

तपासी आजना निवसमा प्रवेश करने ४५ सु कारीगर हो तो आद्यम अने शक्तिमा गेरजप्योगनो सिकार करी कई आजना दिवसमा प्रवश करने ४६ सु गमे ते बमार्थी हो परतु आंशींबिकार्य अयाय स्थान प्रथम करोश नहीं

छपन इंग्ड उपासन करीश नहीं ४७ ए स्मृति स्रहण नर्या पढ़ी शोचकियायुन यई सगवद् सित्तमा लीन यई साधावना याज ४८ सतारायीजनमा जो तु तारा हितने जये अमुक समुदायनु जहित करी नाखती हो तो सटक्जे

(९ जुरुमीने, कामीने, अनाडीने उसेजन आपतो हो तो

अटकजे

सर्पतिमां ग्राह्म करें ५१ जिंदगी टर्नी छ अने जजाळ लाबी छै माटे बंजाळ

हुनी कर तो मुख्कपे जिंदगी लाबी छागरी ५२ स्त्री, पूत्र कुटुव रूग्मी इत्यादि बधा सुख तारे पैर हीय धोपण ए नुष्यमा गौणताए दुःश रहा छ एम

गणी क्षाजना लिबसमा प्रवेश कर ५३ पवित्रतान मुळ शदाभार छे ५४ मन दोरगी गई लग्न जाळबवाने ---

५५ बचन शास मधर नीमळ, सत्य अन शीच बोलवानी द्यामा य प्रतिज्ञा कई आजना दिवसमा प्रवण करन

५६ कामा मळमत्रन अस्तित्व छे, ते माटे हजा ग अमीन्य प्रयोजन करी आनद मानु खु? एम आज विचारने

५७ सारे हाये नोईनी माजाविका माज तुटवानी होय सो.-५८ शाहारिक्यामा हव से प्रवश क्यों मिलाहारी अक्चर धर्वोत्तम बादबाह गणायो

५९ को आजे दिवसे तने सुवानु भन वाय, तो ते वखते ईश्वरमत्तिपरायण बजे, के सत्यास्त्रनो लाभ लई लेजे ६० हुसमजुछु के एम यबु दुघट छे, लो पण अम्यास सवनी सपाय छे ६१ चाल्यु आवत् वैर आजे निम्ळ कराय तो उत्तम,

नहीं तो सेनी सावचेती राखजे ६२ तेम मबु बैर बधारी " नहीं कारण वैर करी वेटला काळन् सुल भोगववु छे ए विचार तत्त्वज्ञानीओ करे छे

६३ महारभी हिमामुक्त यापारमा आजे पडवु पडतु होय तो अटब जे

९४ बहोळी ल्दमी मळता छता आजे अ यायणी कोईनो जीव जतो हाय तो मटकजे

२,१६,००० विषठनो उपयोग गरजे ६६ वास्तविक सुख भात्र विरागमा 🗓 माटे जजाळ

६५ वसत अमृत्य छे. ए वात विचारी आजना दिवसनी

मोहिनीधी बाजे अम्यतरमोहिनी वघारी नही

९७ मने शारी आवीनिना जटनु हु प्रायत मरतो हो, परंतु निर्णापियत होय वा च्यापियत यु राजगुण इन्यों सारो आवनी दिवस अपितन नरार नहां ९८ मोरिए को मन्द्र भयन रह्यु होय स स्थातमा सहत् मार्ग्या—निर्णायाणी चया ९९ विवस्ती भूक माटे राजे हुस्ते, परंतु तबू हमनु करीयों न बाय स ल्लिन रामजे

१०० आले वर्ष बुद्धिमाल व्यायों हाय आसिक प्रतिन जनवाकी होय, प्रविन इत्यानी वृद्धि वर्षी हाय होता,— १०१ अयोग्य पीते आजे तारी चोई यानिनो उपयोग करोश नहीं —यर्थायालानवर्षी वर्षा पढ दो पापनीर रहेन

पापनीय रहीन १०२ सळ्या ए वर्मनु बीजस्वरूप छ प्रसाए वरी सळ्या सेनाई होम या आजनो दिवन वर्मोत्स ध १०३ बार्ट राज्यपती हो ने बीजजनपत्ना हो वरतु सने सजी कई दरकार नथा मधीनमा यदाना से ता प्र

पण पवित्र ज्ञानीओए प्रशसी 🗗

१०४ सद्गुणची करीने जो तमारा उपर जगतनो प्रास्त माह हुचे तो है बाई, तमने हु बदन कर छु १०५ बहुपान, नग्नमाव विनुद्ध अत करवायी परमारमाना

गुण सबधी चितवन श्रवण मनन वीतन, पूचा, अर्ची ए जानीपुरवीय ब्लाण्या छे, माटे आजनी दिवस सोमानजो १०६ सत्तरीणवान सुली छे हुएचारी दुःसी छे ए वात जो मान्य न होंब सो बस्यारची तमे रूप रासी से

बात विचारी जुला १०७ ला सपळानो सहस्रो उपाय शाजे कही वड छु के दोपन कोळबी दोपन टाळवा

६०८ कावी टूनी के क्रमानुक्तम गमे ते स्वरूपे का मारी क्ष्ट्रेकी, पश्चिततान पूर्वभोत्ती छवायेशी माठा प्रमा तता वत्तवाम, सामकाठे क्षते अन्य अनुकूल निर्दृतिए विचारवाणी ममळदायक चत्रे विशेष शुक्रु हिन्दुतिए \$4

## (२) महानीति

रै सत्य पण नरमानय बोल्यूं
२ निर्लेग रिपंति राजवी
३ बैराती हुन्य राजवु
५ बुगरली सटटीया वचार योग सायवो
६ बार दिवस पलीमा राजावी
६ बार दिवस पलीमा राजावी
८ सारानी पहारिस साठव से वा करवां
८ सारानी वसाठिस से स्वार ६ वे वा करवां
८ सारानी वसाठिस सिंहा ६ वे वा करवां
८ सारानी वसाठिस सिंहा ६ वे वा करवां
८ सारानी वसाठिस सिंहा ६ वे वा करवां
८ सारानी वसाठिस साठवां
८ साठवारीय साठवां

८ सातानी जपावियों जैस बन तैम विराण स्मू १ सर्व-सगजराधि स्वागकी १० सुहसापम विवती नरका ११ सरवाम सवकातावर्व प्रणीत करकी १४ सराम अने गमीरकावयी असन् १४ सपकी स्विति तैमन १५ सर्वेनी विनामी अने तिम सम्बादित बोलन् १५ सार्वेन प्रकार पहला विचार रास्त्री १५ सर्वेन प्रसारपा प्रमाने हर करवी

₹ 20 १७ सच्छ कतव्य नियमित च राखवु १८ दाक्ल भावधी मनुष्यन भन हरण करन् १९ शिर जता पण प्रतिशा भग न करवी २० मन, वचन अने बायाना योग वडे परपरनी त्याप २१ वेश्या, कुमारी, विधवानी क्षेत्रज त्याग २२ मन, धचन, जाया अविचारे आपव नहीं २३ निरीभण कह नही २४ हाबभावयी मोह पाम नहीं २५ बातचीत कह नही २६ एकाते रह नहीं २७ स्तुति कर नही २८ चितवन कर मही २९ म्युगार बाच नही **१०** विशेष प्रसाद छउ नही देश स्वानिष्ट भोजन लख मही १२ सुगधी द्रव्य वापचनही **२३ स्नान मजन कर नही** 

३५ माम विषयने लिला मावे बाच नही.

¥έ

३६ बीयनो ब्याघात कर नही

५० निःस्तायवण विहार कर ५१ ज याने मोहनी उत्पादन एवो देखाव कर महीं ५२ समीतुरफ दशनधी विचक ५३ सब प्राणीया समझाव राखु ५४ क्रोभी वचन धाखु नही

३७ वधार जळपान वह नही ३८ फटाग दष्टियी स्त्रीने नीरम नही ३९ हसीने बाद्य करू नहीं (स्त्रीधी) ¥॰ स्थारी बस्त्र नीरल नही ¥१ दपतीसहबास सेवु वही ४२ मोहतीय स्थानकमा रह नही ४३ एम महापुरवोए पाळव ह पाळवा प्रयस्ती छू ४४ लोगनिनाधी इर नही ४५ राज्यमययी जासू नही ४६ वसत्य उपन्य आपु नही Yo किया सदोवी कर नही ४८ बहपद राख के भाख नही ४९ सम्बन्ध प्रकार विश्व भणी दृष्टि कर

१९ ५५ पापी वचन माखु नही ५६ जनत्य आजा माखु नही ५७ अपय्य प्रतिज्ञा आपु नही

५८ सृद्धिशेष्यंमा भोह् राखुमही
५९ सुख हुग्र पर सम्माव कर
६० रामिभोजन कर नहां
६२ सेमायों नगो, ते सेतु नही
६२ प्राणीने हुस बाग युद्ध भृया मास्तु नही
६३ प्राणीने हुस बाग युद्ध भृया मास्तु नही
६३ प्राणीने हुस बाग युद्ध भृया मास्तु नही
६३ प्राणीने मानान कर
६५ प्राणीमामा भक्ति कर
६५ प्राणीस्त्र प्रमुखने मानान मानु
६५ तम दिन प्रति पूजु
६७ बिद्यानोने सम्मान बापु

६८ विद्वानोधी माया कर नहीं ६९ मायाधीने विद्वान कहु नहीं ७० कोइ दर्शनने निन्दु नहीं ७१ अपमनी स्तुति कर नहीं ७२ एकपनी मतमेद बाधु नहीं ७३ बकान फरने आराज् नहीं

७४ आत्मप्रनीसा इच्छु नही ७५ प्रमाद कोई कृत्यमा कई नही ७६ मासादिक बाहार कर नहीं ७७ सुध्याने शमाब

७८ तापयी मृत्त यवु ए मनीनता मानु ७९ ते मनोरम पार पाडना परायण सनु ८० योगवड हृदयने नुवल करव ८१ असरय प्रमाणयी बातपूर्ति कव नहीं ८२ वसमनित कल्पना कर नही ८३ लोक अहित प्रणीत कर नहीं ८४ ज्ञानीनी निंदा वद नहीं

८५ वैरीमा गुणनी पण स्तुति कर ८६ वैरभाव कोईयी राखु नही ८७ मातापिताने मृति बाटे चढावुं ८८ रूडी बाटे तेमनी बदलो वाप

८९ तेमनी मिच्या आज्ञा मानु नही ९० स्वस्त्रीमां सममावधी वर्तुं

९२ चवावळी चारू नही

28 ९३ ओसभेर चालु नही ९४ मरोडधी चाल नही ९५ उच्छ सल बस्त्र पहेर नही ९६ वस्त्रन अभिमान कर नही ९७ वधारे बाळ राख नही ९८ चपोश्य वस्त्र सज नही ९९ अपवित्र वस्त्र पहेर नही **१००** क्रनना बस्त्र पहेरवा प्रयस्न कर १०१ रेशमी बस्त्रनी त्याग वर १०२ शात चालयी चालु १०३ खोटो भपको कर नही १०४ उपन्धनने द्वेपयी जोउ मही १०५ द्वेपमात्रमा त्याम कर १०६ राग दृष्टियी एवे वस्तु आराधु नही १०७ वरीना सत्य वचनने मान आप 308

905 110

25 117 111 224 214 ११६ बाळ रासु मही (गु०) ११७ मधरो रासु नही ११८ गारी कर नही-आगणा पासे ११९ पळियामा अस्य बन्ता राखु नहीं (सायु) १२० पाटल बचडा राख् नहीं (साथ) १२१ बणगळ पाणी पीच नहीं १२२ पापी जळ माह नहीं १२१ नपारे जळ बोळु नही **१२४** वनस्पतिने द न आपु नही १२५ अस्वच्छना राखु नहा २६ पहीरन् राघेल् माजन वर नही २७ रसॅंद्रियनी बृद्धि कर नहीं २८ रोग बगर बौपवनु सेवन बर्चनही २९ विषयनु औष्प साउ नही ३० सोटी

१२२ आजावना स्वाय नाइमा भाषा पर पर्हा १३३ आजीविका माटे धम वोजू नही १३४ बस्तत्मो अनुपयोग करु नही

१६५ नियम क्यर इत सेवू नहीं १६६ प्रतिका, क्रत तोडू नहीं १६७ सत्य बस्तुनु खडन कर नहीं १६८ सन्यामच्या शक्ति याज समी

१३८ तत्त्वज्ञानमां शक्ति याज नही १३९ तत्त्व आराधता कोर्कोनदायां कर नही १४० तत्त्व आपता माया नर नही १४९ स्वापेने यम मासु नही १४९ सारे माने महन कर

१४० तत्त्व आपता सामा नर नहां
१४१ स्वापिने सम्म सालु नहां
१४२ सारे वर्षने महन करु
१४३ सा यहे स्वाय पेदा कर नहीं
१४४ समें यहे अर्थ पेदा कर

१४५ जडता जोईने बाक्रोश पामृ नहीं १४६ खेदनी स्मृति बाणु नहीं १४७ मिष्पास्त्रने विद्यजन ४२ १४८ बसस्यने सत्य कहु नहीं १४९ भूगारने उत्तेजन बापु नहीं

१५० हिंसा वडे स्वाध चाह नही १५१ स्पिटनो खेन बघार नही १५२ खोटी मोहिनी पेटा बरु नही १५३ विद्या विना मुखें रह नही १५४ विनयने जाराधी रह १५५ मायाविनयनो त्याग कर १५६ अदत्तादान रूउ नही १५७ मलेदा कर मही १५८ दता अनोति एउ नहां १५९ द खी करीने धन लख नहीं १६० खोटो तोल तोळ मही १६१ खोटी सानी पूर नही १६२ सोटा सोगन बाउ नही १६६ हासी कर नही १६४ समभावधी मृत्युने जीव १६५ मोतधी हप मानवा १६६ कोईना मोतधी हमन् नही १६७ विदेशी हृदयन करना जड १६८ विद्यानु अभिमान नरु नही

२५ १६९ गुरुनो गुरु बनु नही १७० अपून्य आचायन पुजु नही

१०१ सोटू बरमान तने आपुं नहीं
१७२ सरप्पीय स्थापा वर्ष न ने
१७३ पुग समर्गु बस्तुम्ब संयु नहीं
१७४ तास्त्र वर्ष अस्तिम नहीं
१७५ सास्त्र बांचुं
१७६ पोताना मिच्या तर्षन उत्तेजन आपु नहीं
१७५ सर्वे प्रवासनी समान वाहु
१७८ सर्वोपनी प्रयाचना वर्ष १८८ स्वापनी स्वासन वर्ष १८८ स्वापनी प्रयाचना वर्ष १८८ स्वापनी प्रयाचना वर्ष

१८१ मनुष्य जातिना भद न गयु १८४ बर्का दया चाउ १८५ विशेषणी नयन ठढा वर १८५ शामाय्यपी मित्रभाव राख् १८५ प्रसाययो नित्रभाव राख् १८० प्रस्तेव बरनुना नियम वर्ष

A PAT E PERMA

१८१ धनुपासर याउ १८२ निर्धामानी धान १८८ सादा पोशावने बाह १८९ मधुरी वाणी भाष् १९० मनीबीरखनी वृद्धि कर्व १९१ प्रत्यक परिषद्व सहन कर १९२ आस्मान परमे वर मानु १९३ पुत्रन शार रस्त पशावु (पिता इच्छा कर छे) १९४ खोटा लाह लहावुं नही १९५ मलिन राखु नही १९६ अवळी वानधी स्तृति कर्ष गडी १९७ मीहिनीमाय मीरख गही १९८ प्रतीन बदाबाळ योग्य गुणे कर १९९ समबय जोड २०० समयुग जोख २०१ तारी सिंडांत पूढे तेम संसारव्यवहार म चराब २०२ प्रायेशने बारसन्यता सपनेन २०३ सत्त्वधी कटाळु नही २०४ विधवा छ तारा धमने अगीवृत कह (विधवा इच्छाकरेख) २०५ सुवासी साज सज नही

२०६ वमक्या कर २०७ नवरी रहु नही २०८ तुच्छ विचारपर बड नही २०९ मुखनी बदेखाई कर नही २१० सुसारने अनित्य मान्

२११ पुद्ध ब्रह्मचर्यनु सेवन करु

२७

२१२ परपेर जड नहीं २१३ कोई पुरुष साथे बान कह नहीं २१४ बचळवाधी चालु नहीं, २१४ बचळवाधी चालु नहीं, २१६ पुरुष-देशप राखु नहीं २१७ कोईना कहााधी रोध आणु नहीं

२१८ विदडभे खेद मातू नहीं २१९ मोहदीव्यंगे वस्तु तीरखु नहीं २२० हृत्यमी बीजु रूप राखु नहीं २२१ सेव्यमी शुद्ध शक्ति कर ( सामाय ) २२२ नीजियों चालु २२३ तारी बाजा शोड नहीं

**१२४ अविनय वरु नही** 

२६३ ष्टदयने लोबस्य राज्

२६४ हृदयने जळरूप राख् २६५ हृदयने तेल्ह्य राख् २६६ हृदयने अधिनरूप गखु २६७ हृदयन आदगरण राखु २६८ हदयने समुद्रस्य राजु २६९ बचनन अमृतरूप राख् २७० वयनने निदारूप राप् २७१ वजनने सुवारूप राख् २७२ वचनने स्वाधीनरूप रान् २७३ कायाने कमानरूप राख् २७४ कामाने चचळक्य राख् २७५ कामाने निरपराधी राख् २७६ कोई प्रकारना चाहना राख महा ( परमहस ) २७७ तपस्वी छु, बनमा सपण्ययां वर्या वरु

( वपस्वीनी इच्छा ) २७८ शीवळ छाया छउ छ २७९ सममावे सब सुख सपादन कर 😉 २८० मायाधी दूर रह छ

२८२ सब त्यागबस्तुने जाणु छ २८३ खोटी प्रश्वता कर नहीं (मु॰ ब्र॰ च॰ मृ॰ सामा म) रेटर खोटु बाळ बापु नही २८५ सोटी वस्तु प्रणीत कर नही २८६ मूट्वक्लेश कर नहीं (गृ० छ०) २८७ अभ्याख्यान घार मही ( सा० ) २८८ पिगुन बड नही

रे८९ वसत्ययी राचु नही (२) २९० खडलड 🕎 नहीं (स्त्री) २९१ कारण विना मो मलकावु नही

२८१ प्रपचने त्याग छ

२९२ कोई वेळा हस नही २९३ मनना आनद करता आत्मानदन चाह

२५४ सर्वने ययातच्य मान आपु (गृहत्य) २९५ स्थितिनो गर्वं करु नही २९६ स्यितिनो खेद वह नही

२९७ सोटो उद्यम कर नही

२९८ अनुसमी रह नही २९९ सोटो सलाहु वापु नही, ( गृ॰ ) ź⊀

३३७ मास्तिवातानो चपदेग बाप नही (उ०) ३३८ वयमा परणु नही (गु०) ३३९ वय पछी परण नही ३४० इय पछी स्त्री भोगव नही ६४१ वयमा स्त्री भोगव् नही १४२ ब्रुपार पत्नीने बोलाव नही १४१ परणीय पर अमाव लाव नहा ३४४ वरागी अभाव गण नहीं (गृ० मृ०) दे४५ वयत् वयन वह नही ३४६ हाथ जगाम नही ३४७ अमोग्य स्पद्य कर नही ३४८ बार दिवस स्पश कर नही ६४९ बयोग्य उपको शापु नही १५० रजस्यकामा भोगव नही १५१ ऋतुरानमा समाच साणु मही ३५२ श्रुगारमक्ति सेवं नही १५३ सब पर ए नियम, न्याय लागु कर ३५४ नियममा खोटी दलीलची छुटु नहा ३५५ सोटी रीवे चढाव नही

२५६ दिवसे भोग मीगवु नही १५७ दिवसे स्पन्न कर नही **३५८ अवमापाए बोलाव नहीं** ३५९ कोईनु वत भगावु नही

₹५

३६० झाझे स्थळे भटकु नही ३६१ स्वाय बहाने काईंनो त्याग मुकावु नही ३६२ क्रियाशाळीने नि दु नही ३६३ नान चित्र निहाळु नही १६४ प्रतिमाने निन्दु मही

१६५ प्रतिमाने नीरखु नही ३६६ प्रतिमाने पूजु ( वेवळ गृहस्य स्थितिमा ) ३६ पापयी धम मानु नही (सब)

१६८ सत्य बहेबारने छोड़ नहीं (सव) ३६९ छळ कर मठा ३७० मन्न सुत नही

३७१ नग्न नाह नही

३७२ आछा सूग्रहा पहेच नहीं ३७३ झाझा अलवार पहेंच नही

३७४ अमर्यादाची चाल नही

३७५ उताबळे साद बोल नही ३७६ पति पर दाव राख नही (स्त्री) ३७७ सुच्छ समोग भोगववो नही (गृ॰ उ०) ३७८ खेदमा भोग भोगववी पही ३७९ रायकाळे भोग भोगववो नही **१८० सायकाळे जमन् नहीं** ६८१ बर गोदये मोग भोगवबी नहीं ३८२ कपमाधी करी भोग मानवबी नही

३८३ कथमाधी कठी जमव नही ३८४ शौचक्रिया पहेलां कोई क्रिया रखी भूडी ३८५ कियानी बाई जरूर मधी (परमहस) **६८६ ध्यान विना एकाते रह नही (मु॰गू॰ब॰छ०प०)** ६८७ सपुराकामां तुन्छ वार्च वही ६८८ दीयशकामा नवत लगाडु नही

**६८९ ऋनुऋतुना धरीरममं साधवु (१०)** ३९० आत्माना ज मात्र घमकरणी साचवु (१७०) ३९१ अमीम्य भार बधन वर्ड महा ३९२ बारमस्वतत्रका स्रोठ नहीं (मृ० गृ० हु०) ३९३ वयनमा पडघा पहला विचार वरु (सा०)

३९४ पूनित भीग समार नहीं (मु॰ गृ॰) ₹6 ३९५ वयोम्य विद्या साधु नहीं (मृ० गृ० व० छ०) ३९६ बोधु पण नही ३९७ वण खपनी वस्तु ल ई नहीं रे९८ नाहु नहीं (मृ०) ३९९ दावण कर नहीं Yoo ससारनुख चाहु ननी ४०१ नीति बिना ससार मोगवु नहीं (गृ०) ४० > असिद्ध रीते बुटिलताथी मोग वणवु नहीं (पृ०) ४०३ विष्टुपच मूच् नहीं (मृ॰ मृ० क॰) ४०४ वयोग्य उपमा आपुं नहीं (मृ० गृ० व० उ०) ४० ( स्वार्थ माटे क्रोध कर नहीं (म० गृ०) ४०६ बादयरा प्राप्त कर नहीं (उ०) You धर्मद्रव्यानी लपयोग करी शकु नहीं (गृ०) Aod द्वान कु-शममा कार्वे (ग्रे) ४१० सबसंग परित्याग कर (परमहस्र) ४११ तारी बोधें मारी वर्ष विसाद नहीं (मर्ब)

४०७ अपवादची खंद वह नही

¥१२ स्वप्नानद खेद कह नहीं

४१४ सपने वेथु नहीं (ग० व०)

४२८ धर्मक्या खडण कर ४२९ नियमित क्रतंब्य चुक् नहीं ४३० अपराधशिया तोड मही Y११ याचकती हासी कर नहीं

¥१६ स्त्री मेळो अम नहीं (गृ॰ स॰)

४१७ कोई साथे जम नहीं (स०) ४१८ परस्पर कवळ आपु नही, लड नही (स॰) ४१९ वधारे ओछ पथ्य साधन कर्च नहीं (स०) ४२० गीरागीना बचनोने पुज्यमावे मान आप ४२१ मीरागी ग्रामी वान ४२२ तस्वते ज प्रहण कर ४२३ निर्मालय अध्ययन कव नहीं ४२४ विचारशक्तिने स्रोस्त्व ४२५ जान विना तारो धर्म भगीत्त कर नहा ४२६ एश्रांसवाय एउ नही ४२७ नीरागी अध्ययनो मस्रो कर

96

४४४ दु बीनी हासी कर नहीं ४६६ सामराना बगर सम्बन्ध १५६ साटकटे स्त्रेजन आयुं नहीं ४३७ सृष्टिकम विरुद्ध वर्ग कर्म नहीं ४३८ स्त्रीयम्मानो त्याग कर्म ४३६ स्त्रीयम्मानो त्याग कर्म ४३९ स्त्रित्ति सामन ए विना संग्रह रवानु छु

¥३२ सत्पात्रे दान आपु ¥३३ दीननी दया खाउ

४१६ निर्दात्ति वायन ए किया वध्यः स्वायु छु ४४० मार्केल वर नहीं ४४१ पर्दु से वाह्य ४४२ सरापा पर वण समा वरु ४४१ सप्तोग्य रेल रूल मही ४४४ सामुक्तानी विचय वाळव् ४४४ प्रमाणना विचय वाळव्

४४६ क्रायोग्य शेल रख्न नहीं १४४५ पानेनडीममां इस्य आपता मासा प्र व ४४६ नाम बीरतचरी तरक क्षोणू ४४४ परमहरानी होती नच नहीं ४४८ बारानी जीत नहीं ४५६ बारांगी जोई हुएँ महीं ४५० प्रसाही/स्वार्यमा मोड क्षोर्ज कने ४५१ छत्री वहातु नही

४५२ अयोग्य छवी पहाबु नहीं ४५३ अधिकारनो शेरउपयोग बंब नहीं ४५४ सोनी हा बंड नहीं

४५५ क्रेशने उत्तेजन आपु नहीं ४५६ निमा कर नहीं

४५७ मर्टेंब्य नियम चनु नहीं ४५८ न्निचर्यांनो गेरउपयोग कव नहीं ४५९ उसम गोनने साम्य कर

४५९ उत्तम गानिने साध्य वर्ष ४६० राक्ति बगरमु इस्य कर नहीं ४६१ देगा बाळारिन बोळस्

४६१ देग बाळारून बाळ्ब ४६२ कृत्यनु परिचाम जांच ४६२ कोईनो उपनार ओळवु नहीं

४६४ मिच्या स्तृति कर नहीं ४६५ खाटा देव स्थापु नहीं ४६६ कल्पित धर्म चलाव नहीं

४६९ किन्यत धर्म पठावु गही
 ४६७ कृष्टिस्यमावत अधर्म कहु नहीं
 ४६८ सर्थ प्रेष्ठ गरव जोचननायक मानु
 ४६९ मानता मानु नहीं

## ४७१ रात्रे शीतळ जळवी नाह नही ४७२ दिवसे त्रण वसन नाह नही ४७३ माननी अभिलापा राख नही

४७० अयोग्य पूजन कर नही

४७४ आलापादि सेवु नही

88

४७५ बीजा पासे बात कर मही ४७६ ट्रक् रूप राख् नहीं ४७० च माद सेव नही ४७८ रौद्रादि रमनो सपयोग कर नही

४७९ शास रसने निष् नही ४८० सत्वर्ममा आहो आव नहीं (मृ० गृ०) ४८१ पाछी पाहवा प्रयत्न कर नही ४८२ मिच्या इठ लउ नहीं

४८३ अवाचकने द्रम्य आपु नही ४८४ खोडीलानी सुखशाति बधार ४८५ नीतिशास्त्रन मान वाप

४८६ हिसक घमने बळम् नही

४८७ अनाचारी धर्मने वळग नही

४८८ मिध्यावाटीने बळव नही

४८९ शृंगारी घर्मने बळगु नहीं ४९० जनान घमने बळगु नहीं

४९१ केवळ बहाने वळगु नहीं ४९२ केवळ उपासना सेवु ननी

४९६ नियतवाद सेवु नहीं ४९४ भावे सृष्टि समादि अनत कहु नहीं ४९५ हब्ये मृष्टि सादिअंत कहु नहीं ४९६ वस्थायने निष्ट नहीं

४९६ पुरुषायने नि-द नहीं
४९७ निय्मपीने चचळताची छळ् नहीं
४९८ हारीरनी भरूसी कर नहीं
४९९ अयोग्य चचने बोलाव नहीं

४९९ अयोग्य वचन बोलातु नहीं ५०० आजीविका अर्चे नाटक कर नहीं ५०१ मा, बहेनची एकाले रह नहीं

५०१ मा, बहैनची एकाते रह नहीं ५०२ पूर्व स्नेहीजीने हमा आहार नेवा जल नही ५०३ तत्थपर्गनिदक पर पण रोच घरवो नहीं ५०४ धीरज मुक्ती नहीं

५०४ वीरज मुक्ती नहीं ५०४ वीरज मुक्ती नहीं ५०५ चित्रने अदुमुत करवा ५०६ विजय कीति, यग सनक्मी प्राप्त करवा ५०७ वीर्जन करता ५०८ व्यतस्य नासवी मही
५०६ गुरूव यम बद्धवो नही
५१० निफाम गोठ आरापव
५११ त्यत्व माया बोलवी नही
५११ त्यत्व माया बोलवी नही
५११ साय्यंच गुचु नही
५११ साय्यंच गुचु नही
५११ सिपर समय मोन रह
५१५ विपर समय मोन रह
५१५ क्या मोन रह
५१६ का भीठा मोन रह

५१८ पगुपद्धित कळ्यान वह नहीं
५१९ क्दरों भारी कळ्या पह नहीं
५१९ क्दरों भारी कळ्या पह नहीं
५२१ क्रम ध्राप्त कर नहीं
५२२ वे पुरुषे साथे सूत्र नहीं
५२३ वे स्त्रीय साथे सूत्र नहीं
५२३ वे स्त्रीय साथे सूत्र नहीं
५२४ प्रास्त्रनी आसातना वह नहीं
५२५ मुझ आदिन्सी क्षायं सूत्र नहीं
५२५ सूत्र क्षांचित्र ने सुत्र आदिन सुत्र नहीं
५२५ सूत्र केंद्र ने सुत्र नहीं
५२५ सूत्र केंद्र ने सुत्र सुत्र नहीं

¥

५२७ देगाटन वक ५२८ देगाटन कर नही ५२९ स्रोमासे स्विरता कर ५३० रामामा पान साउ नही ५३१ स्वरंत्री साथ नर्यादा शिवाय पर नही ५६२ मुलनी विन्मति बरवी नही ५३३ क० कलाल सोनीनी दुवाने वेसबू नही ५३४ कारीगरत त्या (गुरत्वे) जब नही ५३५ तमाकु नेववी वही ५३६ सोपारी व बतत सावी ५३७ गोळ क्षमा माहवा पह मही ५३८ निराधितने आश्रय बापु ५३९ समय विना व्यवहार बोल्बो नही ५४० पुत्र रुग्त वर ५४१ पुत्री रूपन कर ५४२ पुनलग्न कर्द नही ५४३ पुत्रीन मणाव्या बगर रह नही ५४४ स्त्री विसामाठी होए बह ५४५ तेओने धमपाठ शिसङाव

५४६ प्रत्येत रूपे शांति विराम राखवा ५४७ सपरेशकने सामान बाप्

٧k

५४८ बनत गुणवर्तची घरली सृष्टि छ एम मानु ५४९ कोई बाळ सस्य बढे करी दुनियामायी दुल जरी

एम मान

५५० दुःन बने सेद धमणा छे ५५१ माणम बाह स बची पावे

५५२ घौर्य, बृद्धि इ॰ मी मुखद उपयोग गर ५५६ बोई बाळ मन दु सी मानू नहीं

५५४ দুখিনো বু ল সন্যাসন কর ५५५ सब साध्य मनारच धारण कर ५५६ प्रत्येष हत्त्वज्ञानीयोने वरमस्वर मान् ५५० प्रत्यव । गुणतस्य प्रहृण व र

५५८ प्रत्येकना गुणन प्रपृत्तित कह ५५९ पुरुषतं स्वर्गे बनाव् ५१ - सृष्टिने स्वर्गे बनावु तो शुद्रुवन माण बनावू ५६१ तरनाचें सृष्टिने मुखा करतो ह स्वाय अपू

५६२ दृष्टिना प्रत्येक (-) गुणनी बृद्धि कर्ष ५६६ पृष्टिम दासक बता सुधी पाप पूज्य से एम सानु ५२७ देगाटन पर ५२८ देगाटन कर नही ५२९ चोमासे स्विरता वर ५३० समामां पान लाव नहीं ५११ स्वस्था साथे मर्यादा सिवास कर महा ५३२ भूल्नी विस्तृति शरबी नही ५३३ क० बराल सोनीनी दुवाने वेसव नहीं ५३४ कारीगरने स्यां (गुरुखे) जब सही ५३५ तमाक मेववी नहीं ५६६ सोपारी व बलत सावी ५३७ गोळ बुपमा नाहवा यनु नही ५३८ निराश्रितने माध्य भाप ५६९ समय विना व्यवहार बोल्यो नहीं ५४० पत्र लग्न वर् ५४१ पुत्री लाग कर ५४२ पुनल्य कर नहीं ५४३ पुत्रीन मणाव्या बगर रह नही ५४४ स्त्री विद्यागाळी भोषु कर ५४५ देओन धमपाठ शिसहाव

## ४५

५४६ प्रत्येक गृहे शांति विराम राजवा

५४७ वयेनको समान आपु ५४८ बनत गुणपमधी भरनी सृद्धि छ एम मानु ५४६ कोई काळे तस्त्र बडे करी हुनियामाची हुन्म वनी एम मानु ५५० हुन्न अने सेंद्र फ्रमणा छे ५५१ माणस बाहे त करी सर

५५२ गीर्म, युद्धि इ० नो सुलद उपयोग कर ५५३ कोई काळे यन दु ला मानु नहीं ५५५ सुरितम दु क प्रनागन कर ५५५ सर्वे साल्य मानोरम धारण कर ५५६ प्रयुक्त सल्वमानीकान परमेस्कर मानु

५५५ सर्वे साध्य मागोरच बारण कर ५५६ प्रचक संस्वनानीवान परमेस्वर मानु ५५७ प्रत्येकनु गुणतस्य ब्रह्म बर ५५८ प्रत्येकना गुणते प्रपुक्तिय कर ५५८ प्रत्येकना गुणते प्रपुक्तिय कर ५५९ हुद्दुबन स्वग बनाव्

५६० सुव्टिने स्वर्ग बनायु ठा फुट्यने मोग बनायु ५६१ तस्वाचें सुव्टिन सुनी करता हु स्वाय अपु ५६२ सुव्टिना प्रत्येन (–) गुणनी बृद्धि करू ५६३ सुव्टिना दाखळ बता सुधी पाप पुण्य छे एम मानू ५६४ ए मिद्रात तरवयमनो छ. नास्त्रिक्तानो नयी एम मान ५६५ झदय शोवित कर नही

५६६ बालात्यवाधी वैरीने पण वद्य कर ५६७ स् जे करे छ तमां असमव न मान् ५६८ हाका म कर, खबापु महीं यहन कर

५६९ राजा छता प्रजान तारे रस्ते चढावू ५७० पापीने अपमान माप

५७१ न्यायने चाहं वर्तुं ५७२ गुणनिधिने मान आपु ५७३ हारी रस्तो सर्व प्रकार मान्य राज्

५७४ घर्मासय स्थापु ५७५ विद्यालय स्वापं ५७६ मगर स्वच्छ राख

५७७ वद्यार कर नास नही ५७८ प्रजा पर वात्सस्यता धराव

५७९ कोई व्यसन सेव नहीं

५८० वे स्त्री परणु नहीं ५८१ तस्वनानना प्रायोजनिक समावे बीजी परणु से अपवाद ५८२ वे (ंं) पर सममावे जीउ ५८३ सेवक तत्त्वज्ञ राख **५८४ बगान क्रिया तजी दर्स** ५८५ नान किया सेववा माटे

५८६ कपटने पण जाणव

es

५८७ असूपा सेव नही ५८८ धम भाजा सत्रथी खेष्ठ मानु छ ५८९ सद्गति वमने ज नेवीश ५९० सिद्धात मानीश प्रणीत करीश

५९१ वम महारमाओने सामान दईना ५९२ ज्ञान विना संघळी याचनाओ त्याय छ ५९३ भिक्षाचरी वाचना सबु छु ५९४ चतमसि प्रवास कर्व नही

५९५ जेनी तें ना कही ते माटे शोधु के कारण मागु मही ५९६ देहपात कर नही ५९७ व्यायामादि सेवीश

५९८ पीपघादिक व्रत सेव् छ

५९९ बाघेली वाश्रम सेव छ ६०० अकरणीय किया ज्ञान साधु नही ६०१ पाप स्पवहारना नियम बार्च नहीं ६०२ सुत रमण वर नही ६०३ रात्रे धौर-चर्म वरावु नही ६०४ ठासाठास सोव ताणु नही ६०५ अयोग्य जागृति भोगन् नही ६०६ रसस्वाद समधम मिथ्या कर मही ६०७ एकाट बारीरिक धम आराप् मही ६०८ अनक देव पूत्र मही

86

६०९ गुणस्तवन सर्वोत्तम गणु ६१० सदगुणन् अनुकरण कह ६११ न्यूगारी काता प्रमु मानु नही

६१२ सागर प्रवास कर नही ६१३ आध्यम नियमाने जाण ६१४ सीर-कर्म नियमित राखव ६१५ ज्वरादिकमा स्नान करन नही

६१६ जळमा दूवनी मारवी नही

६१७ कृष्णादि पाप रेन्यानी त्याग वह छ ६१८ सम्यक समयमा अपध्याननी ह्याम गई छ ६१९ नाम अचि होवीश नही

६२० कमा कमा पाणी पीच मही ६२१ आहार अत पाणी पीउ नहीं ६२२ चारतो पाणी पीउ नही ६२३ रात्रे गळ्या विना पाणी पीछ गडी ६२४ मिथ्या भाषण कह नहा ६२५ सन दा दोने सामान आप ६२६ अयोग्य आले पूरुप नीरल नहीं ६२७ बयोग्य धषन भाख नही ६२८ खचाडे निर बर्स महीं ६२९ बारवार अवयवो नीरल नही ६३० स्वरूपनी प्रधासा कड नहीं ६११ नामा पर गुळभावे राचु नहीं ६३२ भार भाजन वह नही ६३३ तीव हृदय राम्यु नही ६१४ मानार्थे इत्य कर नही ६३५ बात्वचे पृथ्य वह नहीं ६३६ कि चन क्या दप्टात सस्य वहं नहीं ६३७ भवाणी यारे रात्रे चालु नहीं ६६८ एतिजो गेरतप्रयाग गर्द महीं

86

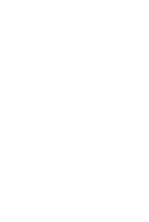
६४८ तारा घम माटे राजडारे नेस मुक् नही ६४९ बने ह्यां सूची राजनारे चनु नही ६५० धीमताबस्यान वि० वाळाची कर ६५१ विर्यंतावस्थानी धीक वर्ष मही ६५२ परदु से हुई धई नही ६५६ जेम बने तेम धवळ बस्त्र संजु ६५४ दिवसे तेल नाम् नही ६५५ स्त्रीए रात्रे तेल नाखवू नहीं ६५६ पापपव सेव नही ६५७ घर्मी सुबन्नी एक कृत्य करवानी मनोरथ घरावू छु

६४५ मृत्यु पाछळ शतकी रोज नहीं ६४६ व्यास्थानशक्तिने बाराप् ६४७ धमनामे रुज्जमा पढ नही

६४१ अष्ट्रत धन लंड नही ६४२ वळदार पाघडी बाच नहीं ६४३ षळदार घलोठी पहेर मही ६४४ मलिन बरत्र पहेर

६३९ स्त्रीपणे यन प्राप्त वर्त नही

६४० बप्याने मातुमाने सत्नार दउ



42

६८० एक बुळमा व"या बायु नही कर मही ६८१ सामा पक्षना सना स्वधमी अ घोळीच ६८२ घर्मेक्सच्यमा उत्साहादिनो उपयोग नरीन ६८३ आजीविका अर्थे सामान्य पाप करतो पण कपती

जर्द्द्य

६९४ मोह त्यागु छ

६८४ घममित्रमा भाया एत नही ६८५ चतुवर्णी धर्म व्यवहारमा भ्रतीय मही ६८६ सत्यवादान सहाममुख वर्दश ६८७ धृत स्वामने त्वामु छ ६८८ प्राणी पर कोप करवो नही

६८९ वस्तुनु तस्य जाणवु

६९० स्तुति, मिक्त नित्यकर्म विग्रजन वर नही ६९१ जनय गाप कह नही

६९२ आरमोपाघि त्याग छ

६९३ कुसन त्यानु छ

६९५ दोषनु प्रायश्चित्त गरीश ६९६ प्रायश्चितान्त्रिनी विस्मृति नही कर

६९७ संघळा करता घमवग प्रिय मानीश ६९७ संघळा करता घमवग प्रिय मानीश ६९८ तानो यम विकरण गुरू सेववामा प्रमाद नहीं कर ६९९

> ( ) बश्रीस योग

सत्पुरुपो गीचना बजोस योगना मग्रह वरी आरमान चञ्चळ करवानु वहे छे

 १ निध्य पोताना जेवो थाय तने माटे तने श्रुतादिक भान आपनु

 १ पोताना आचायपणानु जे नात हाय तेनो अन्यने बोध आपनो अने प्रकास करवी
 पाठातर—१ भोगसायन योग माटे निष्ये आचाय पाने आरोपना नरवी २ आयार्थे आसावना क्षेत्र पासे

प्रकाशवी नही

भूभ ।

३ आपंतिकाळे वय समंगु दृढरायु स्थागर्यु नहीं ।

५ सोर परस्रोवना सुवान फळनी बांछना विना देश वर्ष्यु ।

५ तिहास सकी त प्रमाणे सल्ताका वतवृ अने नदी हिल्ला विवेचको सहून वरशी ।

१ मारवानी स्थान वर्षा ।

७ गुन्त तप करव ।

८ निकांग्रहा पासकी ।

५ परियत एससनी सोडवा

१० सरळ चित्त रासवृ ११ शारमस्यम गुद्ध पाळवो १२ समस्यि शुद्ध रासवृ १३ चित्तनी एकान्न समामि शक्षवी

१४ कपटरहित आचार पाछवो १५ वितय करवायांच्य पुरुषानो यथायोग्य विनय करवो १६ वितय करवायांच्य

१७ वैराग्य भावनामा निमम्न रहव् १८ मागारहित वतवु १९ शुद्ध करणीया सावयान थव् २१ पोताना दोप शममावपूनक टाऊना २२ सर्व प्रकारना विषयधी विरक्त रहेव २३ मुळगुणे पंचमहावत विजुद्ध पाळवा रे४ उत्तरगुण पचमहात्रत विशव पाळवा २५ उत्साहपूर्व कायोत्सर्ग करवी २६ प्रमादरहित जान-ध्यानमा प्रवतन करव २७ हमरा आत्यवारित्रमा सूरम उपयोगयी वत्यु २८ म्यान, जिती द्रवता अये एकावतापुरक करवू

२९ मरणांत दुःशबी पण सब पामवी नहीं रे॰ स्त्रीकादिका सगते स्यागको 📢 प्रायदिवस विशुद्धि वरवी

ए एने को योग अमूरम ध

१२ मरणवारे साराधना वरवी संचळा संबह करनार

परिणामे बनत शखने पामे छे

विक शक १९४० चैत्र

(Y)

स्पृतिमा राखवा योग्य महायाक्यो 🗻 १ एक भदे नियम ए ज आ जगतनी प्रवर्तक छै

र जे मनच्य सत्परयोगा चरित्रग्रहस्यन पाम छै. है

भनुष्य परमन्त्रर धाव है र भगळ विसा ए ज सव विपम रूपान मुळिएं 🖪

४ शाजानी मेळाप जने योडा साथे वर्ति समागम ए बप्ने समान द शदायक छे

५ समस्वभावीन मळवं एन मानीओ एकांत बहे छै ६ इन्द्रियो समने जाते अन सुल मानो त बरता तम धमे

षीतवामां व सल, आनद अने परमपद प्राप्त करनी

७ राग विना ससार नदी जन ससार विना राग नदी

८ युवाबयनी सर्वसम परिल्याम परमपत्ने आपे छ ९ से वस्तुमा विचारमा पहाँची के ज बस्त अलीहिय

स्वरूप छ 🐶 गुणीना गणमां अनुरक्त थाओ

वि० स० १९४०

वचनामृत

र आ तो अश्वेद सिद्धात भानजो क सयोग वियोग, सुख, दुग्व, होद, आनण अणराग, अनुराग इत्यादि योग कोई व्यवस्थित कारणने रुईने रह्या छ

र एनात भाषी के एकात यायदोपने सामान न आपजी वे नोईनो पण समामम करवा योग्य मयी छता ज्या सुधी तेवी दशा न बाय त्या सुधी सत्पुक्यनो समागम

अवस्य सेमबे धटे छे ४ जे कुरयमा परिणामे दुख छे तेने सन्मान आपता प्रथम विचार करो

प्रयम विचार करों भे कोईन अन करण आपनो गही, आपो तेनाची भित्रता रातनो नहीं, भित्रता राजी त्या अन्त करण आप्य

ते न साप्या समान छे

एक भोग भोगवे छे छता कमनी वृद्धि नची करती,
अने एक भोग नची भोगवती छता कमनी वृद्धि करे

छे, ए आरचयकारक पण समजवा योग्य कथन छे

७ योगानुयोगे बनेकु कृत्य मह सिद्धिने वापे छ

६९ अतरम माह्यस्य जेमी गई ते परमात्मा छे

०० वह छहंन जन्तामित परिचाम मायनो गही

११ एवं मिरहाए आमीनी आना आराचता तरबज्ञान प्राप्त
पाय मा

०० किया ए क्य उपयोग ए वय यरिवाम ए बम, भ्रम
ए नियाल, बहा ते आरमा अने यका ए व नस्य

छे रोकने समारबी गही, आ उत्तम वस्यु सामीमीए

मते आपी

31 जगत जैम के तम वस्त्रज्ञाननी विच्छ जुमो

अ४ थी मोदमने जार वेद दगन करेका बोबाने श्रीमद्

महाविरस्वाभीए वस्पननव बाज्या हुता

भगवतीमा कहेलो पुद्रणक वामना परिम्राजकानी क्या

करवामानीमेन कहेल व्हर्ष स्टब्स के

७६ बीरना बहेला शास्त्रमा मोनेरी वचनो छटक छटव बने गप्त छे ७७ सम्यक्तेत्र पामीने तुमे समे ते घर्मदास्त्र विचारी सी पण आत्मद्रित प्राप्त थशे ७८ इदरत, भा तारो प्रवल ब याय छ ने मारी घारेली मीतिए मारो काल ब्यतीत करावती नथी 1 ( क्यरत ते प्रवितकमें ) ७९ माणस परमेश्वर बाय छे एम ज्ञानीओ क्हे छे

٤ų

८० उत्तराध्ययन भामनु जनमूत्र तत्त्वर्थटर पूना पूना खबरोगो

८१ जीवता मराय हो फरी न भरतू पढे एवु भरण इंज्डवा योग्य छे

८२ इन्डप्नता जेवी एक्के महादीय मने कागती नधी ८२ बगतमा मान न हात ता बहीं व मोस होत !

८४ दस्तुने वस्त्यत जलो

८५ धर्मनु मूळ वि० छे

८६ तेन नाम विद्या के जेनाची नविद्या प्राप्त न चाय

८७ बीरना एक कानगरे पण समजो

११० पबित्र पुरुषोनी हुपार्गिट ए ज सम्बर्भनान छ १११ अतहरिए वहेलो त्याग विश्वद वदियी विवारता धणी अर्घ्यंतानदया यता सुधी वर्षे छे ११२ कोई धमधी है विषद्ध नधी सर्वे धर्म ह पाळ छ

22

१०९ न्याय मन 📧 प्रिय छे बीरनी दौली 🛭 अ न्याय

तमे सपळा धर्मधी विषद्ध छो एम नहेबामां मारी चशम हेतु 🖽 ११३ समारी मानेको यम मने क्या प्रमाणयी बोधो छो से

मार जाणव जरूरन छे ११४ शिविल वच विष्टमा नीचे आवीने ज विसराई जाय (--को निजरामा आप तो )

११५ कोई पण धास्त्रमा मने नहा न हो ११६ द सना यार्या नरान्य सई जगतने आ लोको

धमाव हो ११७ सरपार ह कीण छ एन मने पुण भान नवी

११८ त सत्पूष्पनो शिष्य छे

११९ ए ज मारी आवात्रा छे १२० मने नोई गजनुषुमार जेवो वसत आवो

१२१ नोई राजेमती जेवी वस्त वावी १२२ सत्पुरुषो कहेता नथी, वरता नथी, छसातेनी धत्पुरपता निविकार मुलमुद्रामा रही 🖫

१२३ सस्यानविचयच्यान पूर्वधारीओने प्राप्त चतु हुदो एम मानवु योग्य लागे छे तमे पण तमे ध्यावन करो १९४ आरमा जैवो कोई देव नयी

१९५ बोण माम्मकाळी ? अविरित सम्दर्शस्ट के विरित ?

१२६ कोईनी आजीविका तोडवा नही वि॰ स॰ १९४३ कार्तिक

( 4 ) भोडा वाक्यो

विशाळ मृद्धिः मध्यस्थना सरळता अने जितेद्वियपण

बाटला गुणी जे खारमामा होय, त सत्व पामबान् सत्तम पात्र के २ जगउमा भीरागीत्व, विनयता अने

नहीं मद्रवायी वा बात्मा अनान्बाळयी रसरघो पण निरपायका धई त यई हवे आवणे वरुपार्य भरती उपित में बार बाओ !

३ परमारमाने ज्याववाची परमारमा व्याय छ, पच ते ध्यावन, आत्मा सल्यस्पना चरणकमळनी विनयौ पासना बिना प्राप्त करी शबलो नवा ए निर्मेश्य भगवानन् सर्वोत्हय्ट बचनामृत छे

😾 बाह्यभावे जगतमां नतीं बन अंतरगमां युवात शांतली भूत-निलेंप रही ए ज मा यता अने बोयना छे ५ इन्छा मगरत नोई प्राणी तथी विविध माधायी

समा पण मतुष्यप्राणी रोशयेश छे इच्छा, अरणा ण्यां सूची अतुन्त छे स्यां सूची से प्राणी अघीनुत्तिनत् छै इच्छा जयबाळ श्राणी क्रम्बंगामीचत् छे

६ तने मीह थो, अने तैम शोक थी, वे जे सवन एक्टब ( परमारमस्वरूप ) ने व वाए छे

७ तुपातुरने पायानी अहेनत करजो अत्पातुरन

मुपानूर पवासी जिज्ञासा पेण करजी जैन से पेदा न याम तब होय तने माटे बदासीन रहेजो

80 ८ दिव्यविष गया पछी गमे से चास्त्र, गमे से अपर, गमे

रै॰ गमे तेटली विपत्तिको पडे तथापि भानी द्वारा सासारिक फळनी इच्छा वरवी योग्य नथी ११ जेनी प्राप्ति पत्री अनवकाळन् याचक्पण् मटी सब

कालमें बाट अयाजकपण प्राप्त होय छ एवी जो कोई होय दो ते तरणतारण जाणीए छीए, तेने भजी १२ सर्वं प्रकारना भवने रहेवाना स्थानकरूप आ ससारने विषे मात्र एक वैराध्य ज अभय छे

१६ जैने मृत्युनी साथे मित्रता होय, अथवा जे मृत्युपी भागी छटी शके एम होय अथवा ह नहीं ज मद एम जैने निरुप होय ते भले सले सए ~(श्री तीयकर-छ जीव निकाय अध्ययन )

१४ विपम भावना निमित्ती बळवानपणे प्राप्त चया छता जे गानीपुरय अविषम उपयोगे बत्या छे बर्ते छे. अने

भविष्यनाळे वर्ते से सर्वने वारवार नमस्कार

७२ १५ परमर्जात्तपो स्तुति नरनार प्रत्ये पण घेने राग नदी अने परमद्रवर्षी परिषठ-जसम् करनार प्रत्ये पण

ममस्तर है

१ को ने नोई पन प्रस्य रामण्य रक्षा नमी से महान्माने बारबार ममस्त्रार [ १७ मीतराग पुरुतना समायम विना, क्यासना विना सा जीवने मुगु गुता नंत करपत बाग रे सम्बन्धान वर्षायों चारी समान्यना नमायों बात रे सम्बन्धान क्यामें चारी समान्यना नमायों बात रे सम्बन्धान क्यामें चारा रिमान्यन नमायों बात रे सम्बन्धान क्यामें चारा रे में में ए अने बस्तु अन्य स्थानके होती नमी

जेने क्ष्य नथी, से पुरुषस्य भगवानने बारंबार

२ जे जे नाळे जे की करवानु छे सेने बंदा उपयोगमा रास्या रहो ३ क्रमे करीन पछी लेनी खिदि करो ४ जल्प आहार, अस्य विहार, अस्य निक्षा नियमित बाचा नियमित काया अने अनुनुळ स्थान ए मनने

१ प्रमादने रोध आरमा मळेल स्वस्प मुली जाय छ

वश करवाना जनभ शायनी से

छे क्दापि से जिल्लासा पार न पढी वोमण जिल्लासा से पण से ज अधावत् छे

 नवा कर्म बायवा नहीं अने जूना औषवी त्या एवीं जेनी अचळ जिल्लामा छे ते, त प्रवाण वर्ती शके छे
 जे हरवनू परिणाम चन नवी, ते इत्य मूळ्यों ज करवानी इच्छा रहेवा देवी जोईती नवीं

८ मन जो शक्ताशील वह वायु होय तो ह्रक्यानुयोग' विचारकी योग्य छे प्रमादी वर्ष गय होय तो

'बरणकरलानुसोम विचारको योग्य है, जमें कथायी यह गमु होस तो 'समंकवानुसोम' विचारको योग्य है जह यह गमु होम तो गणितानुसोम विचारको योग्य है के कोई यम कामनी निराखा इच्छवी परिणामे पछी जैटको छिटि यह देखनो लाम, जाम करमानी सदोसी

 पृथ्वी मबधी बलेश बाय तो एम समजी साथे आववानी नवी, कटटी हु तैने देह

रहेवादी

७४ ह बळीते नई मुख्यान नवी स्त्री संबंधी क्<sup>रेर</sup>न, सकामाव याय तो आम समजी अन्य भोना प्रत्य

हतने के ति मळापुननो साणमां मोही पड़यों (अ वस्तुनो आएणे नित्य त्याग करीए भीए तथा!) धन सबयी निराधा ने कण्य याय तो ते ऊषी जातना कोकरा छे एम समझी सताय राक्षमें अम करीने तो तु निक्सही यह एकोण

तु नि स्पृष्टी वर्ष धकीण १ तेनो तु बोध पाम वे जनाची समाधिमरणनी प्राप्ति भाग २ एक बार ओ समाधिमरण चय तो सर्व गाउना

थाय २ एक बार जो समाधिमरण चयु तो सर्थ शाळना ससमाधिमरण टळ<sup>ी</sup> ३ सर्वोत्सम पद सबरयाणीनु छ

शास्त्रक १९४३

(6)

सत्पुरुपोने नमस्कार

अनतानुबधी क्षीघ अनतानुबधी मान अनतानुबधी ग्रामा अने अनतानुबधी छोभ ए चार तथा फिप्यांत्व ग्रीहिनो. मिस्रमोहिनी सम्यनत्वमोहिनी ए श्रम ए नपी त्या मुधी सम्बन्दिन्द बनु ममनतु नयी ए हात प्रहृषि जैप जेम मददाने पामे तेम तेम सम्बन्धनो उदम्य पाम छे ने प्रहृतिकोगी द्वाणि छेवदी परम दुक्त छे जेत त प्रति छेन्द्रि होने सात्मा हृदस्तात चर्चा सुक्तम छे उत्स मानीमीए ए क प्रविचे भदवानी फरा फरीने बीध कर्यों छे ने सात्मा अक्षमान्दर्यके ते भेदवा मधी वर्षिट आपधी ती आत्मा आस्त्रमान्दर्यके ते भेदवा मधी वर्षिट आपधी ती

एन पहुँ अटबपु छे तेनी प्राप्ति करीने ससारतापपी अरबत विपायमान आत्माने सीतळ करनो ए ज इत इत्यता छे 'पभ"ए सस्तु बहु गुन्त रही छे ते बाह्य सबी-पन्पी मळवानी नथी अपूर्व अवर्ससीधनधी से प्राप्त पाप छे ते अत्रुम्स्टीचन कोईक महासाय्य स्युपुट-अनुप्रहे

सन्गदना उपनेश विना अने जीवनी सत्पात्रहा जिना

एक मयना बोडा मुख माटे अनत भवनु अनत -नहो बचारबानु प्रयत्न सत्तुरुपो वरे छे परनार नदी अने करनार छ त बननार नदी तो पटी पर्यप्रयत्नमा, बात्मिण हितमा आय उपाधिने आधीन धई प्रमाद रा भारण करवी ? बाम छे छता देग बाळ पात्र

मान जोवां जोईए

सत्प्रयोन योगबळ जगतन करवाण करी प्रणाम-नीराग घेषी समुख्यमे

ववाणिया महानुद १४ वृष १९४५

मीचेना दोय न आयवा ओईए --रै कोईची महा वि"वासपात

२ मित्रयी वित्वासपात ३ मोईनी भाषण ओळववी

४ व्यसनम् नेवन्

५ मिथ्या आळन मुक्तुं

६ सोटा लेख करवा ७ हिसावमा चुक्वमु

८ जुलमी भाव बहेवी

१० 'यूनाधिक तोळी खापनु ११ एक्ने बदले बीजु अथवा मिख करीने खापर्यु

१२ कर्मादानी घषो १६ लाच के अदलावान

१६ लाच के अदसावान ए बाटेगी कई रळवु नहीं ए जाणे सामा सब्यवहार शिंद उपजीवन अर्थे कहीं गयों ( अपूर्ण )

विवाणिया, माह १९४५

नीराणी महास्माओंने शमस्कार वर्म ए जड वस्तु छे जे आस्माने ए जडमी जेटको जेटको आस्मबुद्धिए समागम छे तेटकी तेटकी जडतानी

जिला आरानुबन्ध प्राचना है प्राप्त होया, एम अनुमन प्रदेश संबोधवानी है आरामी प्राप्ति होया, एम अनुमन प्राप्त छे आरान्यका छे ने पीते जड छवा चेतनने छाचेल मनावी रह्या छे । चेतन चेतनमान मूली जई तेने स्वस्य रूप ज माने छे जे पूल्यो ते नाममयोग अने तेना उपये उत्पन्न प्राप्ति स्वस्यस्य नथी मानता अने प्रवे स्योगी खतामा छे, तेने अवस परिचाम श्रीपदी गप्त आचरणा छे शानी तो क<sup>‡</sup> कहा आय तेम नयी अने आम कर्या विना तारो कोई काळे छटको धनार नथी, आ अनुभवप्रबचन प्रमाणिक गण एक सन्पर्धाने राजी करवामा, तनी सुर्व इच्छाने प्रश्नमबामा, ते ज सस्य मानवामा आखी जिंदगी गई तो एक्क्टमा उत्हच्ट पदर भव अवस्य भोधी जईना मोहमयी आसो वदी १०, शनि, १९४५

( १३ ) निराबाधपणे जैनी मनोवृत्ति बह्या कर छे, सकस्प विकल्पनी मदला जन वह छे पचविषयथी विरक्तक्रिता

छे. अनेकात बिच्युक्त एकातदृष्टिने जे सेन्या करे छे. भैनी मात्र एक बुद्ध वृश्ति व छे, त प्रतापी पुरुष जयबान वर्ती वापणे तेवा बवानो प्रयत्न गरुवो खोईए

अकरो जैने फुटचा छे वलेशना कारण जैने निमुळ कमी

वि० स० १९४५

भाई, आटमु तारे अवस्य करवा जेव हो .--<sup>१</sup> देहमा विचार बरनार बठो छ ते देहपी मिन्न छै ? से मुली हो में दुसी ? ए समारी ले र हुन्स भागा व अने दुन्तना कारणो वण छने दृष्टि गोपर वन तम छता बदाजि न बाय ती मारा० नोई मागने बाची जा एटले सिंद बढ़ी स टाळवा माटे जे जनाय छ न एटली क के तैयी बाह्याम्यतर रहित बनाय छे जोर दगा अनुमनाय छे ए प्रतिका ४ ते सावन माटे सर्वमनपरित्यानी थवानी आवण्यकता छ निवास सद्गुरना बरणमा नईने वहतु शोव्य छे

५ वडा भावधी पडाय तथा भावधी सब काळ रहेवा मार्रेनी विचारणा प्रथम करी हर को सने पूरवर्ग बद्धवान लागतां होय तो अध्यामी, देनस्वाभी रहीने पण त बस्तुने विमारीश मही र प्रथम कमें तेम करी तुं वार्र बीवन आण वाणवु का माडे के भविष्यसमाधि येवा अन्यारे लत्रवाची

# 13 ७ से बायायनी मानसिक बारमीययोग सी निर्वेदमां

राध ८ जीवन वह हुन् छे, उपाधि 📭 छे, अने त्याग धर्र दावे तस नथी ता नीचेनी बात पून पून स्थामां राज १ जिलाका से बस्तनो राजवी २ ससारने अपन मानव रै पूर्व इसे नची एम गणी प्रत्यक सम सेन्या जवो

तेम छता प्रवक्तमं नड तो शोन करवो नहीं 😮 देहनी बाटली चिता राख छै सटली मही पण एपी अनल गणी चिंता आत्मानी राख कारण अनत भव एक भवमा टाळवा छे ५ म भारे सी प्रतिशोदी बा

 ८ अनुसरवासी थईने बर्त ९ छवटन समये समये चुकीश नहीं ए अ मळामण

अनः ए क श्रम

६ जैमाची जेटल बाय तेटल कर ७ परिणामिक विचारवाळी था

क्षित्र सन् १९४६

समजीने बल्पभाषी थनारने परचाताप करवानी योडो च अवमर सम्रवे छे

63

है माय ! सातमी समतमप्रमा नरवनी वेदना मळी होत को बलते सम्मत करत, पण जगतना मोहिनी।सम्मत पवी नधी

पुरना अन्य वर्ष उदय आच्ये वदता जो शीच करो छो हो हवे ए पण ध्यान राखो के नवा बाबता परिणामे सवा दो बधाता नवी ?

भारमाने बोळसको होय सो आत्माना परिचयी धवु, परवस्तुना त्यागी थव्

नेटश पीतानी पुद्रगलिन मोटाई इच्छे छ वैटला हरका समव प्रशस्त पुरुषनी मन्ति नरी, तेनु स्मरण करी, गुण

चित्रत करो मुबई, वि॰ स॰ १९४६

( १६ ) सहज जे पुरुष वा वयमां सहज नोच करे छे, ते पुरुष माट

प्रथम सहज ते ज पुरुष रूचे छे तेनी हमणा एवी दशा अवस्यका रही छे के कईन विना सब ससारी इच्छानी पण तेणे विस्मृति करी

ापना सन विवास इच्छाना नग तथा विस्तृति करा माली छे ते सर्पक पास्पी पण छे, सने पूजनो परम मुमुनु छे, छेल्ला मार्गनो नि शक जिलालु छे

छरला मागना ।न शक ।जनायु छ हमपा थ आवरणो पने उदय आव्या छ ते आव रणोधी एने खेद नमी, धरतु वस्तुभावमा वती मदतानो खेद छे

ते पमनी विधि अधनी विधि, शामनी विधि, सने तैने आचारे मोशनी विधिने प्रकाशी शके तवी छे पणा अ योका पुरुषोंने प्राप्त समी हुन्ने एको हुन्काळनी समोमनामी पुरुष छे

तेने पौतानी स्पृति साटे शव नथी, सक माटे गर्व नथी, सेम से साटे सेनो प्रगयात पण नथी तम छता कईक बद्दार राखनु पढे छे, सेने साटे खेद छ

#### 64

सेनं अत्यारे एक निषय निना बोजा विषय प्रति

ठेकाण नयी से पुरुष जीने तीरण उपयोगवाळी छै. बापरवा ते ब्रीति घरावती नयी

वात न करवी जोईए २ बहेनारमी बात पूण सामळवी जोईए ३ पीने घीरजयो तनी सदलर आपवो ओईए ४ जैमा आत्मरलाचा के आत्महानि न हीय ते बात

उच्चारवी चोईए

हा मी १-४

तथापि ते तीरण उपयोग बीजा कोई पण विषयमा

( 20 ) नीचेना नियमो पर वह लक्ष आपव --१ एक बात करता तेनी अपूणतामा अवस्य विना बीजी

५ पर्म सबधी हमणा बहु ज ओछी बात करवी ६ लोकोची धर्मव्यवहारमा पहत्रुं नही

मुंबई, पोष सुद , बुघ, १९४६

(24)

महाबीरना बोधने पात्र कोण ?

१ सत्पृथ्यमा चरणनो इच्छक

२ सदैव सूदम बोधनो अभिरापी

३ युण पर प्रधास्त्रभाव राखनार ४ ब्रह्मद्वतमां प्रीतिमान

 प्यारे स्वदोव देखे त्यारे तने छेन्वानो अपयोग राखनार,

चपयोगयी एक पळ पच मरनार
 प्रशासवासने बलाणनार,

८ तीर्पाद प्रवासनो उछरनी

श्राहार विहार निहारनो निममी
 पोठानी गुरुषा दबावनार

एवो कोई पण पुरुष ते महाबीरना बोघने पात्र छै सम्मकदशाने पात्र छे पहेला जबु एक्के नवी

म्मकदराने पात्र छे पहेला जबु एक्के नवी मुंबई, पात्रण सुद ६, १९४६

(28) है जीव, स भ्रमा मा, तने हित कह छ

बतरमां मुख छे बहार घोषवायी मळशे नही बतरन सुख बतरनी समधेणीमा छे स्थिति धवा

नाटे बाह्य परायोंनु विस्मरण कर, आस्वर्थ भूल समधेगी रहेवी बहु दुल्म छे निमित्ताचीन शृति तरी फरी चलित गई अहो, न बवा अचळ गभीर उप-

पोग राख आ इम यदायोग्यपणे चाल्यो आ यो हो ह जीवन

त्याग करतो रहीश, मझाईश नही, निर्भय थर्रश भ्रमामा तने हित कह छ मा भार छे एवा भावनी व्यास्या प्रामे न कर. भा तेन छे एम मानी न वेस

मा माटे आम करव छ ए श्रीविध्यनिर्णय न करी रास मा माटे माम न चयु होत तो गुख बात एम स्मरण

न कर

्र आटलुका प्रमाणे होय तो सार एम आप्रद्वान -

नरी राक्ष

र शीख आणे मारा प्रति चिश्वत नयु एनु स्मरण न राख जा मने अगुम निगित्त छे एसी विवस्थ ता कर आ मने सुम निगित्त छे एसी दुवता मानी न बेस जा न होत तो हु चयाच नहीं एस अपळ ज्याहमा

का न हात ता हु वधात नहा एवं अपळ व्याक्या नहीं करीन पुषकर्म बाटवान छे साने बा वधो प्रसन मळी आख्यो

द्शु एकातिक प्रहण करीश नहीं वृदयायनी जब न बती एकी निरामा स्मरीश नहीं कीजान में ने की ने वेपन के एम मानीश नहीं सारे निमित्ते पण बीजाने दोव करतो मुकाव हारे दोवे तने बणन के ए स्वती पहेंगी विशा के सारों दोय एका व के बण्यने पोतानु मानवु, पोन पोताने मुकी जब

ए बघामां तारी शामनी नधी आटे जुदै जुटै स्वळें में मुखनी करपना करी के हे मूढ़ ! एस न कर---ए तने तें हित कहां

अतरमा सुख छ

# 28 जगतमा कोई एव पस्तव वा लेख वा कोई एवो साक्षी त्राहित तमने एम नथी वही शक्तो के आ मुखनो

भाग छे, वा समारे आभ वतव वा सबने एक ज कमे करायु, ए ज सुचये छे के त्या कई प्रवळ विचारणा रही छे एक मौगी थवानी बोघ करे छे एक योगी थवानी बोध करे छे ए बेमायी कोने सम्मत करीश ? धने शामाटे बोध कर छे ? श्रमी कोने बोध करे छे? कोना प्रेरवाची करे छे ? कोईने कोईना अने कोईने कोईनो बोध का लागे छे?

एना नारणो वा छे? रोमो साक्षी कोण छे ? समे श बाच्छो छों ?

ते क्याची मळशे वा शामा छे ? ते कोण मेळवडो ?

क्या पईने छावजो ? लाववानु कोण शीखवशे,?

### 43

२ दृष्टि एवा स्वच्छ करो के जेगा सून्ममा सून्म दोप पण देखाई गके, अन न्सायायी क्षय यई धरे

> मुबई अपाड बद १२ रवि १९४६ ( २२ )

सहज प्रकृति १ परहित ए ज निजहित समजवु अने परदुः स ए पोतानु दु श समजन्

२ सुख दु स ए बन्ने मननी क्ल्पना छे ३ शमा एज मोक्षनी भव्य दरवाजी छे

¥ सपळा सामे नजभावयी बसवू ए ज खरु भूपण छे ५ चात स्थमान ए ज सन्जनवानु सर मुळ छे

६ सरा स्नहीनी चाहना ए सञ्जनतानु सास रुदाण छे ७ दुजननो ओछो सहवास

८ विवेषवृद्धियी सधळु आचरण करवु

९ द्वेपभाव ए मस्तु होररूप मानवी धर्मक्रममा वृत्ति राखवी

११ नीविना बाधा पर पग न मुक्तो १२ जिलेंद्रिय शब्

१३ ज्ञानचर्चा अने विद्याविलासमा तथा चास्त्राष्ट्रययनमा ग्यावु

१४ गमीरता राखवी

१५ ससारमा राचा छवा ने वे नीविधी भोभवता छवा, विदेही दशा राखवी

१६ परमात्मानी मक्तिमा गूबाबु

१७ पर्रानदा ए ज सबळ पाप मानव १८ दूजनता करी फाबव ए ज हारव एम मानव् १९ आरमज्ञान अने सञ्जनसगत राखवा

( २३ ) वचनावली

र जीव पोताने मुली गयो हो, अने तेथी सन्सूलनो तेने वियोग छै एम सब वर्ग सम्मत कहा, छे

र पीताने मही गवारूप बजान, ज्ञान मठवायी नाच थाय छै, एम नि शक मानव

र ज्ञाननी प्राप्ति ज्ञानी पासेची चवी जोईए. ए स्वामाविक समजाय छे, छदां भीव ओक्करजादि अनतानुबधी क्यायनु युळ छे

¥ नाननी प्राप्ति जेणे इच्छवी, तथे ज्ञानीनी इच्छाए बतब एम जिनागमादि सर्व शास्त्र कह छै पातानी इच्छाए प्रवतसा जनादि काळपी रसक्यो ५ क्या सभी प्रस्पत पानीनी इच्छाए, एटले आचार

नहीं बर्ताय, त्या सूची अभाननी निवृत्ति थवी समबती संबंधि ६ क्षानीना आक्षानु आरायन त करी यने के जेएक निष्ठाए, तन, मन, धननी आसक्तिमो स्थाग करी सनी भक्तिमा जोडाय

 जोके शानी मिक्त इच्छता नथी परतु मोक्षा मिलापीन से कर्या निना स्परेश परिणमतो मधी, अने मनन तथा निदिष्यासनादिनी हत् घतो नथी.

माटे मुम्हाए जानीनी शक्ति अवस्य वर्तव्य छे एस सत्पदयोग कहा छ

८ भामा क्हेली वात सर्व धारतन मान्य छ ९ ऋषमदवजोए बढ़ाणु पुत्रोने स्वरायी मोक्ष बवाना

ए ज उपदेश कथीं हतो

१२ शास्त्रमा बहेकी आजाओं परान्त छे अने से जीवने अधिकारी थवा माटे कही छे, मोक्ष थवा माटे शानीनी प्रत्यक्ष आणा आराधवी जोईए १३ मा ज्ञानमामनी श्रेणी कही, ए पाम्या विना बीजा मागधी माहा मधी १४ ए गुप्त तस्वने जे आराघे छे, त प्रत्यक्ष अमृगने पामी अभय थाय छे इति शिवम

( RY)

मुबई, माह सूद, १९४७

पुराणपुरुवने नमोनम मा लोक त्रिविध तापथी बाकुळब्याकुळ छे झासवामा

पाणीने लेवा दोडी तुवा छिपाववा इच्छे छे, एवो दीन छे अज्ञानने कीचे स्वरूपन् विस्मरण वह जवाची भयकर ज रारण छे सायुवधनी बाणी बिना नोई ए वार अने मुता छंगे साने मही एस निवन्ध छे माटे वरी करी है सायुवना नरपन्नु काने स्थान नरीय छी माटे स्वार नेवळ जगातामन छे नोई पण प्राणीने अस्य पण साता छै, ते पण सायुवधनो क अयुवह छे कोई पण प्रकारता पुष्प बिना धानागी प्राध्विनपी, जने ए पुष्प पण तायुवधना उपरेच बिना नीईए जायु नगी, पण नाळे अरुनेशह ते पुष्प करिने सासीन वई प्रवर्षे छै, तीथी जागे से संवादिकती प्रध्य वर्षेष्ठ गये छु पण पूर्व मूळ एक सर्युवध क छे मारे असे एम व कारीए छीए के एस

अंच शांतापी करीन पूजनायता नुषीनी सब समापि हेनू सरपुष्टन ज कारण हे, आदको बची सपर्यंता छता जैने कर्ष पण स्मृहा नची, समस्ता नची पौतापणू नची पद नपी, गांस नची एवा आक्चबनी प्रतिमारूप सरपुष्टन अमे करी करी नामको समरिए छीए

त्रिलोकना नाथ थश बया ≡ जेने शवा छता थ

7 ९७ एवी कोर्द अटपटी दशायो वर्गे छे के जेनु सामा य मनुष्य ने ओळलाण थनु डुलम छे, एवा सत्मुरपने अमे फरी फरी स्तवीए छोए

एक समय पण केवळ असगपणायी रहेतु ए त्रिकोनने बना करता पण विषट नाय छे, तेवा असगपणायी विकाळ जे रहा। छे, तथा अत्तरका अत करण, ते जोई असे परमाश्वर्य गांगी नांगीए छीए है परमा मा। असे ता एम जा मानांग छीए के आ

काळमा पण जीवनो मोभ हाथ तम छवा जन प्रयोगा म्बरिबत् प्रतिपादन थयु छ ते प्रमाण आ बाळे मोभ न हीय तो आ काले ए प्रतिपादन तु राल्य अने अमन मोभ जापना करता स्तुम्पना ज वरणनु व्यान करीए अने सैनी समीप ज रहाए एवो याम आप

हे पृहदपुराण । अने तारामा अन सरपुहपमा कई भद हाय एम समजता नथी तारा करता अमने तो सरपुहप ज विश्वेष लागे छे नारण के तू पण तेने आयोग ज रहो। छे, अने अमे सरपुहपने ओळस्या विना तने ओळसी यम्या नहीं, ए ज ताह दुषटपण अमने सरपुहप प्रत्ये प्रेस उपनाले छे कारण के तू यस खदा पण तेओ तेष करीए

हे नाय ! तार लोटु न लगाडवु म अम तारा करता पण सत्तदपने विनाध स्तवीए छीए जगत जाम सने स्तव छै, तो पछी असे एक बारा सामा बठा रहीण तेमा तमने

बया स्तवननी आशाना छे जन बया तने प्यनपण पण छ ? ज्ञाना पुरुषो त्रिवाउटनी बात जाणता एता प्रगट

करता नथी एम आपे पूछच त सबधमा एम ज्याय छे

के ईस्वरी इच्छा ज एवी खे क जनश पारमाधिश वात सिवाय शानी बीजी निशाळिक बात प्रसिद्ध न कर, अन ( २५ ) जीव स्वभावे (पोताना समजणनी भूने) दापित छे, त्या पछी तेना दोप भणी जोवु ए अनुनधानो त्याग करवा

जेबु भाय छे अने मोटा पुत्रयो तेम आचरवा इच्छता नधी किंद्रयुगमा अक्स्सगयी अने अवसमजवयी भूलभरले रस्ते न बोराय एम बनबु बहु मुक्कल छे

मुबई असाद वद ४, १९४७ -----

( २६ )

जे जे प्रशार आत्माने चितन कर्यों हीय ये ते प्रकारे से प्रतिमासे छे

विपयात्त्रणाणी मुडताने भागली विचारसानितबाळा जीवने बारमान निस्पण्य भागतु नधी एव पण्य करीने विष्य हे तेव बाय छे ते यथाय छ नेमके जनित्य एका विपयने विषय जारमबृद्धि होवाथी पोतानु पण अनित्यपण्य मार्चे छे

भासे छें विचारवानने आत्मा विचारवान रागे छे द्वायपणे चितन करनारने आत्मा चुन्य छागे छे, अनित्यपणे चितन करनारने अनित्य लागे छे, नित्यपणे जिसन परनारने नित्य लागे छ हा नो १६०

(२७) ह परमङ्गाळ देव। जन जरा मरणांवि सर्वे

मार्ग आप श्रीमने अनत हुपा करी भने आप्यों से अनत प्रकारों प्रतिव्यवार बाज्या हु सवया सवमप सु बड़ी आप श्रीमत्त कई पण नेवान नवया नि स्तृह डो जैपी हु मन सपन, कायांची एकाग्रवायी आपना जरणारिबस्सा नमस्कार कुछ आपनी प्रभानि अन शीवराग पृथ्या

द स्रोनो अत्यत क्षय करनारी एको बीतराम युवपनी मुळ

मूळपर्मनी उपासना मारा हुन्यन विषे अवपयत असद जाप्रत रहो एटलु मागु छुत्त सफळ थाओ । ॐ दानिः सांति 'गाति' असीयन १९४८

(२८)
मृमुत् जीवने वा कालने विषे ससारनी प्रतिकृत दशाबो प्राप्त जावेग त वेन समारणे तरवा सरावर हो वनंतनाळ्यो कामासेको एवो वा सवार स्वयट विभारवातो वेखत प्रतिकृत प्रसमे विशेषे होय छे, ए वात निश्चय करवा याग्य छे

ए ( प्रतिकृळ ) प्रसम को समताग बेदबामा आवे तो कोवने निर्वाण समीपनु साधन छे प्यावहारिक प्रसमीनु निरम विश्वविचयपुष्ट चान करनाए तेमा सुक अने करमाण हु क एवो तेनी स्थिति छे अनुकूळ कप्पनाए ते अनुकूळ सासे छे प्रतिकृळ कप्पनाए ते प्रतिकृळ मासे छे,

अने पानीपुरपोए त वेय कल्पना करवाना ना कही छे विचारवानने शोक घटे नहीं, एम श्री सीयकर कहेता हता

मवर्ड, फायण १९५०

( २९ )

नित्यनियम अधीमत्यरमगुरुम्यो नम

सवारमा ऊठी ईर्यापिय प्रीतिकसी रात्रि दिवस जे क<sup>र्र</sup> बरार पापस्थानकमा प्रवृत्ति थई होय, सम्यानान दशन-चारित्र संबंधी संबंध पचपरमण्ड संबंधी जे कई

अपराध थयो होय, बोई पण जीव प्रति विचित्मात्र पण

व्यद्रास् दिवजन करी नि शत्य चतु राविण गमन करती बातते पण ज प्रमाणे करयु श्री तापुराना क्षांन करी चार पडी माने मर्व सावण व्यापारची निवर्ती एक बावन पर निर्माण करवी स स्रम्यसा 'परसमूच' ए गग्नी याच माळाकी गणी ब पडी बादी तमावाकन क्षम्यमन करवु स्वार पडी एक चडी

क्योत्सर्गं करी थी सत्युष्योना वचनोतु ते कायोत्मर्गमा रहण करी सदवित्तु अनुम्मान करवु त्यार पछी अरमां पढीमा मिलनी बीत जनमाळ करनात एवा पणे (आप्ना मुमार) इच्चारना अरबी पढीमा चरनगुरु सञ्चनु कायोत्सगरूपे रटण करवु अने सबसवेब एनामनी पाच

माळा गणवी श्वाल अध्ययन नरवा योग्य शास्त्रो -वैराप्यगतक इदियानयश्चतक भातमुद्रास्स बच्चारमस्त्रप्य योग

दृष्टिसमुभ्वय नवनस्य मूळपढिल कमंद्रथ वयदिद् आत्मानुगासन भावनावोध योगमायत्रकाग मोदामाळा वर्षानिकववपच अध्यात्मसार यो आनद्द्यनजी षोवीशीमाधी नीचेना स्तवनो १३, ५, ७, ८, ९, **१०. १३ १**५, १६, १७, १९ २२ मात ब्यमन (जुगटु, मास मदिरा वैश्यागमन,

शिकार, चोरी, परस्त्रा) नी त्याग 'जुबा, खामिय, मदिरा दारी आहेटन चौरी परनारी. एहि सप्त व्यमन दु खदाई

द्रितमळ द्रगतिके बाई ' ए सप्तत्र्यसनमा त्याग रात्रिभोजननो त्याग अमुक सिवाय सर्वं बनस्पनिना स्थाग अमृक तिथिए अस्पाग

बनस्पितनो पण प्रतिवध अमक रसनो त्याग अब्रह्मचर्य नौ स्याग, परिप्रहपरिमाण धरीरमा विरोध रोगाटि उपह्रवधी, बेमानपणाधी,

स्यानक समजब स्वेच्छाए करीने ते नियममा चनाधि

राजा अथवा दवान्नि। बळात्नारयी अत्रे विदिन करेल नियममा प्रवर्तवा अशक्त चवाय ता ते माटे पश्चातापन्

बता वर्ष पण करवाना प्रतिना सत्पुन्यनी आनाए ते नियम

मा फरेपार करवायी निवममण नही वराम्ब, १९५०

उत्यथी अथवा उदाममानसवुक मन्परिणत बुदिधी भोगादिने विष प्रवृत्ति थाय त्या सूत्रीमा भानीनी आभा पर पग मकीने अवति वई न समवे पण ज्या भोगादिने विषे सीव रामयपणे प्रवृत्ति थाय स्या भानीनी आगानी

कई अकुराता सभव नहीं निर्भवपणे भागप्रवृत्ति समवे जे निष्यस परिणाम बन्धा छे तवा परिणाम वर्ते त्या पण 'अनतानुक्षी सभय छे तम ज ह समजु छ अने बाध नधी' एवा ने एवा कफनमा रहे अन भोगधी निवत्ति घटे छे अने बळी कई पण परुपत्व कर दी धई शक्ता

घोता छता यण मिच्याजानची नानन्ता मानी भौगादिक मा प्रवतना वर स्यां पण अनतानुबधी समय छे जाप्रतमा जैम जैस उपयोगनु श्रद्धपणु थाय तैम तेम

स्यप्तण्यान् परिशीणपण् समवे मुबई अधाड १९५१ ( \$\$ )

प्रथम पण्मा एम वहा छे के हमूमण ! एक आत्माने जाणता समस्त छोनालोकने जाणीय अने मर्य

जाणवान पळ पण एक आत्मत्राप्ति छे माटे आत्मापी जुदा एवा बीजा भावो जाणवानी बारवारनी इच्छायी सु पानीओप कहां छे, सपापि उपयोगपुरक्त त समजाबु हुलम छे ए माग जुदो छे, जोते तत् सक्त्य पण जुद्ध छ, समा जित्त के एक माग जुदो छे, जोते तत् सक्त्य पण जुद्ध छ, समा माग क्त्यानानीओ कहे छ तम नथा भाग ठकाण टकाणे जर्दने का पूछ छे ? क्यक त जपूक भावनो अस ठकाण ठेकाणेथी प्राप्त यथा सांस्य नथी श्रीजा परका सक्षेत्र अल्ला हुं मुमुझु ! यमनिसमादि जे साथनो सर्व गाहकाम कहा। छ ते उपर बहुला अध्यी निष्मळ ठरवे एम पण नथी कमक त पण कारणे अध्य छ ते सारण आ प्रमाणे छे आत्माना रही गोने प्योगी पात्रा प्राप्त चुना तथा तथा हिस्सि वाम तसे थो स्पार्टी

बाबवा ए कारणा उपनेत्रमा छे तस्वनानीआए एपी
एवा हेतुयी ए साधनी कह्या छे, पण बीवती समयणना
सामधे फेर होवामा त साधनीमा ब अध्येन रह्यो जयवा
ते साधन पण अभिनिवेद परिणामे प्रह्या आपक्षी ते साधन पण अभिनिवेद परिणामे प्रह्या आपक्षीआए ए वाध्यने चह देसाडवामा आवे तेन उत्तरप्रामीआए ए तस्वनु उत्तर वहा छै ' वसाधिया, आवव १४,१९५१ - ११२ ( ३८)

एवभूत दृष्टियी ऋजुसूत्र स्थिति नर ऋजुमूत्र दृष्टियी एवमृत स्थिति कर नगम दुष्टियी एवभूत प्राप्ति बर एवम्त इध्टिथी मैगम विगुढ कर सप्रह दृष्टियी एवभूत था एवभूत दुष्टिची सब्रह विशुद्ध कर ध्यवहार दुष्टिथी एकभूत प्रत्य जा एवभूत दृष्टिथी व्यवहार विनिवृत्त ४ र शब्द दष्टिमी एवमृत प्रत्ये जा एवं मृत दृष्टिची शाद निविवल्प कर समिभक्ड दिप्टची एकमृत अवलोक एवमूत दष्टियी समभिक्ड स्थिति कर एवमुत दिष्टिथी एवमत था एवमूत स्थितियी एवमूत दृष्टि श्रमाव 🗱 दाति दाति दाति

हा॰ नो० २ १६

8 ₹₹₹ ( 34 )

समस्त बिस्व घणु करीन परक्या तथा परवृक्तिमा बहु जाय छे तमा रही स्थिरता क्याची प्राप्त पास ? बावा बमूहव मनुष्यपणामां एक समय पण परवृत्तिए वबा देवा योग्य नथीं अन वई पण तम यवा कर छ तनो चपाय कई निगाये करी गनपना योग्य छ

मानीपुरपनो निरवय बई अवर्भेद न रहे सी आरम मानि वाब मुक्तम छे, एवु मानी पाकारी गया छता बैम मुनई, बासो सुद १३, १९५१

लोको मल हो ? (35) रवा योग्य कई कहा होय वे विस्मरणयोग्य न होय एदनो चपमोग करी कमें हरीन पत्र तमा अवस्य परिणति <sup>बर्</sup>री घडे रेगाम वराग्य चपराम अन मन्ति मुसुम् नीवे

पहन स्वमावस्य करी मुख्या विना आत्महणा केम साव ? पण चिपिन्यगायी, प्रमादयी ए बान विस्मृत यह बाय छ मुनई आसी सुद १३, १९५१

( 90 )

माननु पळ विरति छे बीवरामनु जा सपन सब्
मुमुजीए निय स्वरणा रास्ता थोग्य छै ने बावपारी,
प्रमावताया तथा विचारवाणी आरणा विधायणी, विभा
बना वार्योती अने विचायका परिणायमा वदात न परो,
विभावना स्थामी न यथी विचायका वार्योनी अने विभा
बना एको स्थामी न यथी विचायका बार्योनी अने विभा
बना एको स्थामी न यथी विचायका बार्योनी अने विभा
बना एको स्थामी न यथी विचायका व्याप्ता होते स्थानवु की ला विचायका व्याप्ता स्थामी स्थामी विचायका व्याप्ता व्या

(36)

4⊅ शम

सव कीय मुलने इच्छ छ

**दु स सर्वन अधिय छ** 

इ.सची मुनत थवा सर्व जीव इच्छे छे बास्तविक तमु स्वरूप च समजावाची त द स मटत्

मास्तीवक तनु स्वरूप च समेवावाधी त दु स मटत नभी

ते दुःखना आत्मतिक समावनु नाम मोन्य कहीए छीए

#### 224

अत्यत बीतराग थया विना आत्यविक मोश होय नही सम्यग्नान विना बीतराग वई शकाय नही सम्यग्दर्शन विना ज्ञान असम्यक् बहेवाय छे बस्तुनी जे स्वभाव स्थिति छ ते स्वभाव ते बस्तुनी

रियति समजावा तेने सम्बन्तान कहीए छोए सम्यग्पानदशनथी प्रतीत वयेला आरमभावे वहव से चारित्र छे

ए त्रणेनी एकताची मोख थाय भीव स्वामाविक 🖩 परमाण स्वामाविक छे जीव अनत छे परमाण अनत छै जीव अने पुद्दमलनी सयोग जनादि छ ण्या सुकी जीवने पुर्गलसमय छे, त्या सुकी सकर्म

जीव कहेगाय भावकमना कर्ता जीव छ

भावकमन् बीज् नाम विभाव बहेवाय छे मावकर्मना हेत्थी जीव पुद्गल ग्रहे छे तेथी राजसादि शरीर अने औदारिकादि शरीरनी योग याय छे

मावकमधी विमुख थाय तो निजभावपरिणामी थाय

सम्मान्तीन विना बास्तविनयणे श्रीव भावसमधी विमुश म पर्द शर्वे

सम्प्रणान थवानो मुख्य हेनु जिनवचनयी तस्वाध प्रतीति सकी से छे हा नी ३६

( 25 )

(1)

सत्पुरपीना जनाम नभीर नयमने नमस्नार स्वितम परिणानमें जेमणे काळकूट किर पीपु एवा स्री स्वयमार्गि परमप्रपोने नमस्कार

परिणाममा तो ज अमृत ज छ पा प्रथम दशाए काळनूट विपनी पठ पूगव छ गवा थी समयने नमस्तार से ज्ञानने, त दानने अन ते चारित्रन वारदार

(9)

जेनी भन्ति निष्नाम छे एवा पुरुषोनो सरमा के ए महत् पुष्परूप जाणवा मोम्य छे

110 (1) पारमाधिक हेतुविशेवधा पत्रानि लखवानु बनी शकत् नथी जे अनित्य छ जे अमार छे अने ज असरणरूप छे ते था जीवने श्रोतिन कारण केम याय छ ते वात रात्रि दिवस लाकन्टि वन मानीनो दुज्जिने परिषम प्रव जटली

विचारवा योग्य छे विशवत छे मानीनी दृष्टि प्रथम निरालबन छ रिच चरान करती नथी, जीवनी प्रकृतिन मळता बाबती नथी, तथी जीव से दिष्टमा रुचियान बतो नथी, पण जे जीवोग परिपह बरीन बोडा काळ सुचा त दृष्टिन् आराधन क्यु छे त सर्व दु समा क्षयरूप निर्वाणने पाम्पा छ, राना चीवन प्रमान्मा अनादियी रित छ पण तमा रित 22

उपायने पास्या छ रिवा योग्प काई दखातु नथी मुनई आसी सुद ८ रिन, १९५३

315 ( Yo )

धारपदणान पामी निद्व प्रपणे यचामारका विचर हो एवा यहारमाभोनी योग वाबने दश्भ छे

तेंदो याग बन्ध जीवने ते पुरुषनी ओळगाण पहती मधी अने स्वारूप ओळलाण पष्टचा विना ते महारमा प्रत्ये दुवासय भगो नधी ण्यां सभी आजम रह न चाय स्था सभी उपनेना

परिणाम पामलो नधी चपदेना परिणम्या विजा सम्यग्ननानो श्रीम बनती

मधी सम्यग्दर्शनी प्राप्ति विना जामादि द सनी भारपदिक

रीवा महात्मा पृद्धीनी योग तो दर्जम छ तीमा महाय नधी पण आरमार्थी जीवोनो योग बनवो पण कठण छे

तिवत्ति बनवा योग्य नथी

शोपण क्वचित् क्वचित से योग वनमानमां बनवा योग्य छे

सत्समागम अने सत्वास्त्रनो परिचय बसंब्द छे 📽

मुबई नातिक बद १२ १९५४

(88) अपार महा मोहजळने जनत अतराय छता घीर रही जे पुरुष तर्या ते श्री पृष्ट्य भगवानन नमस्कार

286

अनत काळची ज ज्ञान भवहेत् चत् हत् त नामने एक समयभात्रमा जात्यातर करी जेणे भवनिवृत्तिस्य शयु हे रत्याणमृति सम्यग्दर्शनने नमस्कार निषुत्तियागमा सत्समागमनी वृक्ति राखवी योग्य छै

मुबई, अवाड सुद ११, गृर, १९५४ ( 44)

है काम ! हे मान ! हे समउदय ! हे वचनवर्गणा । हे मोह । हे मोहत्या ।

है शिविलता ! तमे द्या माटे अतराय करो छो ?

परम अनुग्रह करीने हवे अनुबुळ थाओ । अनुबुळ घाओ हा नो २१९

(88)

है सर्वोत्हरू सुलना हेनुमूत सम्यग्रानि । तने अत्यत मितियी नमस्कार हो

120 आ अनादि अनत ससारमा अनत अनत जीवी धार श्रायय विना अनत अनत दु खने वसुभव छ शारा परमानुषद्वी स्थस्यरूपमा रुचि पई परम बीतराग स्वभाव प्रस्ये परम निश्चय आख्यो कृतकृत्य

पवाना माग शहण थयो

हे जिन बीतराय । नमन अत्यत भक्तियी नमस्यार क्ष छ समें आ पामर प्राये अनत अनत वपकार क्यों छे हे बुल्कदादि बाचायों ! तमारा बचनो पण स्वस्पा नसमानन विष आ पामरने परम खपलारमत थया छे ते मादे ह तमने अतिगय भक्तिची नमस्कार कर छ है श्री सोधाग ! दारा सरसमाययना अनप्रद्रेषी आरम

दशान स्मरण थय से अर्थे तने नमस्कार हो हा नी २२० ( YY ) जैम मगवान जिने निरूपण समु 🗉 तम ज सर्व भगवान जिन उपञ्जेलो आत्मानो समाधिकास

बदायन् स्वरूप छ श्री गुहना अनुष्रह्रयी जाणी पर्य प्रयत्नथी उपासना वरो १२१ ( ४८ ) (१) सबनोपदिष्ट आरमा सदगुन्युपाए जाणीने निरतर

तना ध्यानना अर्थे विचरव् स्वयम अने तपपूरकः—
(२) अहो । मर्थोत्हर्यः गातरममय सामायः—
अहो । से सर्वोत्हर्यः गातरसमयान मानना मल

लहा 'त स् सवज्ञदेख —

भहा है ते सर्वोत्कृष्ट शास रम सुप्रतीत कराव्यो एवा

परमङ्गाळु सद्गुदश्य---आ विश्वमा सथकाळ तमे जयवत वर्ती जयदत वर्ती

हानी ३२२

-

( \* 4 )

(१) प्राणीमात्रनी रशक, बधव अने हितरारा एवी कोई उपाय हाम तो त बीतरामनो घम आ छे

(२) सतजनो । जिनवर्रेहीए लोकादि जे स्वरूप निल्पण क्यों छे ते आखनारिक भाषामा निरूपण छे, जे

ति वर्ष क्या छ ते बालकारिक भाषामा निरूपण छे, जे पूज योगास्याम बिना ज्ञानगोचर चना योग्य नचा माटे तम तमारा अपूज नानन आवारे बातरागना बाबयोनी



( ४८ ) अनन्य दारणना जापनार एवा श्री सदगुरदेवने

अत्यत भक्तिय नमस्कार

\$ 73

गुद्ध आत्मस्यरूपने पान्या छ एवा जानीपुरपोए नीचे कहा हे ते ■ पन्ने सम्यर्गनिका निवासका सर्वोत्हण्ट स्यानक कहा। छ

स्यानक कहा। छ प्रयम पद — 'कारमा छै' जेस घटपटबाटि पटार्थो छ तम झारमा

'जारमा छे' जेम घटपटजादि पदार्घो छ, तम आरमा पग छ अमूक गुण होबाने लोचे जेम घटपटजादि होबानु ममाग छे तेम स्वपरप्रवाशक एवी चतन्यस्ताना प्रस्थश गुण बेने विचे छे एवो आरमा होबानु प्रमाण छे बीज पह —

'का'मा निष्य छे ' यटराटवादि पदार्थी अमुक् शास्त्रवादी छै आत्मा निकारवर्ती छे श्रद्धपदादि समोगं करी पदार्थ छै आत्मा समाने करीने पदाय छ क्षेत्रके तेनी उत्पत्ति माटे कोई पण समोगो अनुभवमोग्य पदा नदी हो पण समोगी स्व्यापे पिनावता प्रसार यदा गोग्य नदी। माटे अन्तरक छै

कोई पण समोगो अनुभवयोग्य थता नथी। कोई पण समोगी इत्यपी चेननसत्ता प्रगट यवा योग्य नथी, माटे अनुस्तन छे अससोगी होवाणी अविनागी छे चेमके जेनी वाई ससोगमी उसीत न होय, सेनी बोईने विषे क्षय क्षय होय नही, पद बारमत संनेहरहित छे, एम प्रमपुष्य निरूपण क्यू छे ए छ पदनो विवर जीवने स्वस्वरूप समजवान अर्चे सही छे अनादि स्वप्नद्याने शीध क्रस्टन्य वर्धका एवी जीवनी

अहमाव, ममत्यभाव से निवृत्त बवाने अधे आ छ पदनी ज्ञानीपद्योग देगना प्रकाशी छ स स्वप्नल्लाची रहित मात्र पोतान स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे सी सहजमात्रमा से जागत वई मन्यकदशनन प्राप्त थाय, सम्पन्न वनामने प्राप्त थर्ड स्वस्थाधावरूप माक्षने पाम कोई विनाशी, अगद्ध अन अय एवा भावन विष तन हर्ष. शीक संयोग जत्यान न बाय से विचार स्वस्वरूपन विधे ज गृद्धपुण, सपूणपुण, अविकाणीपुण, अत्यक्त आनद्दपुण, अंतररहित तना अनुभवमा जाव छे सर्व विभाषपर्यायमा मात्र पौतान अध्यासयो अवयता गई छ तेथी नेवळ मोतानु भिन्नपण् च छ, एम स्पष्ट-प्रत्यक्त-अत्यत प्रत्यक्ष-अपरोक्ष तन जनभव याग छ विनाक्षी अधवा अ'य पदाधना संयोगन विषे तने इष्ट्यनिष्टपण प्राप्त धरा नपी जाम, जरा, मरण शोवादि बाधारहित रावणं माहा

छे जे जे पुरागेने ए छ पद सत्रपाण एवा परम पुरवना वयने आत्माना निरूचय थयो छे त सपुरुषो सव स्वरूपने पाम्मा ए, आंचि, व्यापि उपापि राव समयी रिहृत थया छे माय छे, अने भाविचाउमा पण तेम ज यरो जे सल्हरणेए जम्म जरा मरणनो नाश करवावाळो,

स्वन्यरूपमा सहज अवन्यान यवानी उपन्य कह्यो छे, हे

छर्ष्योन अस्यत अनियी नमस्यार छे तीनी निष्कारण बरणान निष्य प्रत्ये निरत्य स्तब्बामा पण आरमस्याब प्रपटे छे, एवा सब सल्पृद्धा तेना चरणार्यावद सवाय हृदयने विषे स्थापन रहो। भे छ पद्यी सिद्ध छे एव् आरमस्बरूप त जैना बननने अगीकार वर्षे सहुज्जा प्रपटे छे, भे आरमस्बरूप

रणना शाकार वच सहस्त्रमा प्रयट छ, व आसमस्त्रम प्राप्ताची से वंदाक जीव सुष्ठा आनदने प्राप्त घई नित्रय पाप छे ति स्वत्रना महेनार एवा सत्युक्तम, गुणनी स्वास्ता मस्त्राने अद्यक्ति छे केमके जेनी प्रत्युक्तर म पर्दे धन एवो परसार्थमाव त जाण कई वण इच्छ्या वत्रमा मात्र निष्कारण महणाडिखायी आप्यो, एस छ्वा पण जेने अप जीवने विषे आ भारो शिष्ण छे, अपवा सनिना बस्ती है मार पाने हे एस बना जोयू नमी, एवा जे सत्तुदेश तत जया श्रीतार परी परी मसस्वार हो। जे सत्तुप्तीर सन्युक्ता अस्ति निरुपण करों हे हैं प्रोफ्त साव पान्याना बन्याणन वर्षे बही छ जे मिनन प्राप्त पदाची नस्तुद्वा आसानी बेस्टान बिय वृत्ति गहे अपूर्व गुण दिस्तीचर व" अन्य स्वच्छन परे अने सहजे आसावीय पान एम जाणीन ज मनिन्नु निक्चण बन्नु है, हा सन्तिच जे ते सन्दुस्तीन बस्ते करी विश्वत मसस्कार हो। जो बही प्रकृत्यन करीमानमा बैज्जाननी जारीं

वई नहीं वण जेना बचनना विचारयोवे शानियण वेवळ ज्ञान हैं गम स्वरू जाया है अद्यापण वेवळ्जान वहां है विचारवागा वेवळगान यहां है ज्यावागा वेवळजान यहां है, मुख्य मदान हिंगुंदी ध्वयक्तान वर्ष है ता वेवळजान सब अध्यावाय शुननु प्रषट बरनार जेना योग सहज मात्रमा जीव पामशा योग्य चया हो सत्तुग्यना जयकारन सर्वोत्कृष्ट मनिष्ण नमस्कार हो । नमस्वार हो । [

मुंबई भागण, १९५० ———

(1) पन्यार भ ( शाईलिक्बीडित वृत्त ) रपारध प्रमत रम भरता. बोडे वर कामना. होध घमट समें समें हरवा छे अ यथा नाम ना. माम मान सरोध घम धनना, जाडे क्य कामना. एमा तत्त्व विचार सत्त्व मुखदा, प्रेरी प्रम नामना (२) ( छप्पय ) नामिनदन नाथ विश्ववदन विज्ञानी भववपनना पद, करण खडन स्थदानी प्रथ पय आधत, सत प्रेग्क मगवता.

असहित अरिहत, ततहारन जयवता, या मरणहरण ताम्णतरण, विश्वोद्धारण अध हरे, र ऋपभन्व परमनपद, रायवद वदन करे,

275

•\$\$ ( \$ )

प्रमुप्पायना ( दोहरा ) जल्रहळ ज्योति स्वस्य तु, वेवळ द्रपानियान,

प्रम पुनित तुत्र प्रेरजे भयसजन भगवान रै निय निरजन नित्य छो, गजन गज गुमान, अभिवदन अभिवदना भयभजन भगवान २ धमधरण तारणतरण धारण चरण सामान विध्नहरण पावनवरण अयसजन अगवान है मद्रभरण भीतिहरण सुधासरण सुमदान, बरेशहरण चितापूरण ययमञ्जन भगवान ४ अविनागी अरिहत तु एक अलड अमान, अजर अमर अणजाम तु, भयमजन भगवान ५ आनदी अपवर्गी तु जक् उनित अनुमान, आशिप अनुबूळ आपत्रे भयमजन भगवान ६ निराकार निर्लेप छो, निमळ नीविनियान निर्मोहर भारायणा भयभजन भगवान ७ सचराचर स्वयम् प्रमु ससद सोंपजे सान

सुष्टिनाथ सर्वेश्वरा, भयभजन भगवान ८

### सकट गोक सकळ हरण, बौतम नाम निदान, इच्छा वित्रळ अचळ करो, भयभजन मगवान ९ आधि ध्याधि चपाधिने हरो तत तौपान,

करणाळ करणा करो भयभजन भगवान १० किंदरनी ककर मनि मुल मयकर भान, गुबर से स्नेहे हरो भयमजन भगवान ११ गिक्त शिगने आपशो. मिक्त मिक्तन दान, राज जिंक जाहेर छे भयभजन भगवान १२ नीति प्रीति नम्रता, भरी भक्तिन भान.

क्षाय प्रजाने कापशो, भयभजन भगवान १३ दया गाति औदायता, धर्म मर्न मनध्यान, सप जप वणक्प दे सबसजन सगवान १४ हर आळस एदीपण्, हर अघ ने अज्ञान,

वन मन घन ने अधनु, दे सुख सूचा समान,

हर भ्रमणा भारत तणी, भ्रमभन्न भगवान १५

बा अवनीन कर भल मयमजन मगबान १६

विनय निनति रायनी, घरो कृपाधी ध्यानः

मान्य करो बहाराज ते, भयभजन भगवान १७

**217** (Y) ( बगतविल्या बृता )

सरारमा मन जर वयम मोह पाने? वरात्यमा सट पहचे गति ए ज जामे माया बहो गणी सहै दिल आप आवी ' आवाण-पूज्य चवी वध्यमुना वधावी

> (4) मुनिने प्रणाम ( ममहर छद )

बाविने सागर कर नीविने नागर नक द्याके आगर भान ध्यानके निधान हो, नुद्वबुद्धि ब्रह्मचारी मुलवानी पूर्ण प्यारी सवनके हितकारी धर्मके उद्यान हो रागद्वेषमे रहित धरम पुनित नित्य

गुनसे सचित ित्त, सञ्जन समान हो, रायचद धैयपाल, धमहाल क्रोधकाल, मृति सुम बाग सेर, प्रनाम लमान हो

( चादुलविबीहित ) माया मान मनीज मोहं ममता, मिल्यान मोडी मुनि, घोरी पम बरल ज्यान वरची, बारेल धैर्य घुनी, छ सतीप मुजील सीम्य समता ने शीयळे चहना, गीति राय दया शमायर युनि, कोटी कर वदना काळ कोईने नहि मुके ( हरिगीत ) मोवीतणी माळा मळामा मूल्यवती मल्यती, हीरातणा शुभ हारची वह मठकावि शळकती, बानूपणीयी जीपता बाय्या सरकाने जोईने, जन जागीए मन मानीए नव बाळ मुवे कोईने १ मिनम्य मुगट माथे भरीने बण कुढळ नागता, कावन कडा बरमा धरी वशीए बचाछ न रासता, पळमा पढणा पच्चीपति ए मान मुतळ खोईने, अन जाणीए मन मानीए नव काळ यन कोइने २ दश क्षागळीमा मागळिक मुद्रा जहित माणिनययी, जे परम प्रेमे वे रता पाची कळा बारीकथी.

न्तिकर विना जेवी, दिननी नेसाब दीवे. दादी विना जेवी रीत धर्वरी सहाय छे, प्रजापित विना जैवी प्रजा पुरतणा पैसी श्रुरस बिनापी जेवी कविता कहाय छे स्रुलिल विहीन जेवी सरितानी धोमा अने

भर्तार विहीन जवी सामिनी भळाय छै, धदे रायवद बीर, सद्धर्मने धार्या विना, भानवी महान सथ, ब्रुवर्थी कळाय छ ।

चतरो चोपेवी चाही चितामणि चिस गणे, पहिलो प्रमाणे छे पारसमणि प्रमधी, कविश्रो व याणवारी वस्पतव वये जैने मुपानी शागर क्ये सामु गुभ शीमपी, बारमना उडारने उमग्यी अनुसरो जी, निमळ थवाने काजे अभी शीख नैमधी.

क<sup>े</sup> रामचन्द बीर एवं धमस्य जाणी, "धमवृत्ति प्यान वरी, विटावी न वे'मधी 😮 यमें विना प्रीत नहीं धर्म विना रीत नहीं,

धम विना हित नही, क्यू जन कामनू,

समें विना टेक नहीं, सम विना सेक नहीं, यम विना ऐसर महो, धर्म धाम रामनु, यम विना च्यान नहीं, धर्म विना नान नहीं, यमें विना भान महो, और सोना नामनु ? यमें विना तान नहीं, धर्म विना सान नहीं, यमें विना सान नहीं, स्वन समामनु

वर्ष विभा ताच नहीं, बचा प्रमा ता नहीं, वर्ष विना धन नहीं, बचन प्रमामन वर्ष विना धन बाम, बान्य पूळवाणी घारों, यम विना धरणीमा, विवस्ता वराय छे, यम विना धोमतभी, वारणाओं योखी बरे,

धम विना पर्णामा, धवन्तवा बरास छ, यम विना धोमतमी, घारणाओं धोस्ते घरे, यम विना जायु धर्य, सुझ प धमाय छ, धर्म विना घराधर चुढारी, न धामपूर्म, यम विना ब्यामी ध्यान क्षेण क्षेत्रे घार छ, यारो घारा धवळ, सुयमनी सुरस्ररता,

धम विना व्यानी ध्यान क्षेत्र क्षेत्र घर छै, भारो भारा भवळ, सुधननी भूरपरता, मन्द्र। बासे वासे मर्गची गराय छै ६ (८)

सबमान्य धम ( घोपाई )

( घोपाई ) घमतत्त्व जो पूछमु मने, तो सभळावु स्नेहे तने, जे सिद्धात सक्छनो सार सवगाय सहने हितनार. १ भारय मार्यणमा भगवान. धर्मन बीजो दया समान.

सस्य चीळ ने सचळा दान ह्या हो ने रह्या प्रमाण. बचा नहीं तो ए नदि गक.

विना सर्घ निरण नहि देश ३ पुष्पपासदी ज्या दुशाय, जिनवरनी स्था नहि आज्ञाय. सव जीवन इच्छो सल महाबीरनी निमा मध्य ४ सव दर्शने ए उपन्ध. ए एकाते नहीं विशेष

सव प्रकार जिननो घोष दया दया निर्मळ अविरोध! ५

अमयवान साथे सतीप. धो प्राणीने, दळवा दोप २

₹3€ ए मनतारक सुंभर राह, धरिये वरिये करी चल्साह, धम सक्ळन् ए गुम मूठ, ए वण धर्म सदा प्रतिकृळ ६ तत्त्वरपया ए बोठसे ते जन पहोचे गारवत सुखे, शाविनाय मगवान प्रनिद्ध राजवाद्र बढणाए मिद्र ७ विस १९४० (8) भक्तिमी जपदेश (वीटक छन्) पुम शीतळतामय छाय रही, मनवाछित ज्या फळपक्ति कही, जिनमिन ग्रहो तहमन्य अही, मजीने ममनत मनत हो १

श्रति निर्जरता वणनाम ग्रही

मनताप चताप तमाम मटे,

निज आत्मस्वरूप मुना प्रगटे

मजीने भगवत भवत रही २ शासभावी संदा परिणाम वरी धक्र सद अधोगति जाग जा द्याम मगळ का परिपूण चहो, मजीने भगवत भवत सहो है शभ नाव वहें मन गुद करो मबकार महापत्ने समरो. महि एह समान समय पही, भजीने भगवत भवत रही ४ **करशो क्षम नेवळ राग कथा** धरशो धुभ सरवस्वरूप यथा. नृपच प्रपथ अनत दहा, मजीने भगवत भवत रहो ५

विसं १९४

tve

( 20 ) ब्रह्मचर्यं विषे सुभाषित (दोहरा)

नीरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान गणे माष्ठनी पुतळी, ते भगवान समान १ मा समळा ससारनी, रमणी नायकरूप, ए स्यागी त्याग्यु वनु, नेवळ शोकस्वरूप २ मुपति जीतता जीतिये दळ, पुर ने अधिकार ३ लेश मदिरापानची छाने ज्यम अज्ञान ४

एक विषयने जीतता, जीत्यो सौ ससार, विषयरूप अकुरथी दळे शान ने च्यान जे नव बाड विशुद्धधी, घरे नियळ सुलदाई, सुदर शियल सुरतर मन बाणी ने देह, जे नरनारी सेवची, अनुपम फळ के तेह ६ पात्र विना वस्तु न रहे पात्रे आरिमक ज्ञान. पात्र यवा सेवो सदा, ब्रह्मचय मतिमान ७

मव तेनो छव पछी रहे, तत्त्ववचन ए भाई ५

विस १९४०



**१**४३ ( १२ ) तृष्णानो विचित्रता ( मनहर छद )

(एक गरीननी चयती गयेकी तृष्णा) हती सेनवाई त्यारे वाकी पटेकाई अने, मळी घटेकाई व्यार वाकी छे गठाईने, सापनी गेठाई त्यार वाकी मिताई अने, आदी मंतवाई करें, सापनी मंतवाई करें, सीठी चवताई त्यार वाकी वाकराईने, साहों। राजजाइ मानो साना धानराईने, साहों। राजजाइ मानो साना धानराईने, सारे तुष्णाई वाय वाय न नराईने

कहाँ। राज्यस्य माना धारता सकरा सक्षा, सधे तुषनाई वाम आय न मर्राईने नरोपकी पड़ी सांगे डानावणो वाट बळ्या, साठी केवपटी विषे ब्वेवता छवाई गई, स्पन्न सामळ्यु, ने देखतु ॥ माठी बळ्यु, तेम वात आवरी ते, सरी के स्वार्ग सहस्य क्रिके केट सानी, हाह गया, अगरता गयो, क्रळानी आय अता स्मक्की न्याई गई,

277 शरे ! राजचह एम, युवानी हराई पण, मनयी न तीय रोड ममता मराई गई २ **क्रोडोना करजना, शिर पर डका वागे,** रोगयी स्थाई गय, शरीर सुकाईने,

पुरपति पण माथे पोडवाने धाकी रह्यो, पैट लगी बैठ पण चने न पराईने. पित अने परणी ते, मधावे अनेक धय, पत्र पत्री भासे साउ साउ द सनाईने. अरे ! राजचह लीम जीव झावा दावा करे. षत्राळ छहाय नहीं सजी सपनाईने है चई शीण नाडी अवाचक जेवी रह्यो पडी

धीवन दीपक पाम्यी केवळ झलाईनै

धेरली इस पश्ची भारी बाईए त्या एव भारूय. हवे टाडी माटी बाय तो शा ठीक भाईने हापने हलावी त्या तो सीजी बुदद सुचव्य ए भो या विना बेस बाळ तारी चतुराईने।

बरें! राजचाद देखों देखों आणापाण मेवो ? जरा गई नहीं डोवी ममता मराईने ! १

## 544 ( 53 )

असस्य तत्वविचार ( हरिगीत छद )

बहु पुण्यकेरा पुजयो शुभ देह मानवनो मळयो, होये अरे! भवजप्रनी आटो नहि एवर्ने टक्क्यो, मुख प्राप्त करता मुग ठळे छ तेश ए रूपे रही

क्षण क्षण भयवर भावमरणे का अही राची रही? १ रुप्मी अने अधिकार वचता, शब्पुते तो वहाँ ? नु कुटुब के परिवारयी, बचवापणु ए नव ग्रही,

बमबापणु ससारमु नरदेहने हारी जबी, एनो विचार नहीं अहोती । एक पळ तमने हवी ।।। २ निर्दोप सुरू निर्दोध बानद रूपी यमे स्याधी भले, ए दिस्स वाकिमान जेपी अजीरेपी नीकळे,

परवस्तुमा नीह मूसवी, धनी वया मुजने रही,

ए त्यागवा सिद्धात के परवानुदु ल ते सुन नही हु कोण छु? क्यापी थयो ? यु स्वरूप छे मार्द सह ? कोना सबवे बळगणा छे ? राखु वे ए परहरू ?

१४६ एना विचार विववपूर्वंब द्यात आव जो वर्मा, तो सर्वं व्यात्मिक आननो सिद्धाततस्य अनुभव्या

ते आच करवा बचन कोनु सत्य केवळ मातवु ? निहोंच नरनु क्यन मानो 'सह 'नेण अनुभव्य, रें ! आहम सारो।आहम सारो ! शीघ एने भोळको, सर्वोत्तमा समद्धि यो जा बचनने हृदय ल्लों ५

### (१४) जिनेश्वरमी वाणी (मनहर धव)

सनत सनत भाव भेदणी भरली मली, सनत सनत नय निरापे व्यास्थानी छे, सनळ जनत हितकारिथी हारियी मोह,

सक्ळ जगत हितकारिथी हारियी मीह, तारिणी मवाचि मोगवारिकी प्रमाणी छे, सपमा बाप्पानी जैने तथा राखबी ते ध्यय,

चपना क्राप्यानी जैने तमा राखदी ते ध्यप, क्षापवाची नित्र गति भपाई में मानी छे, कहीं! राजचंद्र, बाळ स्थाल नधी पामता ए, चिनेश्वर तथी वाणी जाणी तेचे खाली छे

विस १९४०

(84) पूर्णमालिका मगल ( उपजाति ) वपोपध्याने रविस्प ए साधीने सोम रही सुहाय, महान ते मगळ पन्ति पामे शाबे पछी त बुधना प्रणामे निमय जाता गृह सिदिदाता, मा तो स्वय गुक्र प्रपूण स्याता, त्रियोग स्या देवळ मद वामे. स्वरूप सिद्धे विचरी विरामे, (28) अनित्य भावना ( उपजाति ) विद्युत स्हमी प्रमुख पतग, आयुष्य ते वो जळना सरग, पुरवरी बाप अनग रण, धु राचाए त्या क्षणनी प्रसग

संशरण भावना ( उपग्राति ) सर्वननो घम सुराण जाणी. आराध्य आराध्य प्रमाव आणी, अनाच एकात सनाच याथे. एना विना कोई न बाह्य स्हाशे एकत्व भावना ( उपजाति ) धरीरमा म्याधि प्रत्यश चाय, ते कोई अन्ये सई ना चनाय. ए भीगवे एक स्वधारम पोते, एकन्व एथी नयसूत्र गीते

त नहरू जा तर का वरान, ए मीगवे एक स्वास्तर पीते, एकत्व एषी नयमुक्त गीते ( चाडूलविकीदित ) राणा सर्वे मळी भुषादन पत्ती ने वचवामा हती बुस्यो स्था करळाट स्वणनां स्थीते मिन भुपति, वयारे पण इस्वी स्व रहमें एकत्व सामु बन्न

एवा ए मिथिलेशन् चरित आ, सपूण अने चयु

#### 188

अन्यत्व भावना ( गादुँ लिक्कीहित )

ना मारा तन रूप कानि यवती ना पुत्र ने भारा ना, मा भारा भृत स्नेहीओ स्वजन व ना गात्र के ज्ञात ना, ना मारा धन धाम यौवन धरा, ए मोह अजात्वना,

र ! र ! जीव विचार एम ज शदा ज यत्वदा मावना ( गाउँसविकोहित ) देखी आगळी आप एक अहवी, वैराय्यवेगे गया.

छाडी राजसमाजन मरतजी चवन्यज्ञानी यया. चीय चित्र पांबत ए ज चरित पाम्य अही प्रणता. भानीना मन तेह रजन करो, वैराग्य भाष यथा

अश्चि भावना

(गीति वता) माण मुत्र ने मळनी 'रोग अरान निवासन धाम नाया एवी गणीने, मान त्यजीने कर साथक आम

#### १५० निवृत्ति बोध

(नाराच छद)

अन्त सौस्य नाम दुन स्था रही न सिनता ! सर्नत दुन नाम सौस्य प्रेम स्था विचित्रता !! स्थाड स्थाय-नेत्र में निहाळ है। निहाळ हु, निवृत्ति सोसमेड सारी से प्रवृत्ति बाळ हु

बोहरा

ज्ञान, च्यान वैशायनय उत्तन वहां विचार, ए भावे गुम भावना, हे ऊहरे यव गार

2

शानी ने अज्ञानी बन सुन दुःस रहित न कोय, शानी मेरे चैमधी अज्ञानी मेरे रोम

शाना वद घरणा अज्ञाना कट रास ३ सत्र तंत्र श्रीषण नहीं, जेमी पाप पराय

भन तत्र वाषध नहा, जया पाप पराय बीतराय बाणी बिना, अंबर न को द्वपाय

पारण तेना वे वहाा, राग इप अगहेरु वर्षनामृत वीतरागना परम शातरस मूळ, बीपन हो भवरोगना, कायरने प्रतिकृळ

(10) मध्यात्मनी जननी ते उदासीनता

"प्रमणी सहेली है अवेली जवातीनता ' ल विषये अद्भुत ययो तत्वमाननो बोघ, ए ज सूचव एम के, गति आगति का शोप ? १ जे सस्नार वर्षो घर, अति अम्यासे काय, विना परिश्रम त थयो भवणका सी त्याय ? २ वम जैम मित बल्पता बन मोह चचीत, तम सम्बन्धना, अपात्र अतर क्योन ३ करी बल्पना दूढ बर, नाना नास्ति विचार पण अस्ति से सुचव ए ज सरो निर्धाट ४

#### १५२

आ भव वण अब छे नहीं ए ज तर्व अनुकूळ, विचारता पामी गया बात्मयमनु मूर ५

विस १९४५

(20) भिन भिन मत देखीए भेद दिस्टिनो एह

एक तरवना भूळमां, व्याप्या मानो तेंह १ सेंह तत्त्वरूप वृत्रानु आत्मयम छे मूळ,

स्वभावनी सिद्धि करे धम से अ अनुकृळ २ प्रथम आत्मसिद्धि थवा करीए ज्ञान विचार. अनुभवी गुरने सेवीए बचलननो निर्पार र

क्षण क्षण जे अस्थिरता अने विभाविक मीह, ते जेनामाधी यया ते अनुभवी गृह जीय ४

बाह्य सम अभ्यतर ग्रथ ग्रांथ नहिं होय परम प्रथ सने वही. सरळ द्रांटकी जीय ५ विस १९४५

```
843
                  (25)
               ( चोपाई )
     <sup>,</sup> लोव पुरुपसस्याने कहारी
        एनी भेद तमे कई लहा। ?
       एन बारण समज्या काई
       के समजाव्यानी चतुराई ? १
       घरीर परथी ए उपनेग,
      मान दर्शने के उत्था,
     जैम जणावा मुणीए तम
     का को स्क्षीत दहिए क्षम २
  रे शु करबाबा पोन मुसी ?
    मु करवाथी पात दुःसा ?
    पोते सु ? नयाची छे थाप ?
   एनी मागी बीझ जवाप १

    ज्या नवा स्था गण सताप

  भान तहा "ाना नहिं स्याप,
  प्रमुमिकि स्या उत्तम जान,
 प्रमु मळनवा गुरु मगवान १
```

#### १५८

हे जीव ! नया इण्डन हवे ? ह इच्छा दु थएन, जब इच्छावा नाचा तब मिटे अगारि गुरु एडी क्हांचे भित गई, खाद खाद है नाहि, आपनसु जब मुक गये खबर कहोंसे लाई आप ए कोपणें, खाप जाप मिल जाप, आप मिलन नय बापको,

हानी १~१२

(२३) ४८ बीजा सायम बहु कर्यों करी क्ल्पना आप अथवा असदगढ यकी उत्स्थी क्यों स्त्राप

अयवा असद्गुर यकी अलटी बच्यो उठाप पुत पुष्पना उत्पर्यो, मळमो सद्गुर योग, मचनस्मा धनण जता, थम् इत्य गतानीम

निरचय एबी आवियो ढळको अही चताप नित्य क्यों सत्सम में, एक रूपमी साप भीरती सासो, १९४६

१५९ (88) 85 eg ( दोहरा बिना नयन पाव नहीं, बिना नयनकी बात, सेव सद्गुरके बरन सो पावे सालात् १ बूसी बहुत को जासको, ह बूसनकी रीत, पाव महि गुरुगम बिना गृही जनावि स्थित २ एही नहि है बल्पना एही नहीं विमण, कई नर प्रचमकाळमें देखी वस्तु समग् ३ नहि हे तु उपदेशकु प्रथम लेहि उपदेश, सबसे न्यारा अगम ह की ज्ञानीका देश ४ बप, वन और प्रवादि सब, वहा लगी भ्रमस्प, षदा लगी नहिं सतकी, पाई छपा अनूप ५ पायाकी ए बात है, निज छदनको छोड,

पिछे लाग सत्पुष्यके, तो सब बमन तोड ६

मुंबई, अवाह, १९४७

24. ( २५ ) ( दोहरा ) है प्रमु, ह प्रमु, शु बहु, दीनानाम दयाळ, हती दीप अनंतनं भाजन ए नरणाळ र शुद्ध भाव मुजमां मधी, नयी सर्व तुत्र रूप; नधी ल्युना के दीनता, पुण्ड परमस्वरूप? २ नयी माजा गुददेवनी अवळ वरी उरमांही. आप तणो विश्वास दुढ भ वरमान्द माही १ जोग नदी सत्मगनी नदी सरावा जोग. नेवळ अर्पणता नथी नयी आध्यय अनुयोग ४ 'हपामर शुक्री गके<sup>?</sup> एवी लयी विवेक. चरण दारण भीरज नथी नरण सूचीनी छेक ५ सचित्य तुज माहात्म्यनी नधी प्रकृत्तित भाव, भग न एके स्नहनी न मळे परम प्रमाद ६ अपळ्या जासकि नहि नही विरहनो ताप; क्या अलग तुज प्रेमनी नहिं तनी परिताप ७ मिल्लागं प्रवेश नहिं नहीं अजन दद भान,

समज नही निजधनैनी, नहि सुम देशे स्थान ८

145 काळदोप कळिथी थयो, नहि मर्यांन पम, वीय नहीं व्याहुळता, जुओ प्रमु मुन कर्म ९

धैवाने प्रतिकृळ जै, त वधन मधी त्याम, देहिंडिय माने नहीं, कर बाह्य पर राग है तुत्र वियोग स्फूरती नची, वचन नयन यम नाही, नहि उदास अनमक्तयी सम गृहादिक माही ११ महमावधी रहित नहिं स्वपमं सचय नाही, नधी निवृत्ति निमळपणे अय वमनी काई १२ एम अनत प्रकारको साधन रहित हुय, नहीं एवं सद्गुण पण मुख बताबु नुप ? १३ हैवळ वरणामूर्ति छो बीनवयु बीननाथ,

पापा परम जनाथ छ वही प्रमुजी हाथ १४ धनत काळपी आयडयो विना भान सगवान, पेव्या नहि गुढ सतने मुक्यु नहि वभिमान १५ सत चरण आश्रय विना, साधन वर्यां जनक, पारन तैयी पामियो जन्यो न अग्र निवर १६ सह सायन बयन थया रहाो न कोई उपाय, धत्सायन समज्यो नहीं, त्या बचन खु जाय ? १७

१६२ प्रमुप्रमुख्य लागी नहां, पश्चा न सद्युष पाय; दोठा नहि नित्र दोव तो, धरिय नोण उपाय ? १८

क्षप्रमाधम अधिको पवित, सक्छ जगतमा हुय,

ए निरम्बय आध्या विना भाधन करही श्रम ? १९ मही पड़ी तुज वन्पवजे परी परी मागु ए था, सद्गुद सत स्वरूप तुज, ए दृहता नरी दे ज २० राज्य मा सूद ८, १९४७ ( 74 ) 🗱 सत (बोटक छन) यम नियम श्रवम आप कियो पनि स्थाग विराग अथाय शहाो.

> धनवास लियो मुल भीन रहाो दुढ श्रासन पच लगाम दियो १ मन पीन निरोध स्ववोध कियो, हुठजोग प्रयोग सु सार भयो.

भप मेद जपे तपत्यों हि सपे. उरसेंहि उदासी लही सवप २ सब शास्त्रजने नय वारी द्विये. मत महन खड़न मेद लिये. बह साधन बार अनत कियो सदिप कछ हाय हजून पर्यो ३ शब भगी न विचारत हमनसें. कछ और रहा उन साधनसें? दिन सद्गुरु कीय न भेद लहे,

मल बागल ह वह बात कहे? ४ मचना हम पावत हे तुमकी, मह बात पही सुगुध गमकी, भलमें प्रगटे मुख आगलसें,

जब धदगृहचन सूत्रीम बर्से ५ सनसें. मनमें घनसें. सबसें.

गुददेवत्री आन स्वआत्म बर्से. वंद कारज सिद्ध बने अपनी.

रस अमत पावहि प्रेम घनो ६

बह सरव सुधा दरसावहिंगे, चत्ररायुल ह दुवमें मिल्हे रश्चव निरंजन को पिवही. गहि जोग जगोजग सोजीवही ७

275

परप्रमन्नवाह बढे प्रमसे. शत जागबभद सुबर बसें, बहु नवरको बीज म्यानि कह, निजको अनुभी बतलाई लिये ८

राळव, मा सुद ८, १९४७ ( 20) ( शहरा )

(१) जह भावे जह परिणमे चेनन चेतन भाव, नोई नोई पलटे नहीं, छोडी आप स्वमाव १ जह से जह त्रण बाळमा चेतन चेतन तम,

प्रगट अनुमवस्य छे. सगम लेमा नेम ? २

जो जह छे चल काळमा, चीतन चेतन होय,

१६५ बंध मोदा संयोगयी, ज्या लग बात्म लमान, पण महि त्याग स्वभावना आखे जिन भगवान 🔏 वर्ते बध प्रसगमा, ते निजपद अज्ञान,

पण जहता नहि आत्मने, ए सिद्धात प्रमाण

प्रहे अरूपी रूपीने, ए अचरजनी बात, **जीव ब**घन जाणे नही, देवो जिन सिदात प्रथम देहदिष्ट हती तथी मास्यो देह,

हवे दिन्द वई आत्ममा, गयो देहची नेह जड चेतन सयोग आ, खाण अनादि अनत, मोई **ल पर्ता तहनो, आखे जिन भगवत** 

मुळ प्रव्य उत्पन्न नहि. नही नादा पण रोम. मनुभवपी से सिद्ध छे. माखे जिनवर एम होय रोहनो नाश नहि, नही तेह नहि होय. एन समय ते भी समय, भेद अवस्था जीय १०

(२) परम पुरुष प्रमु सदगह, परम ज्ञान सखवाम, जेण आप्यु भान निज, तेने सदा प्रणाम १

राळब, मा सद ८. १९४७

#### 225

(हरिगीत) जिनवर नहें हो जान तेने, सब मन्यो सामळी जो होम पूर्व मणल नव पण जीवने जाण्यो मही, दो सर्व से अज्ञान भारूपु, सानी छे आगम अही

ए पुष सब कक्षां विगेषे, जीव करवा निमळी जिनवर कहे छे नाम तेन. सर्व भव्यो सामळो १

नहि प्रथमाही ज्ञान भारत् ज्ञान नहि नविचातुरी, नहि मंत्र तथी जान बास्या, बान नहि भाषा ठरी,

(36)

महि अन्य स्थाने नान भारत् ज्ञान ज्ञानीमां कळो जिनवर वह छ जान तेने, सब मन्यो सामळी २ आ जीव ने आ देह एवी भेद जी भास्यी नहीं, पचसाण नीवा त्यां सुवी, मीनावं से भारमां नही. ए पाचमे अमे कहाी, उपनेश केवळ निमळी. जितवर महे छ जान सेने सब अध्यो साभळा १

# १६७ शास्त्रो विशेष सहित पण जो, जाणियु निज रूपने, का सेटवी आध्य करजो. भावथी साचा मने.

तो जान तेने भाषिषु जो सम्मति बादि स्वक्रों, जिनसद कहें छे नान तेने, सब भयो सानको ५ बाह समिति जानीए जा, जानीना परमायमें, तो नान भाष्यु तेलने अनुनाद ते मोदायमें, निज कन्यनामी कोटि सास्कों, यात्र मननो खामकों.

जिनवर बहे छे ज्ञान सने खब अब्यो सामळो ६ चार वेद पुराण आदि शास्त्र सौ मिच्यास्वता, श्रीनदीयून भाषिया छे, नेय ज्या पिद्यास्ता, पण भागिने से ज्ञान आस्या, ए ज उन्हाणे ठरी, जिनदर बहे छे ज्ञान सने सब अब्या सामळो ७ प्रव नहीं पचसाण नीह, नहि स्याग बस्सु सोईनो, महास्पर्ध सीयकर चन्ने श्रीणिन ठाणप चाई हो, छेदो क्षनता

116 ( २९ ) धपूर्व अवसर एको न्यारे आवने ? चवार गईण बाह्यांतर निग्रम जो ? सर्वं सवयन् वयन सीवण छेदीने विचरण वन महत्पुरपने पय ओ ? अपू २ रागं भावयी औदासीन्य वृक्ति करी मात्र देह से स्यमहेत् होय जो, अस पारणे अस पा कर्प नहीं, देहे पण विचित् मूर्टानव औय जो अपूर्वन दर्भागमोह व्यतीत वर्द कपण्यो बीय जे, देह भिन्न बेवल चत यन जान जो,

प्रांतमोह व्यक्तीत वर्ष क्रमच्यो बोच थे, देह जिल्ल बेबल बत यनु ज्ञान को, तेची प्रदीण बारिक्सोह विकोक्ति, बत्ते एवं चुद्धस्वरूपनु ध्यान वा अपूब० क्षातमंदिबरता त्रण शिल्य बोपनी मध्यपणे ग्री बत्ते देवप्यत जो.

धोर परीयह के उपसर्ग भन्ने करी, आधी शके नहीं ते स्थिरतानो अत जो अपर्यं०

ह्मा शेन ने कार, माच माध्यक करा, अपूर्व किया हुए व्यवस्थित वाच बीतकोम जो अपूर्व किया हुए व्यवस्थित वाच बीतकोम जो अपूर्व किया मान प्रति की वाच की किया साम प्रति की साम प्रति की साम साम प्रति की साम की अपूर्व किया की कोम मान जो अपूर्व किया की की मान की अपूर्व किया की की मान की की मान की की मान की की मान की की की साम की साम

क्रोप नहीं छो प्रवळ सिदिनिदान जो अपूर्व १ मनवाव, मृहमाव सह अस्तानता, अदस्योगन आदि परम प्रसिद्ध को, १७० वेना रोम, नख वे अग ग्रुगार मही, ' इब्यमाव स्थममय निषय सिद्ध जो अपूर्व १० दान मित्र प्रत्ये बर्वे सम्बर्गाता

मान अमाने वर्षे से ल स्वभाव की कीविन के भरण नहीं मुनाधिकता, मब मारे पण गुड़ वर्षे सम्भाव को अपूर्व । ११ एकाकी विकटतो वर्डो स्माननम, बजी पवहमा वाप शिह समीप को,

क्षत्रीक आसल ने नमम गही दोगवा परम मिननो जाण पाम्या योग को अपूर १२ पोरसपरचर्यामा एक मनने ताप नहा सरस अले गहा मनने प्रसन्धाब को, एजरण के रिद्धि बैमानिन वर्यनी.

रंभरण काराज वमानन दवना, सर्वे भागा पुद्गक एक स्वभाव को अपूर्व। १३ एम पराजय नरीन चारितमाहनो जाव ह्या प्रया करण अपर्वे आव प्रो

आतु त्या ध्या करण अपूर्व भाव जो श्रेणी क्षपत्रतणी करीने आस्ट्रता अन प चितन अतिशय शुद्धस्वभाव जो अपूर्वः

# १४ मोह स्वयमूरमण समुद्र वरी करी, स्थिति स्याज्या क्षीणमीह गुणस्थान जी, बत रामय स्या पूणस्बरूप नीतरान थई,

\$0\$

प्रगटाबु निज वेचलजान निपान को अपूर॰

पि चार वन पनपाती से व्यवच्छेद ज्या,
भवना बीजरानी लास्यतिक नावा जी,
सब भाव भावा बार्ट्स सह गुढता,
हण्हास प्रभु वीम जनत प्रवास को अपूर्य॰

के विकास करते करते हुए होते हुए स्वर्

१६ वेदनीयादि चार कमें वर्ते जहा, बळी सीदरीवत् आकृति मात्र ची, सै देहायुप आधीन जेनी स्विति छे आयुप पूर्वे, महिले दीहक पात्र जो अपूप क्यां क्य

आपुर पूर्ण, मध्ये वैहिक वाज जो अपूर्य । १७ मन बचन नामा ने कर्मनी चरणा, इटे जहा सबक पुरागन सबच जो, एयु अयोभी गुणस्थान रहा बर्ससु महामास्य सुक्तायन पूर्ण असस की अपूर्य ।

एवं अयोगी गुणस्थानक त्या वर्ततु
महाभाग्य सुखदायक पूर्ण अवव को अपूर्व
१८ एक परमाणुमात्रनी मळे न स्पन्तता,
पूर्ण करक रहित अडील स्वरूप को,

103 गुद्ध निरंजन चत यमूर्ति अनन्यमय,

अगुरुलप् अगुरा सहजयनस्य को अपूर्वन १९ प्रवप्रयोगादि कारणना योगपी

कथ्यगमन गिडाल्य प्राप्त सुरिचत जो, सादि बनत बनत समाधिमूलमा मनत दर्गन नान अनद सहित को अपूर २० जे पद श्री सर्वन दीठु ज्ञानमां,

रही ''स्या नहीं पण ते थी मनदान भी रीत स्वमपने अप्य वाणी 🖩 गु कह ?

गजा बगर ने हाल मनोरवरूप जो. रोपण नित्वय राजवद मनन रहाो. प्रभुआनाए बाश स ज स्वरूप जो अपर्वं

अनुभवगोचर बाच रहा से ज्ञान जो अपूर० २१ एह परमधद प्राप्तिन क्यु ध्यान में

ववाणिया. १९५३

( 30 ) मुळ मारण साभजो जिननो र. बरी वृत्ति अलह सम्मा, मळ०

103

नो य पुत्रादिनी जी कामना रे, नो'य व्हाल् असर मवदु स मूळ० १ करी जोजो बचननी सुलना रे जोजो बोधीने जिनसिद्धात मुळ०

मात्र क्हेन परमारथहेतूची रे, बोई पामे ममुक्ष बात मुळ० २ शान, दर्घन, चारित्रनी शदता रे

एनपणे अने अविषय, मुळ० एम बह्य सिद्धारी बुध मुळ० ३ लिंग अने यदो जे प्रतना रे.

जिनमारग ते परमाधधी रै, इ.य देश नाळादि मेद, मळ०

पण पानादिनी जे शद्धता रे. ते तो अणे काळे अमेद मुळ०

10% हवे ज्ञान दशनादि शल्नो रे, सदीप सणी परमाथ, मूळ० तेने जोता विचारी विशेषयी रे. समजादी उत्तम जारमाय मुळ० ५ छे देहारियी भिन्न जातमा र, जपयोगी सदा अविनास, मूळ

एम जाणे सद्गुर उपदेशयी र, कहा नान ता नाम सास मूळ० ६ जी नाने करीने जाणिय रे, तनी वर्ते छे बुद्ध प्रतीत मूळ• कहा, भगवंते दशन सहने रे,

जेनु बीजु माम समकित मूळ० ७ जेम आवी प्रतीति जीवनी रे जाच्यो सर्वेथी भिन्न असरा, मूळ०

तैवी स्थिर स्वमाव वे कपने रे. नाम चारित्र से अवस्थि मूळ० ८ ते त्रणे अभेद परिणामधी र.

ज्यारे वर्ते से बारमारप, मूळ०

तेह मारग जिननो पामियो रे. रिवा पाम्यो से निजस्वरूप मळ० ९ एवा मुळ ज्ञानाति पाधवा रे, अन जा अनादि वध, मुळ० उपदेग मदग्रहना पाभवा रे. टाळी स्वच्छद ने प्रतिवध मूळ० १० एम दव जिनंदे भाखियु रे, भोत्रमारगत् गुद्ध स्वरूप मूळ० भव्य जनोना हिनने कारणे रै. सक्षेप वहा स्वरूप मूळ० ११

१७५

आणव, जासो सुद १, १९५२ (38)

(पीति)

पथ परमपद बोध्यो जेह प्रमाणे परम बीतरागे.

ते अनुसरी बहीप प्रणमीने ते प्रमु मक्ति रागे १

मळ परभपद कारण, सम्यक दशन ज्ञान घरण पूर्ण, प्रणम एक स्वभावे, धद्ध समाधि त्यां परिपूर्ण २ जे चेतन जह भावो अवलोचया छे मनींद्र सर्वेने. तेवी अतर आस्या, प्रगठने दणन कहा, छे तत्त्वज्ञे १ सम्यक प्रमाण पृथक, ते ते भावो ज्ञान विषे भारे. सम्बग्हान बडा ते सगय विभ्रम मोहस्वां नास्ये ४ विषयास्य निवृत्ति, राग-देपनी सभाव ज्यां वाय. सहित सम्यक्दशन, शुद्धचरण त्या समाधि सद्भाय १

त्रणे अभिन स्वभावे, परिणमी वात्यस्वरूप क्यां वाय.

₹05

एए ई पूर्ण परमयद प्राप्ति. निश्चयधी त्या अनाय सुम्बदाय ६ जीव, अजीव पटार्थी, पण्य, पाप, आसव तथा वध. सबर, निजरा, मोक्ष, तस्य यह्या नव पदाय सबय ७ जीव, अजीव विवे से. नवे तस्वनी समावेश थाय.

बस्तु विचार विरोधे भिन्न प्रवा या महान मृतिराय ८

ववाणिया, कार्तिक, १९५३ (35) मय र दिवस आ अही,

जागी रे काति अपन रे. दश वर्षे र भारा उनसी, मट्यो चदयकमनी गथ रे. धय० १ शोगणीसर्वे ने एकत्रीसे.

सायो अपूर्व अनुसार रे.

औगणीसर्वे मे बेतारीसे अद्भुत बराग्य घार र **धन्य**० र खोगणीयसँ ने सहवालीसे समवित शुद्ध प्रकाश्य रे, सूत अनुसंब बचती दशा, निज स्वरूप अवशास्य र धन्य० ६ स्या काव्यो र अवय कारमी. परिप्रह काय प्रपच र, जेम जेम ते हबसलीए, त्रेम वधे न घटे एक रच रे. बन्य॰ ४ बधतु एम ज चालिय हवे दीसे सीण नाई रे

203

कमे करीन रे ते जने, परो अवस्य आ देहची,

एम भासे मनमाही र घय०५ गयाहेतु जे चित्तनी, सत्य धमनो उद्धार रे.

एम बयो निरवार रे घन्य०६

१७९ भावी अपूर्व वृत्ति वही, यरो अप्रमत्त योग रे, ल्यमग मूमिया, देह वियोग रे घय॰ ७ कर्मनी भीग छै, भोगवयो अवशेष तेगी हेह एवं ज बारीने, जागु स्वरूप स्वदेश है वय० ८ हा नो १-१२ ( 12) जह ने मतन्य व ने द्रव्यनी स्वभाव भिन्न, सुप्रवीवपणे बन्ने जैने समजाय छै। स्वरूप मेतन निज खड छे सबध मान, अचना ते क्षेम पण परहम्ममाय छे, एवो अनुमवनी प्रवास उल्लासित धरो, जहमी उदासी तेने जात्मवृति थाय छे, कायानी विसारी माया, स्वरूपे

निर्प्रत्यनो वय भवव

160 देह जीव एकच्ये सासे छे बजान वडे, क्रियानी प्रवृत्ति पण तथी तेम थाय छे जीवनी जन्पति जने रोग, शोब, दू स, मत्य,

देहनो स्वसाव जीव पदमा खणाय छै. एवी जे जनादि एशकपनी मिच्यास्वमात्र, शानीना वचन वडे दूर यई जाय छे.

भासे जह चताबनी प्रगट स्वमाव भिना ब में इब्य निज निज रूपे स्थित बाय हो

मु॰ का॰ वद ११ मगळ, १९५६ (38)

सदग्रहना चपदेशयी, शमने जिनन् रूप हो है पाने निजदगा जिन छे आत्मस्यस्य

पाम्या शद्ध स्वभावने, छे जिन तेथी पुज्य. समजो जिनस्थमाय ता, आरभमाननो गुज्य

स्वरूपन्चित इच्छारहित विचर पुरुप्रोग,

अपूर्व बाणी परमञ्जत, सदमुर छक्षण गोव्य ३ नडियाद, आसी बद २. १९५२ १८१ ( ३५ ) ॐ

भी जिन परमात्मने नम

() इच्छे छे के जोगी जन, अनत मुखस्यरप, मूळ गुढ़ ते आ नपद, सवागी जिनस्वरूप आस्त्रस्वमान अगम्य ते अवल्डन आधार, जिनपदमी बर्गावियो तह स्वरूप प्रकार

जिनपदमी दर्गावियो सह स्वरूप प्रवार जिनपद निजयद एक्टा, भेदमाव निह काई, स्टा ध्याने सेहनो कहा गास्त्र सुलदाई जिन प्रवचन दुगम्यदा याके अति मितान,

कर्त वयान राहुन। प्राप्त अवि मरिमान, जन प्रवचन दुगम्यता याके अति मरिमान, जवन्वन सी मदगुरु सुराम अने सुख्याण चपातना जिनवरणनी अनिगय मर्गिसदिन, मुनिजन समति रति अनि समग योग घटित

विपाला जिन्हरूपात विश्व विषय योग परित प्रमुतिकत समिति रित क्षित स्त यह स्त वर्षा साम, म्यानिक सी सद्युष्ट बहु, जिन दशन अनुसीम ' प्रमुप्त साम, म्यानिक सी सद्युष्ट बहु, जिन दशन अनुसीम ' प्रमुप्त साम, स्तुष्त साम, स्तुष्त सी सद्युष्ट स्तुष्त, उक्टी आर्ष एम, सुर्व भोरतो स्रियनु, उद्यहिण यह

### परिणामनी विषयता सेने योग अयोग ८ मद विषय में सरळ्या सह आजा सुविचार, कृषणा कोमळळादि गुण, प्रथम सुमिका पार ९

रोचया शम्मान्स विषय सवय सावन राग, जगत चट महि बालमधी मध्य पात महामान्य १० महि सण्या जीव्यात्वी मरण योग नहि सोम, महाचात्र से मार्गना परम योग जितकोत्त ११ (२) बाध्ये बहु समहेचार्ग, छाया जाग समाई

१८२ विषय विकार सहित जे, रह्या मतिना योग,

आध्ये तेम स्वभावमा मन स्वरूप पण आई कराने मोह विकारपयी, शमस्त आ सतार, अतुमुख अवशेषता, विकय यता नहि बार सुस्त्राम अनंत सुरत यही, दिन राज रहे सहस्त्राम मही

परशान्ति अनत सुपामय जे प्रणमु पण हो घर ते भय ते १ राजकोट, चेत्र सद ९ १९५७

\$23 ( ३६ ) 30 आत्मसिद्धि जैस्बब्द समज्या विना पाम्यो दुख अनत,

समजान्यु ते पद नमु, स्रो सद्गुरु भगवत 🤻 वर्तमान था काळमा मोक्षमार्ग वह छोप, विचारवा आत्मार्थीने, भारूपो अत्र अगोप्य २

कोई क्रियाजड वई रह्या नुस्त्रनातमा कोई माने मारण मोलनो करणा ऊपजे जोई है बाह्य क्रियामा रायता, अतर्भेद न वाई. ज्ञानमाग निवेधता, तेह क्रियाजड आई ४

बच मोक्ष छे क्ल्पना. यासे वाणीमाही. बर्ते मोहावेशमा, सुष्कज्ञानी ते आही वैरान्यादि सफळ दो, जो सह आतमज्ञान, रीम अ आतमज्ञाननी, प्राप्तितणा निदान

स्याग विदाग न चित्तमा, याम न तेने शान. बटके स्थात विरागमा, तो मुळे निजमान

शारमणान समर्याणा विचर उदयमयोग समूर्य साधी परायत् सं उद्युव रूपणा योग्य १० प्रायस संद्युव साधी परायत् संद्युव स्थापी विचर उदया रूपणा योग्य साधी रूपणा योग्य योग्य

266

सेवे मद्गुरुवरणने, त्यामी दई निजपन, पामे हे परमाधन निजयदनो है हुटा

त ते निरयं विचारना करी मतांतर त्याज १४ रीकें जोड़ स्वच्छद हो, पाम अवन्य मोन पाम्या एम अनत छे, जाक्यु निन निर्दोध १५ प्रस्था सर्वपुद योगयी, स्वच्छन त रोकाम, अन्य स्वास कर्मा कृति, प्राये वसकी बास १६

अपना सत्गदए नहार जे अवग्रहन भाज

# 225 स्वच्छद मत आग्रह तजी वर्षे सद्गुरल्झ,

समिनित सेने भाखियु, कारण गणी प्रत्यक्ष १७ मानादिक दाजु महा निजल्दे न मराय जाता सद्युर गरजमा, अन्य प्रयासे जाय १८ जै सदगढ अपनेशधी पास्यो केवळजान, गुर रह्या छन्तस्य पण विनय करे भगवान १९ एवी माग विनय तणी आख्यो थी बीतराग मुळ हेलू ए बार्गनी समजे कोई सुभाग्य २० असदगर ए विनयनो लाभ लहेजो काई. महामोहनीय कर्मथी बुढे भवजळ माही २१

होथ मुमुल जीव ते समजे एह विचार, होय मतार्थी जीव ते. अवळो ले निर्धार २२ हीय मतार्थी वहने, थाय न आतमलग सेंद्र मतार्थी ल्झणो, अही कह्या निपक्ष २३ भतार्थी-लक्षण

जे जिनदेह प्रमाण ने, समवसरणादि सिद्धि, वणन समन्ने जिननु रोनी रहे निज बुद्धि २५ प्रत्याप सद्गुबयोगमा, वर्ते दृष्टि विमुख, असदगुरुने दढ कर, निज मानायें मुस्य २६ देवारि गति भगमा जे समजे शुतकान, माने निज यत वेवनी आग्रह मुलिनिदान २७ लहा, स्वरूप न पृत्तिनु, सहा, वट विभागन, ग्रहे नही परमाधने, लेवा लौकिक मान २८ अथवा निण्यय नय यहे भात्र शान्दनी भाष

**छोपे** सदव्यवहारने सामन रहित थाय २९ शानदशा थामे नहीं साधनदगा न नाई, पामे तेनी सन जे त बढ भवमाही ६०

पामे नहि परमार्थने अनु अधिकारीमा ज ३१

ए पण जीव मतायभां, निजमानादि काज महि षपाय उपभातता, नहि अंतर वैराग्य.

सरळपण न मध्यस्थता, ए भतावीं द्रभाष्य इर

रुक्षण कह्या मतार्थीना, भतार्थं जावा काज, हवे वहं धात्माधींना, बात्म-वय स्वयाज ३३ आत्मपान स्या मुनिपणु ते साधा गुरु होय, बाकी कुळपुरु बल्पमा, आत्माणी नहि जीय ३४ प्रत्यम सद्गुर प्राप्तिना, गण परम उपनार, त्रणे योग एकरवयी, वर्वे आनाधार ३५ एक होय त्रण काळमा परमारचनो पथ प्रेरे ते परमायने, ते व्यवहार समत ३६ एम विचारी जतर, शीधे सदबुर योग, काम एक आत्मार्थन, बीजी नहिं सनरीम ३७ भ्यायनी उपगातवा मात्र मोग अभिकाप भवे खेद, प्राणीदया त्या आत्माथ निवास ३८ इसान तबी ज्या सुधी जीव छहे नहि जीय मोलमार्ग पामें नहीं, मटे न अंतर रोग १९

स्रावे क्या एवी दथा, नद्गुरुवीय सुहाय, ते बोपे सुविचारणा, स्थां प्रगटे सुस्यदाय ४० ज्यां प्रगटे सुविचारणा, स्थां प्रगटे नित्र प्रान, ये गाने क्षय ं '' गूंग ४१ करने ते मुक्तिवारणा, मोदामार्गं समजाय, गुर्वाणच्य मवादयी आंखु धटपद बाही ४२

#### चटपदनामकयन

ज्ञासा छै' के मिरव छ 'छे क्यों निजकर्त , 'छे मोना बळो सोप छे सोग वयाय सुमर्ग '४३ वटस्थानक संदोषमा पदसर्गन एण तह, समजावा परमायन, नहार कानीए एह ४४

## (१) हाका-हिस्स उदाव नपी पटिमा भारती नपी प्रणात रूप

बीजी पण अनुभव गही तेथी न शिवस्वरूप ४५ अथवा देह ज जातवा, अथवा ददिय प्राण, निस्त्रा जुदी शानवी, नहीं जुदु जैयाण ४६ बटी शो आस्पा होग दो, जणाय ते नहि बेच ? जणाय जो स होय दो, पट पट आदि कर ४७ माटे छे नहि आत्मा निस्त्रा मील च्याप, प अदर खार राज्यों, सम्बाधी स्टूप्पप ४८ पर अदर खार स्वा

मास्यो देहाप्यासयी, बात्सा दह समान, पण त बने भिन छे प्रगट रूपणे बान ४९ बास्यो देहाप्यासयी, बात्सा देह समान,

पण ते बनी भिन छ, जैस असि ने स्थान ५० जे प्रदा छे दृष्टिनी, जे जाणे छे रूप, अबाध्य अनुभव जे रहें, ते छे जीवस्वस्थ ५१

क्षताम्य कपून्य पर्य, प्रत्यक्षित्र, प्राच्य, प्राच, प्राच्य, प्

आहमानी सत्ता वक, पढ़ गारी सदा जणाम, प्रतं अवस्थाने विषे वारो सदा जणाम, प्रगटक्य चटन्यमम ए जैपाण चदाय ५४ प्रत, पट आदि जाण पु, तेथी तेने मान, जाणामार ते मान महि, महीप् बेचु मान? ५५

जारानार ते कार्य पात्र । परम कृष्टि कृष्य देहमा, स्यूळ देह अधि यत्य, देह होय जो आसमा, घट म धकानो करनार है, अधरण पह अमाप ५८ (२) शक्त-शिष्य खवाच आरमाना व्यक्तित्वना, आपे कहा प्रकार, समय तानी पात्र है, बदर कवें विचार ५९

की पान बाय रवा, जारना नहि अविनास, देहसोरायी करजे, देहस्योपी नास ६० अपवा वस्तु सणिक छे सच्य सची पळटाय ए अनुसबसी पण नहीं, जारसा निस्य बणाय ६१

ए अनुभवधी १ण नहीं, आरमा नित्य वणाय (२) समाधान-सन्धुद उवाच दह मात्र समोग छे, बळी बढ रूपी दृष्य

वह मात्र समाग छ, वळा थड रूपा दूप चेदनना सत्पत्ति छय, कोना अनुभव बश्य ? ६२ जेना अनुभव बश्य ए, सत्यन्त रूपन् नान, तै तेथी जुदा विना, धाय न केमे भान ६३ १९१'
भे स्योगो हेस्सि, छ से अनुसब दस्य,
' अपने शहि स्थोपती, आत्मा नित्य प्रत्यन ६४
सारी पेसन अपने चेस्तापी वह साय.

प्तो कपूराव कोईने, कवार कदी व वास ६५ कोई क्योगोधी मही, जेनी क्लांति वास, गाप न तेनी कोईमा, तेथी तिल्य खण्टा ६६ शोनादि कत्तान्यता, क्योदिक्ती शास, पूर्वतम सलाप के जीवनित्स्यता स्थास ६७ बाला स्क्री नित्रव के, वर्षीय प्रकटास, बाह्यदि वस मुख्यमु, बाल एकने पास ६८

बळारि वय प्रध्यम्, ज्ञान एकने याप ६८ स्थवा काम क्षणिकन्, जे वाणी वदनार, बदनारों त क्षणिक महि, वर अनुभव विशोर. ६९ बतार बाई बस्तुना, वेबळ क्षेप म नारा, बतन बाम नारा ती, केमा मळे स्थास ७००

(३) वाका-शिष्य जवाच वर्षा जीव न कमनो, कम च वर्षा इसं, बंबना बहुन स्वमान का, वम जीवनी पर्म ७१ माटे मोभ उपायनो, कोई न हेतु जलाय, कर्मदेशु कर्तापणु का नहि का नहि जाय ७३ (१) समाधान—सद्गुद उवाच

होम न चेतन प्रेरणा, कोण घटे वो कर्म ? शहरवभाव पहि प्ररणा, जुलो विचारी बम ७४ को चेतन करमु नधी नधी चता वो कम, देवी सहज स्वमाव गहि, सेम च नहिं जीवबम ७५

कैनक्र होत अध्य जो, प्रास्तत तने म केम ? अमग छे परमाध्यी, पण निज भान तेम, ७६ क्सो ईत्वर कोई नहि, ई-वर तुद्ध स्वभाव, अपना प्रेरक स गच्ये, ईस्वर दोयप्रभाव ७७

चेतन को निज मानमा, क्ती आप स्वजाब, बर्ते निह्न निज भानमां, कत्ती कम प्रभाव ७८ 13 **१९३** (४) হাকা—হিচেম ওবার

(ह) साराय-साव्य उपाध जीव कर्म कर्ता महा, पण माका नहि सीय, शुप्तमजे जह कम के पळ परिवामी होय? ७९

फळन्ता ईश्वर गण्ये भाक्तपणु सथाय, एम कही ईश्वरतणु ईश्वरपणु ज जाय ८० ईश्वर सिद्ध थया विना जगत नियम महि होय, पछी गुमागुभ कमना, भोग्यस्थान महि कोय ८१

(४) समाधान-सद्गुर उवाच मावनमें निज क पना भाटे चेतनस्प,

मावस्य त्वज बन्या झाट चवनस्य, जीवबीयनी स्कृत्णा, ग्रहण वरे जहस्य ८२ हीर सुषा समज नहीं और साय चळ चाय, एम नुमानून बन्यनू भोनायणू जणाय ८३ एन राम ने एन नृष, ए जादि जे भेद,

प्त राग न एम नृष्, ए जाव ज मय, बारण विना न काय त ल ब्रामानुस वैद्य ८४ फळगता ईंचरवणी, एमा नधी जहर; कर्म स्वमावे परिणमे, थाय ओगश्री दूर, ८५

24X से से भीग्य विरोधना, स्थानव द्रव्य स्वभाव, गहन बात छे निष्य वा वही सक्षेपे साव ८६ (५) शका-शिष्प उवाच

कर्ता भोका जीव हो पण वेनो नहिं मौण, बीरयो काळ अमत पण वतमान छ दोष ८७ शम करे पळ भागवे, देवादि गतिमाय, अनुभ कर नरकादि पळ कम रहित न क्याय ८८

(५) समाधान-सदग्र उवाच जेम गुभागुभ कर्मपद जाच्या सफ्क प्रमाण तम निवृत्ति सफ्टका, माटे मोधा सुचाण ८९

बीत्यो बाळ जनत स, कम गुभागूम माव, **वह शुभागुम छ**न्ता उत्पन्ने मोक्ष स्वभाव ९० देहादिक स्याननी आत्यतिक वियोग,

सिद्ध मो । द्यान्यत पने, निज जनत सूखभोग ९१ (६) शका--शिष्य उवाच

होय क्दापि मोक्षपन, नहि अविरोध छपाय. वर्मी बाळ अनतना, शाधी छैदा जाय? ९२

294 अथवा मत दशन घणा कहे उपाय अनेक, तेमा मत साची क्यो, बनेन एह विवेक ९३ वई जातिमां मील छे वया वयमा मील, एनो निन्चय ना बने घणा भेद ए दौष ९४ तेषी एम जजाय छे मळे । मोण उपाय, जीवादि जाण्या तणो गो उपकार ज थाय ? ९५ पाचे उत्तरधी ययु समासन सर्वांग, समजु मोग्न खपाय ता, चदय उदय सद्भाग्य ९६ (६) समाधान-सदगुरु उवाच

पाचे वत्तरनी बई आत्मा विध प्रतीत, षासे मोन्पोपायनी सहज प्रवात हर रीत ९७ क्ममाब वनान छे मानमाव निजवास अवकार अज्ञान सम, नाने नानप्रकाश ९८ ष जे भारण वधना तह वधनो पस ते नारण छेन्क दणा मोलपच मनप्रत ९९ राग, द्वेष अज्ञान ए मुख्य कमनी ग्रम, थाय निवृत्ति जेहुथी, ते ज मोक्षानी पय १००

जेथी मेदल पामिये. भी गण्य त रीत १०१

तैमा मृत्ये मोहनीय, हणाय ते कह पाठ १००

कर्म मोन्नीय भेद से दशन चारित्र नाम हुने बोध बीतरागता अनुर उपाय आम १०३ क्मवय क्रोधान्यी हुणे क्षमादित सेह प्रायम अनुभव सर्वन, एमा भी संदेह ? १ ४ श्रीकी मत दगन तणी आवष्ट तम विकल्प कह्यो माग का सामी जन तहना करूप १०५ पट्पत्ना पटप्रका वें पूछवा करी विवार से पत्नी सर्वांगता मोतमाय निर्धार १०६ जानि वपनो भद नहि कह्यो साम जा होय

साथे ते मुक्ति लहे एमा भद न कोय १०७ कपायनी उपनातता, मात्र मोक्ष अभिलाय, भव सद अतर दया, त वहीए जिज्ञास १०८ त जिज्ञार्य जीवने, थाय सद्गुरुवाघ सो पामे समक्तिन, वर्ते अतर्शोष १०९ तन्य पास चारितनो, योनरागपन बास ११२ वेनळ निजस्वभावनु अराड वर्ते गान, नहीए वंबळनान त, देह छता निर्वाण ११३ वोटि वपना हमान, समा विभाव अनाविता, गान बता सुर यास ११४ पूटे देहाध्यान तो, निह वर्षों तु वन, नहीं भीला पू तहनी, ए अ वसनी मा ११५ नहीं भीला पू तहनी, ए अ वसनी मा ११५

ए ज धर्मधी मोन छ, तु छा मोन स्वरूप, धनत दान जान तु, अयावाध स्वरूप ११६ पुद्ध धुद्ध धत्यपन स्वरूधति सुव्याम, बीजु करिए देर्ट विचार हो पान ११७ निस्तय सर्वे आनानो आधा अत्र समाय, धरी मोनना एम कही, सहस्रसाधि माय ११८

बर्ते निजस्वधावना, अनसव र र प्रतीत, बृत्ति बहे निजभावमा, परमार्थे समन्ति १९१ वर्षमान समन्ति चई, टाळ मिथ्यामास,

136 शिष्य-शोधबीअप्राप्तिकथन सद्युद्धाः उपदेशयी बाब्यु अपूर्वे भान निजयर निजमांडी लहा दर थय अनान ११९

भारय निजस्बस्प से गुद्ध चतनारूप सप्तर समर अविनाशी ने चहातीत स्वरूप १२० बर्ला भोका बमनो, विभाव वर्ते ज्याय वृत्ति वही निजभावमा, बयो अक्सी स्याय १२१ अथवा निजपरिणाम जे, शुद्ध चेननारूप वर्ता भीका तहनी निविश्लप स्वरूप १२२ मोल कहा निजादता वे पाये ते पय

समजान्यो सीपमा सङ्ख्य नाग निग्राच १२३ अही । अही । श्री सदगुरु नरणासि । अपार मा पामर पर प्रभुवयों, बहो। बढ़ी। उपकार १२४ म् प्रमुचरण वने घर आत्माथी सी हीन

से तो प्रमुए जापियो वतु चरणाधीन १२५ था रहा? आजथी वर्तो प्रभ आधीन दास, दास ह दास छ, तेह प्रमुनो, दीन १२६

षट स्थानक समजानीने भिन बताव्यो आप, म्यान षको तरवारवन, ए उपरार बसाप १२७

### जपसहार वर्धन यटे समाय छे. बा वट स्थानक माही.

विचारता जिन्तारथी सदाय रहेन वगई १२८ आत्मानाति सम रोग नहि सदगुर वश्व मुजाण, गुरुत्राता सम नध्य नहि जोचन विचार स्थान १२९ जो इच्छो परमाय तो वरो नय पुरताय भविषार कार्य नात है ।

भवस्थित जादिनाम नई, छन्दे नहि आस्माप १३० निरुपयवाणी सामळी सामन यजवा तरे य, निरुपय राखी छदामा माधन करवा तरे य १३१ नय निरुपय एकाराधी आमा नधी कहेल,

मप निश्वय ध्यातथा आमा नथी यहेल, एकात भ्यवहार नहिं बने नाथ रहन १३२ पम्छमतनी जे यहमना त नहि सद्पवहार, भान मही निजय्जन, त निश्चय नहि सार १३३

भान मही निजय्यन्, त निष्यय नहि सार १३३ सागळ जानी थई गया, यतथानमा हाय, पारी बाळ पविष्यमा भागेयद नहि बोय १३४ भानी ष्टर्डन स्प्यूनरहित वर्शे ३० ते आन"ना पान नही अन सराधानि गापन संसा पणता नवा, जेवा तवा जीवनी नव सामा जै

जीवने चाप से एक भवतायरमां हुन हे ए जीव पण भनायंगां न वलें छे नेगाई दार बाजा जीव सन जम कुळानिन्धी महायंता से सम्बान जानी गणावनाना भानती ह छात्री यीनाला गुण्यानती सांबद्द छे, मारे से एक परमायंत्रे गांचे नहीं जने नत् करिकारी एटने की विधे जान वरिणास पासना मोप्य

३० जने बाथ मान पाया, कोभरूप नयाय पातजा पडपा नयी तेम जने अंतरवैराग्य उत्पन्न थयो नयी, स्वारामा गुण प्रहण नरवारूप सरक्ष्यणु जेन रहां नयी

मही एका कीबीमां से पण गणाय

न रामजव

भारमामा गुण प्रहण करबारूप सरक्रपण जेन रहां नथी ठैम सरमासरमुक्ता करबाते चन अपन्यात्रदृष्टि नथी तै मनार्थी जाब दुर्भाव्य एटले जाम चरा मरचने छैण्याबाजा मोनमार्गने यामवा थोष्य एव सनु मास्य ३३ एम मतार्थी जीवना रूगण कहा। ते पहेवानों तेंदु ए छे के कोई पण जीवनों ते जाणाने मताप जाय हर खात्मायों जीवना रूगण कहीए छीए—ते रुक्तण हर बात छो हो के बात्माने अध्यावाय मुखनी सामधीना हेंदु छे

१४ ज्या आरमज्ञान होय त्या मुनिपणु होय अर्थान आरमणान न होय त्या मुनिपणु न प समये 'जसमीत पासह ल मोणांत पासह — प्या समिक्त

208

14

एठके आरमज्ञान के श्वा मुनिषणु आयो एम 'आचाराग मून' मा नहाु के एठके जेमा आरमज्ञान होम ते साया गुढ के एम जागे के, अरो आरमज्ञानरिहेत होय तो पण पीवाना हुळ्या गुरुने कद्युक मानवा ए मात्र करना के, तैथी कई भवच्छेद 7 वाय एम आरमार्थी जूए के

अर्थात् शास्त्रांदियो जे समाधान बई सनवा योग्य नयो, अने जे दोषो सद्गुस्ती आजा बारण वर्या विना जना नयी ते सद्गुरुयोगवी समाधान बाब, अने ते दाया टळे, माटे प्रत्यक्ष सद्गुरुवो साटो चयकार जाणे, अने ते सद्

३५ प्रत्यम सदग्रुनी प्राप्तिनो मोटो उपकार जाणे.

गुद प्रत्ये मन, बचन, सायानी एश्वामी आज्ञाश्तिपणे वर्ते ३६ त्रण बाळन विये परमार्थनी वया एटले मोजनी

₹₹0

मार्ग एक होनो जोईए अने जेथा स परमाथ सिद्ध थाय सै व्यवहार जीवे मान्य रामचो जोईए बाजो नहीं ३७ एम अठरमां विचारीने जे सद्गुम्ना योगनी सोच करे, साम एक आस्तार्थना इच्छा राखे पण मान

पूजारिक शिद्धिरिटिनों बणी इच्छा राखे नहीं— ए रोग जेना मनमा नधी ६८ ज्या नवाय पातला यहपा छै, मात्र एक मोगपद शिवाय बीजा वाई परनी अधिकाया नधी, सकार पर जेने वैराय्य वर्ष छै अन प्राणामात्र पर अन दया छै, एका जीवन विषय आलाधको निवास वाय

३९ ण्या सूधी एवा कोगल्ला जीव पामे नहीं,

त्यां मुची सने भोगमार्गनी आण्व न बाव अने आस्म भारितरूप अनन दु जाने हेतु ज्यो अतरनेव न मटे ४० एवी दगा ज्या आने त्या मनुमूलों बोध घोमें अर्थान् परिजाम वामे अने ते बाधना परिचामधी सुस दोमन एको शुक्रियारकार मण्डे साय इने ते जानमा मोहनो सम वरी निर्वाणपदने पामे

४२ देवी ते सुविचारदवा उत्पन बाम, अने मोश

माग सकतमाम साव ते छ पदक्ये मुद्दिनिष्यना सवादयी

करीने बहाँ कहु ए

४४ आस्मा छैं, 'ते आस्मा नित्य छैं, 'ते बास्मा

पीछाना कमनी कर्ता छे', से कर्मनी भोका छे, 'तैयी मोल याय छे', कने ते मोशना उपाय एवी सत्यम छे' ४४ ए छ स्थानन अथवा छ पद अही सक्षेपमा कहा छे अने विचार करवाची पटदशन पण छ ज छे परमाय सम्बदाने माटे पानापुर्व ए ≣ पदी कहा छे

४५ इंटिमा आवतो नवी, सेम भेनु कई रूप बणासु नमी, तेम स्पादि बीना अनुभवधी पण बणावाण्णु नभी, माटे शीवनु स्वरूप नमी, अर्थात् शीव नभी

जान नमा

४६ अथना देह छ ते च आत्मा छे, अपना इंद्रियो

छे ते आत्मा छे, अपना स्वामोच्यास छे हे

अर्थात् ए यो एक्ना एक देहरूपे छे, आटे

४८ मारे आप्या हो शरा अने आप्या नवी गारने मिता क्षेण्यता अर्थे "प्यास करवा न व्येषण्या स स्वास अभरती राजाती व र जा त्यापाय कथानावी समाव कथानाव हुन्य शी बरो ८९ देशध्याची १०३ सन्तिशासनी सरावरे शीय रेष्ट्रो परिषय सा लया आप्या देह अवी अप्तर्यन् सने देस माणा के गा सम्बा अने देह चाल जुना श मिनी स्थ जन जुना र राज्या प्रतर भानवा असे ध ५० अवान्त्रिक्टमी अगावन क्षेत्र हेट्या वरिश्ववदी देह व्य आग्या भारधाश अवदादह जेदी आग्या मास्यो छ यण अस तत्र्वात न ब्यान व्यानक्य सारानी

राजां बल्ते जुलां कुलां से तीय कारका अने देह बल्ने जुरा

ल्या ध

सद्दा ने को पर नर आदि पदाओं छ हो जेन कराय छ नेत्र आपार होय हो पर आने न जयाय ने प्रदास में आपार छे नदा सने जयाया नदी नरने केन्द्र सामें आपार करता साले नदा साल जाता

४० अने के अच्या होय गांत करूप हा करे

**419** 

मान्द्रोत विचा के दवदे ११ वन् बहु में बन्द एनी विश्व वर्ष जाणे छे, अने सबने बाघ करता करता कोई पण प्रकारे जेनी बाध करी शकातो नयी एवा बाकी जे अनुमय रहे छै ते जीवन स्वरूप छै ५२ क्लेंद्रियथी सामळ्य न ने क्लेंद्रिय जाणे छे, पण चल इद्रिय तेने जाणती नथी, अने चक्ष इद्रिये दीठल से कर्णे दिय जाणनी नची अर्चात सौ मौ इदियने पीतपीताना विषयनु नान छ पण बीओ इद्रियोना विष-मनु भान नची अने आश्माने तो पाचे इद्विथना निपयनु भान छै अर्थात जे त पाचे इदियोना ग्रहण करेला विषयने आण छे ते आत्मा छे, अने आत्मा विना एकेक इदिय एक्के विषयने ग्रष्टण करे एम कहा है पण रुपचारथी कहा\_ छे

५३ देह तेने जाणता नथी ६दियों तेने जीणती नयी जने स्वामोच्छ्वासन्य प्राण पण तन जाणनी ते सी एक जात्मानी सत्ता पामीने चरपणे परुषा रहे छ, एम जाण स्त्रस्थाने जे जाण छ एवा प्रगटस्वरूप चतायमय छे,

क्यति जाज्या क नर छे एवं। जेनो स्वभाव प्रगट छै, अने ए तेनो निगानी खवाय बतें छ कोई दिवस से निवानीनो मग बती नर्य। भग बती नर्य। ५५ चन पट लाग्निने पु पोज जाजे छे ते छे एस पु माने छे अने जे स घर पट व्यविनी जाचनार छे तेने मानवी गया एगान त नेव वन्तु? ५६ दुख्ळ दोहने विशेष परम बुद्धि अवदासा झाल छ अमे देवूल बहते विशेष वाही विदिय पा जोवासा आत छ जो देहू जाहारा होय ता एसं। निवहल एटर निरोध

५७ कोई काळ जैमा जाणवाना स्वभाव नधी से जड, अने सदाय ने जाणवाना स्वभाववान छ ते चेतन, एवी वेयनो केवळ जुदो स्वभाव छ, अने त कोई वण प्रकारे

यवानी बसत 🔳 आवे

५८ बाल्मानी शका आमा आपे पोते करे छै जे धनानो करनार छे से ज आत्या ठे ते जणाती पथी, ए माप न यई हाके एव जारचय छे ५९ आत्माना होबापणा विष आपे जे जे प्रकार कह्या तेनो अतरमा विचार करवाथी सम्भव चाप छे ६० पण बीजी एम शका थाय छे, वे आत्मा छे

ष बनुभवाय छे

धो पण से अविनाश एटले निय नयी, त्रणे काळ होय एवा पदार्थ नथी भाग दहना मयामधी उत्पन्न धाय, अने वियोग विनाण पामे ६१ अथवा वस्त क्षणे भणे बदलावी जीवामा आवे छै, तेथी सब वस्त क्षणिए छे, अने अनुभवधी जोता पण

बारमा नित्य जणाती मधी ६२ दह मात्र परमाणनो मधीग छे, अचवा सयोगे

मरी सारमाना सवधमां छे बळी की देह, जब छे, रूपी छे

२१६ अने दश्य एटले बीजा मोई इच्टानो से आणवानो

एम समजाय छे सेची तेमाची चेतननी उत्पत्ति वदा योग्य नची अने उत्पत्ति चवा याग्य नची तची चेतन

तेमा नारा पण पामणा योग्य नथी बळी ते देह स्थी एटले स्थान रूटा छ स्थार तेना समित क्या छ सारे तेना समित क्या छ सारे तेना समित क्या के सारे तेना समित के सारे तेना सारे ते तेना सारे ते तेना सारे तेना सारे ते त

भूतिना प्रस्तु कि सेन्यू प्रथम छ नहीं, अने स्त्रु कि नो से स्त्रु कि नो से स्त्रु कि नो से स्त्रु कि नो से स्त्रु कि साम कि स्त्रु कि नो से से स्त्रु कि साम कि स्त्रु कि नो से से स्त्रु कि स्त्रु कि

एवा आत्माना दृष्य एटले तने आत्मा जाणे छे अने ते सयोगनु स्वरूप विचारता एवी वोई पण सयोग समजातो मपीके जेथी आत्मा उत्पन्न थाय छे माटे आत्मा सयोगपी नहा उत्पन वयेली एवी छे, अर्थात असयोगी

**छे** स्वामाविक पदाथ छे, माट ते प्रत्य<sup>ा</sup>र नित्य समजाय के ६५ जडमी मेतन कमजे अने चतनमी जड उत्पन्न

पाप एवी कोईने क्यार कदी पण अनुभव बाय नही ६६ जेनी उत्पत्ति कोई वण सयोगोथी बाय नहीं. तनो नारा पण कोईने विषे बाय नहीं माटे आरमा

त्रिकाळ 'नित्य' छे ६७ क्रोवादि प्रकृतिआनु विभेषपणु सर्वं वगेरे प्राणीमां जन्मथी ज जोवामा आये छे वर्तमान देहे तो

ल अम्पास कर्मी नथी, जमनी साबेज त छ, एटले ए पूर्वजमनी ज सस्कार छे, जे पूर्वजम जीवनी नित्यता सिद्ध करे छे ६८ आरमा बस्तुपणे नित्य छे समये समये नाुना

परिणामना पलटवाणी तना वर्यायनु पलटवापणु

७१ जीव कमती वर्ता उपी कमना वर्ता कम 🗓 श्रद्धवा अनायान संघ्यां वर छ तम नहीं ने जीज ख तनो बक्ता 🗓 एम वहों ठो पक्ष ले जीवनो धर्म थ छै

33.

क्षभान धर्म होवाची नयाग्य निवृत्त न बाय ७२ अथवा एम नहीं तो आल्या सण अगग ध अत सस्वारि गणवाळी प्रश्ति कमाते बण कर छ. तम नही

सो जीवन कम बरवानी अरणा नैन्दर कर छ सथी र्शवरण्डारण हानाची जीवा न मध्यी अवय छ ७३ माटे जात नीई रीत कमनी क्ली यई शक्ती

मधी अन मीलनी उपाय बरवाना कोई हमु जलाती

मधी, का जीवने कमनु क्लांपण नधी अन जो क्लांपण होय हो काई रीम स समा स्वमाय महवा योग्य मधी

७४ चतन एरने आत्यामी प्रेरवारूप प्रवृत्ति न होय

ती वर्मने वाण पहण वरे ? जहनी स्वमाव प्रश्या नथी.

जह मन चेतन बयना यम विचारी जजा

७५ बात्मा को रूप रुरतो नवी, सो स बता नयी,

228

समावतो नात थाय नहीं, अने आत्मान कर तो नम बाय नहां एटके ए माव टळी राज छे, माटेत आ मानी सामाबिक यम नहीं अभ केवळ को सकता होत अर्थात क्यार पण तन कमनु करवारण्य न होत तातने ते आत्मा प्रथमधी केम न भावत रे परमाव्या से सामा असमा छे. पण ते

देम न भारत ? परमाध्या ते आत्मा अनग छे, पण ते तो ज्यारे स्वरूपन् मान बाय त्यारे बाय ७७ जगतनो मचना जावाना कमनी ईरवर कर्डी कोई छ नहीं, चुब वात्मन्वमाव जेनी थयो छे त ईश्वर छे, अने तने जो प्रेरड एटले कमकत्ता वणीए तो तने दोपनी प्रमाव थयो गनाता चाईए, माटे ईश्वरना प्रेरणा जीवना वर्म वरवामा प्रवस्ताम नही ७८ आतमा भो पीताना शुद्ध चता मादि स्वभावमा वन सो से पोताना त व स्वनावना कर्ता छे अर्थान है व स्वरूपमा परिणमित छ वन तमूद चत यादि भानमां बततो न हाय त्यार कर्मभावनो कर्ता छै

पळ देशमां परिणामी थाय ? अर्थान् फटमाँश याम ? ८० परणाश देशवर मणीए ता भोनशास्त्र तामी प्रातीत, बर्धन् अभिने देशवर कर्म मोगवाते तथी औत नमतो प्रोत्ता गिळ याम, पण पर्व यळ देश सामि प्रवृत्तिवाळी हैन्यर पणीए यो गृह हैन्यरण्यू स रहतु सथी

एम पण पाछी विरोध भाव छ

से प्रहण कर छै

२२२ ७९ जीवी कमाने क्लॉ कहीए छोपा संवर्मनी भोवतापीय नहीं टर वंसन जड स्वांवरू सुंशस्त्री वे छे

भोगववाना बोर्ड स्थानक वंच ठरे महा व्टरेंने श्रीवन बभनुं भोक्युव्य बधा रख्यु ? ८२ भावकर्म श्रीवन रोतानी भांति छे, माटे स्वेतनस्य ठ अने स भातिमें अनुसादी वर्ष श्रीवधी सुरुपाराना गांग छ तथा जह व्यवा हत्यकुर्मनी वर्षभा

८१ तथी पळनाता रैन्बर निद्ध यती नधी एटले जगतनी नियम पण नोई रह नहीं अने सुमानुस कर्म

८३ कार अने अमृत पोत जाणता मधी ने अमारे आ जीवन पळ कापयु छे, तापण जे जीव खास छे, तन से फळ षाय छे एम शुमातुम नर्म, बा जीवने आ फळ आपनु छे एम जाणता नयी, तापण ग्रहण मरनार जीव क्षेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे

८५ एक राज छे अने एक राजा छे, ए आदि सब्दर्भी गोचपणु, अवपणु, कृष्यपणु, सुरूपपणु एम बणु विचित्रपणु छे, अने एको ला अस रहे छे ते, सबने सामानता नमी, ते ल तुमानुम बर्मनु साग्तापणु छ, एम सिंड करे छै, कैमके कारण विमा बारानी उत्पत्ति यदी गयी

८५ फळवाता ईरबरनी एमा कई जरूर नथी होर कने अमुवनी रीत शुभागुम कम स्वभाव परिणमे छे, अने नि सरव यथेथी होर अने अमुद्य पळ स्वा अम निवस बाम छे, तेम शुभाशुभ कमन भोगववाणी व नि सरव बामे

निवृत्त वाम छे

८६ उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाम त उत्कृष्ट शुभगति छे,

कर उत्पट्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्पट्ट अगुमगति छै, सुभागृत अध्यवसाय विश्वति छै, बने ते जीवपरिणाम ते ज मुस्यपणे सो बति छ, समापि उत्पट्ट गुम्न कर्मममन, उत्पट्ट अगुम हत्यनुं अगोगमन,

## २२४ मध्यम्बित एम द्रध्यनो विद्येष स्वमाव छे अने ह आदि हेतुपी त से भीष्यस्थानक होवा योग्य छ ह शिष्य । जह भैदनना स्वभाव स्रयोगानि सुदमस्वरूपनी अत्र भणो

विचार समाय छ, माटे वा बात गहन छै तौपण तने साब सक्षेपमा बडी छ ८७ कर्ला योक्ता जीव हो, क्य तेवी तेनों मोश यदा योग्य नथी, वेमने अनत वाळ वयो दोपण कर्म करवारूपी दौप हुजु तेने बिय नर्तमान ज छे ८८ ग्रम वर्ग वर तो तथी देवादि वतिमा तेत श्रम पळ भोगव, अने अगुभ कम करे तो नरकादि गतित विपे रीत बराम पळ मोगवे, पण जीव कमरहित कोई स्थळे होय नहीं ८९ जेम शुमानुम कमपद त जीवना करवाची तें यता जाच्या, अन तथी तनु भीन्तापण जाण्य तम नही करवायी अपना त वर्मनिवृत्ति करवाथी त निवृत्ति पण थवा योग्य छे, मार त निवृत्तिनु पण सफळपण छे, कर्पात

जेम ते शुमापुभ कम अफळ जता नथी, तम तनी निवृत्ति पण अफळ जवा बांग्य नथी बाटै व निवृत्तिरूप मोश छे

एम ह विचक्षण 🕍 विचार

९० ममतिष्ट्रत अपन्तवाळ बीत्यो, ते ते तुमानुम हम प्रयोगी जीवनो बात्तिन्ति कीये बीत्यो पण तेना पर ज्यातीन प्रवाणी ते वमफळ छेन्य, अने तथा मोडास्वमाब प्रकृष्ट छाठः

774

११ देहादि सयोगनी अनुप्रमे विमोग सी धया वरे है, पण ते पाछा शहण न यान ते रोते वियोग वरवामा बाव तो सिद्धस्थक्य मोन्यस्थात् प्रयोग, अने शाय्वत पर कतत कात्मानह भोगस्थात

९२ मोक्षपद कडावि होय तोषण ते प्राप्त यवानी कोई अविरोध एटले यथानध्य प्रतीत थाय एवी उपाय जगानी नमी, केमके अनत काळना कपों छे ते बाबा

स पापुष्पताला सनुष्यन्त्यों नेप केवा जाय ?

१३ लवता कदावि सनुष्यन्त्रेमा बल्पायुष्य वगेरेनी
समा छोडो दर्देष तोचल सन कने यजन पणा छे, लने से
मोगना अनेन वनाया नहं छे, वर्षान् कार्र कई नहे छै
सनै नाहुँ कई कह छ, छमा कथी सन्त्र सामा छ विसेन

बनो प्रके एवी नवी

९४ ब्राह्मणादि नई जानिमा मोन छ अपवा नया प्याम मोन छ पनी निश्चय पण न बनी गर्के एवी छे, हमके सवा पणा भेदी छे जन छ दोरे पण मोशनो ब्राय प्राप्त पवा याग्य दलाता नयी

355

६५ तेथी एम जगाय छे ने माननी उपाय प्राप्त मई सके गड़ गयी मार्ने खीलान्ति स्वरूप आगमायी पन मु उपनार पाय ? जयांन ज परन अर्थे आपका ओर्टर मैं परनी जगाय प्राप्त चलो अशस्य स्वाप्त छ ६६ आगे याथे उत्तर नहार तथी सर्वास छ ६६ आगे याथे उत्तर नहार तथी सर्वास एक

रीत मारी गक्तन् समापान थयु छै पण को मोसनी उपाय समनु हो सद्भाग्यतो उन्य-उन्य थाय 'अव जन्य 'उदय वे बार ''' छै त पाथ उत्तरता समाधानयी चयेकी मोनपन्नी जिनामानु तीक्षण वदनि छ

९७ पाचे जत्तरती तारा आत्माने विषे प्रतीति बई छै हो भोभाना उत्पादनी पण दल रीत वने सहसमा प्रतीति परी अने बले जो उत्पादन ए थंगा सहशुरण कहा। छत्ते अने पाचे पन्नी जना निचुत बई छै होने भोभावाय समजादी बई कठण क नथी एम दर्शवता, तथा जिम्मन थापा छे

९८ कर्ममाब छे ते जीवनु अपान छे अने मोशमाब
छे ते जीवना पाताना स्वरूपने विधे स्पिति पत्नी स छे
कपाननो स्वरास अवकार अबी छे तेथी 'नेम प्ररास

770

षता पणा नाळनो अधकार छना नाग पासे छै, तेम ज्ञानप्रमाश पता अभान पण नाश पासे छै ९९ के के कारणा कर्मवयना छे त ते नगवयनो साग छ, अने ते से नाज्याने छदे एकी ज दशा छे ते

मोपना माग छै, भवनो अत छे

१०० राग हेप अने अपान एनु एक्टर ए असनी
मुख्य गाठ छै, अर्थात ए विना कमनो यस न मास सेनी

पुस्त गांव छ, अवात ए विना प्रमान वय न भाग तहाँ भीषी निवृद्धि याय से अभोगना माग छै १०१ 'सत्' एटले अधिनाणी', अने चत्रसम्य एटने सब मानने प्रकाशकाण्य स्वास्वस्य अप सब विमान अने बहादि स्योगना आसाराधी 'रहित एवी मीक्षमाय छे १०२ क्म अनत प्रनारना छ पणतेना सुक्य

क्षानाबरणारि आठ प्रकार याथ छ तेमा पण मुक्य भोहनीयक्षमें छे ते मोहनीयक्षम हणाय तनी पाठ कह छु १०६ ते मोहनीयक्षमें व भेदे छ --एक दर्शनमीह नीय' एटके 'परमाधने विच अपरमाधकटि अने अपरमाध

375

ने बिवे परमायमुद्धिन्य , बीजी चारिजमीहनीय तथा रूप परमायने परमाय जाणाने आत्मस्यमावमा जे त्यरता याम ते स्थिरतानं रोमन एवा पूर्वसंस्कारस्य नयाय

थाय ते स्थिरतान रोमन एवा पूर्वसस्कारस्य न्याय अने नोषयाय त चारित्रमोहनीय दगनमोहनीयने आत्मकोध, अने चारित्रमोहनीयन

बनानमोहनीयने आत्मकोध, अने चारितमोहनीयन धीतरानपर्वास्त कर छ आम तना अधून उपाय छै कैमडे मिरपानीय व तत्तनमाहनीय ध तनो प्रतिप्रस्त सत्यारमनीय छे अन चारितमोहनीय रायादिक परिणामक्य छै तेनो प्रतिपन्त भीतरानमाव छै एटके अधकार जेम

छ तना प्राविषय बातरागमाव छ एटल अधकार जम प्रकाश प्रवामी नाम पाने छ-त तनी अपूक उपाय छे,--तम बीध अने बीतरागता दर्शनमोहनीय अने निरोध छे अने ते ज लेगी निर्वात छे बाटी सबने आ बातनो प्रत्यक्ष अनुमन छे अध्या सबने प्रत्यन अनुमन पर्देशने एवं छ कोषासि रोच्या रोचाय छे जने वर्षवत्ते रोते छे त अवस्वतानां सार्य छे ए माग परिने नहीं, पण अने अनुमनमा आवे छ ता एमा सहे हो। वरवा ?

१०५ आ मारो सत छं, माटे मारे बळगी ज रहे वृं स्थवा आ माट द्वान छे माटे यमे तेम मारे ते सिंद्र मरवा आ माट द्वान छे माटे यमे तेम मारे ते सिंद्र मरवा था वो बाद्य अथवा एवा विश्वन पर्वा वा प्राची मारे सार्य प्राची मारे हो सार्य मार्ग चहा छे ते सार्य, ना अन्य चन पाणवा

अही जन्म' बाब्द बहवचनमा थापर्यो छे, ते एटल ज

१०४ क्रोधादि शावधी कमवध थाय छे, जने क्षमा दिक मावधी ते हुवाय छे व्यर्गत क्षमा राहवाधी क्रोध रोही शकाय छे, सद्धताधी माधा रोवा शनाय छे, सतीपयी कोम रोवी शहाय छ, एय रति, व्यर्गत आदिना प्रतिपन्धी ते है दोगो राकी शकाय छे. ते ज वमवधनी 237

११४ करोहो बचनु स्वन्त होय हो एक आगत यहां रित पानाय है तेक अनादिनी विभाव है स झारमण ता दूर पाय है ११५ हे फिट्य १ देहमा क आरमदा मनाई है अने रि कीमें श्री प्रणानि समाग बहुमस्यरण बतें है, है

तत्मता जो स्नारमामा ज भनाय अने से वैद्वाच्यास एटके ह्या साराबुद्धि छमा सारमामा रहतूद्धि छ स छूटे सो हु समान क्लॉ पण नथी, अने भोनता पण नथी, अने ए । यमनो मर्ग छै ११६ ए ज यमयो मोल ■ अने लु ज मोसस्बरूप

रो, अर्थात् सुद्ध आरमपद ए ज भो ग छ जनस्य भान रान देपाल यात्राप सुवल्सक्य छो १९७ तुरहादिक सब पदाथथा जुदा ⊯ कोईमा

११७ तु दहादिक सब पदाथथा जुदा ॥ कोईमा नारमद्रव्य मळतु नथी, कोई तमा अळतु नथी, द्रव्ये द्रव्य रामार्थसी सदाय मिन्न छे. माटे सुँ सुद्ध छो, बोयस्वरूप

हो, बैर मप्रदेशास्मक हो स्वयज्योति एरले कोई वण तने प्रकाशतु नषी, स्पमाने ज तु प्रकाशस्यरूप छो, अने क्रव्यावाम मुझनु बाम छो बीजू केटलु वहीए ? अथवा मणु स् वहेषु ? ट्रेकामा एटल व वहीय छीए जो विचार

११८ सर्वे शानीओंनी निष्यय अत्र आयीने समाय कर तो से पदने वामीश है, एम कहीने सब्गूद भीनता बरीने सहजसमाधिमा स्थि

चया अर्थात वाणीयोगनी अप्रवृत्ति करी ११९ शिव्यने सब्युप्ता उपदेशयी अपूर्व एटले पूर्व

कोई दिवस नहीं आन " एवं मान आन्य सने तेरे पीठानु स्वरूप पाताने विषे येपातच्य भास्यु अने देहाता बुद्धिहर्व अज्ञान दूर वर्ग

१२० वोतानु स्वस्य वृद्ध बेह्नुनुस्यस्याः समर अपर अविनाची अने देहवी स्पन्न जुडू भारम्

१२१ ज्या विभाव

मृह्य नययी क्यनु स्वमायमा वृत्ति वही तेथी

१२२ अयवा बात्मपरियाम जे शुद्ध वैत यम्बरूप छे, तनी निविष्यस्यस्थाः वस्तिभोसा थया १२३ आत्मानुबुद्ध पण्छत योग छ, अन जयी से पमाय से सनो मान छ, थी सद्युर्ट प्रया वरीन निग्रयनो सर्व मान सनजाध्यो

१२४ अहो ! शहो । करणाना अपार समुद्रस्यमप आत्मरूरमीए युक्त सद्वृत जाप प्रभुए आ पामर जीव पर आश्चयनारक एवी उपकार क्यों १२५ हं प्रभाग चरण बागळ व यर ? (सदग्र तो

परम निकाम छ एक निकाम कन्यामी मात्र उपदेणना दाता छैपण शिष्यधर्मे निष्यका वधन कहा छ ) ज जे जगतमा पराध छ ते सी आत्मानी अपेलाए निम्हय जेवा छै, ते आत्मा तो जणे आप्यो तना चरण समीप ह

भी जूँ शु धर ? एक प्रभूना चरणने आयीन बतु एटल

मात्र चपचा ग्धी करवान ह समय छ १२६ अग देह आदि गारचील गई मारु गणाय छेते आजधी करीने सद्गुरु प्रमुने आधी । वर्तो 🥤 सह प्रभूत। दास छूं दास छू, दान दास छ

१२७ छमे स्थानक समजावीने हे सदगुरु देव । जारे देहादिया आत्माने, जैम म्यानयो सरवार जुदा कादान बताबाए तेम स्पष्ट जुदो बताव्या, आपे मपाइ गके नही एका अपकार कर्यों !

१२८ छये त्यान था छ स्थानकमा समाय छे विनाय कराने विचारवाथी को <sup>5</sup> पण श्रवारनो स । य रहे

नही १२९ बारमाने पाताना स्वरूपनु भान नही एवी वाजी कोई रोग नथी सद्गुरु जेवा सेना कोई साचा

अथवा निपुण बद्ध नवां सद्युष्थानाए चालमा समान बीजु कोई पच्या नयी अन विचार तथा निदिध्यासन जेबु

कोई तनु औपव नयी

१३० जो परमाधने इच्छता हो, तो साची पुरुपाय करा धने मनस्थिति जादिन नाम रूईने आत्मायने छेदो

नहा

१३१ आत्मा अवघ छे अमग छे सिद्ध छेएवी निश्चममुख्य वाणो सामळीन साघन तजवां योग्य नथी

एमाते व्यवहारतय कहा। नवी, अय ज्यां ज्या जम परे तैम साथे रहा। छे १३३ गुष्ठा स्वती मध्यता छे से सद्व्यवहार नधी पण आस्तार्थीनां छन्त्रमा बही से बना अन भीशोपायमां

निकासुन। एनण जावि वहार से सहस्यवहार छ, जे अने सी सामेयमां बहुन छे पोतामा स्वरूपनु मान मधी, अयो जो देह अनुमन्ना आवे छे तथा आस्मानी अनुमन्न पंची नची देहाच्यान वर्ते छै, बंगे ये थैरायादि साधन पाच्या विना निरंपय पोहास करें छै स निष्य सारम्त

११४ मूलकाळमां जे कालीपुरवा वर्ष गया छे, बन मानकाळमां जे छः अन अविष्यकाळमां वर्षे तने कोईने मागनी भदनकी अवस्ति प्रमार्थे संसीनो एव माग छ

संची

मागना भद नथा अधाद परमाय त साना एक गाम ॥ अने सने प्राप्त करवा योग्य व्यवहार एक से अपरमाय सायर रूपे दगकाळादिने शीधे भेद कहो। होस छता एक पळ उत्पान्त करनार होसारी तमा वथ परमार्थ भद्र नयी १३५ सब जीवने विषे सिद्ध समान सत्ता छे, पण त तो जे समजे तेने प्रगट बाग स प्रगट घवामा सद्गुरुनो आजापी प्रवनमु, तथा सद्गुरुए उपदेसेजी एवी जिनदशानी

वामाया अवन्यु, तथा चयुक्य उपलब्ध करियार करवो स वय निमित्त कारण छ

१३६ सद्गुक्जाना जादि से आरमसायनना निमित्त
कारण है, अने आरमाना ज्ञान चर्चनार्टि उपासन कारण
छै, एम शास्त्रमा कहा छ, से पी उपानननु नाम स्ट्री जे

शोई है लिमितने तजबे ते खिद्यपणाने नहीं पाने, अने प्रातिमा बर्धा करवे नेमने नाचा निमित्तन निरोपाँ त उपाननती स्थानदा खारुमा नहीं नगी, पण उपादान जजागृत रामवाणी वार खाचा निरित्त मध्या एटन कम नहीं याप, माटे साचा निरित्त मध्ये एटन कम प्रवीन उपादान समुख नरह अने पुरुषाचरीहर न पद्म,

एवो बाह्यकारे कहेंगी ते "बाह्यातो परमाय छें १३७ मुखधी निश्चयमुख्य वचनो कहे छे, पण अतरपी पोताने व मोह छूटपो नची एवा पामर आजी मात्र आती कहेंद्रावचानी कामनाए साचा पानी क्रीह करें छे

## २१८ १३८ दया साहि गमता हामा शन्य स्वाम सन बराख ए गुना सम्मृता पत्र्या गुमान्य घटले बाह्य होत, सर्वाह ए कुन बिना समुम्यया परा न हास

१६९ मोहमाना ज्यांशय नवी हाय, अववा न्यां मोहन्सा बहु शीन वर्गांग रागांगीनी दणा कहींग अने वाली तो जेय पंतामां त्यार सारी रोडु से सन

भांति वर्षेष्

१४० समस्य जगत वर्षे गठ जेषु जान्यु सा सबसा स्वया जेषु जान्यु नात नातमां बर्जे छ से नातानि स्ना छे, बार्षो मात्र बाबातान गर्ये बहुता मात्र नात छे १४९ वाचे स्वातरत दिसानि जे छह स्वातके को गठते सा मात्रा जे जगार बहुता छ समा प्रवर्त, से वावसु स्वातर एटन मा प्रतर तत्र साम १४९ पूर्वप्रस्थानिक तत्र नात स्वत्र स्वत्र छ देहसी अनीत गटरे स्हान्ति स्वस्तरार्ग्ड आग्यामय जेने स्वा बर्जे छ गानीपुरुतन स्वस्त्र स्वत्र सामस्य जेने

थी सद्युवचरवार्थं व सस्तु

षदन हो [

२३९ (५०) मोहमबीबी जेनी अमोहपणे स्थिति हो, एवा श्री

ना यदा॰

'मनने ल<sup>5</sup>में जा बचु छे' एवा जे अल्यार सुधीनो थयेका जिल्हा रून्यों, ते सामा य प्रकारे ता यथातप्य छे,

तयापि मन', 'तन र्र्डने' अने 'आ बध , अने 'तेनो

निर्णयं पवा जे बार आग ए बाबयना शाय छे, ते बणा काळार दोधे जेम छे तेम ममजाय एम बाजिए छीए जेने ते छममाय छेम बाजिए छीए जेने ते छममाय छेम ते मम बन बर्ते छे, बते छे, वर्ते छो सार्वा महस्वमूच छे तथापि न बततु होय होपण ते बातम मनस्पने विव ज बर्ते छ ए मम बध पदानी उत्तर उपर स्वयो छैं, ते सबधी मुख्य एवी रूच्यो छे जे बातम रूखतो छैं, ते सबधी मुख्य एवी रूच्यो छे जे बातम रूखतामा आग्या छे ते पणा प्रकार विचारपाने प्रोप्य छे

हे, एम जाणीए छीए

महात्मानो देह वे कारणने रुईने विद्यासानपणे वर्ते छे आरब्ध कम भोगववाने वर्षे जीवाना क्याणने क्यें तथापि ए बनेमा ते उत्पातपणे उदय आवेली वतनाए वर्ते प्पान, वच तर, किया मात्र ए सर्वे वक्षे असे ज्यावनु नेत्र वावस्त्र जो क्या पाठतु हो ता निर्वय वे परता हो तो, पाठता हो ते नावस्त्र पाएक का पर न बडी होच ता, बाय तो ते आतिबहे गई छे यम धारता हो तो वे बावस्त्र पणा आगाती धीरवार्ड विधारता पारता हो तो नव्यत्र ने कृष्ण पाय छ हुनी हायी विगयको निस्त्रके विखे धारता करतान क्यानु आगात जेतु लाग छ, तथानि विस्त अवकारावन्त्रे वर्षेतु नवी, एटले के करत्र हो की अवकारी भागता

सर्वे प्रशार उपाधियोग सी निवृत्त करवा योग्य छे तथापि जो से उपायियोग सलमारिकन खर्चे व इच्छवामां आवती होय तेम ज पाझी क्तिहिमति समबपणे रहेती होय सी त उपाधिमागमा प्रवतनु वैयस्वर छ

मुबई बधास वद १४ बुच, १९४८

## (48)

विसामां तम परमाधनी इच्छा राखी छो एम छ, तथापि ते परमाधनी प्राप्तिने अत्यत्वपणे बाध करवावाळा एवा जे

